

NOT FOR SALE

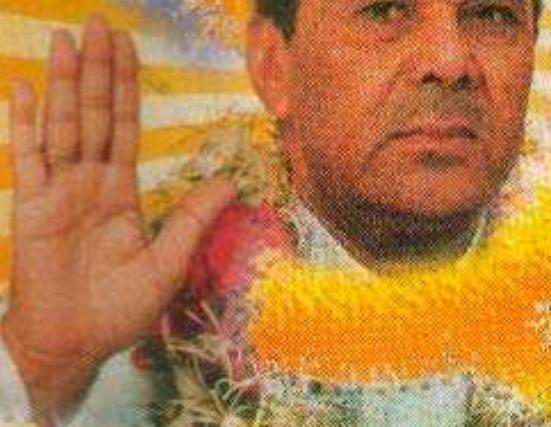
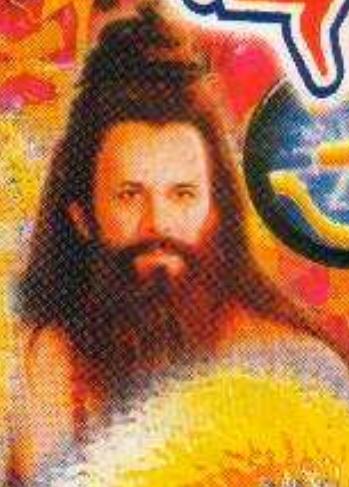
गुरु पूर्णिमा विशेषांक

नक्त जुलाई 2003

मूल्य : 18/-

गुरु-तंत्र-यज्ञ

विज्ञान



गुरु मिते सो हरि मिते शावण मात्स दिव गोरी सिंहि
गुरु पूर्णिमा - रिक्ष्य उत्सव जप्यह साधना उपासना

Akhanda Jyoti





COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

ಶ್ರೀಕೃ-ಪದ್�ಾರ್ಥ

॥ अ॒ं पञ्चम तत्त्वाय नाकायणाय गुङ्कभ्यो नमः ॥



सदगुरुदेव

विशेष

गुरु कृपा सो हरि कृष्ण	24
हरि कृपा सो गुरु कृष्ण	
सदगुरुदेव से भैने	
कृष्ण सीखा	27
आप नीलकंठ महादेव हो	30
गुरु पूर्णिमा आश्रम	33
शिव तत्व कृष्ण है	37
श्रावण मास शिव और जरकि	
का उपेयव्रत पर्व है	46

सदगुरुदेव

सदगुरु प्रवचन गुरु बाणी

सत्यम्

शिष्य धर्म	43	आवाण मास में पूर्ण
नक्षत्रों की वाणी	60	मनोकामना सिद्धि
मैं समय हूँ	64	नववर्ष उपासना साधना
बराहामहार	66	गुरु पूर्णिमा साधना
जीवन सरिता	68	जीवन की सीधाज्ञ साधना
इस मास फिल्ली में	78	के विशिष्ट प्रयोग
एक दृष्टि में	86	पृथिवी की

অংক 23 অংক ৮.৭



स्त्री वं

खल स्तोत्रं 42



साधना

प्रावण मास में पूर्ण मनोकामना सिद्धि	49
नवग्रह उपासना साधना	55
गुरु पूर्णिमा साधना	70
जीवन की सौभाग्य साधना के विशिष्ट प्रयोग	74
Surya Sammohan Sadhana	82
Mahalakshmi Sadhana	83
Sabar Kali Sadhana	84
Ananta Tandav Sadhana	85



प्रकाशक एवं स्वामिन
श्री केलाश चन्द्र श्रीमाली
दिल्ली

नीरा आर्ट बिल्डर
C 178, नारायणपुर इलेक्ट्रोसिलिक्स
एरिंग कॉम १, नई विलासी
गो मुद्रित तथा
मंत्र तत्र यत्र विलास हाईकोट
फॉलोवर्स जीधुर से प्रकाशित

मुख्य (भारत में)

एक प्रति : 18/-

सम्पर्क

सिद्धांशुम, 306 कोहाट एक्स्प्रेस, पीरगंगा, विट्ठली-110034, पोस्ट: 011-27182248, फैक्स: 011-27196706
मेल-तरंग-यूनिवर्सिटी, 306 श्रीनगरी नगर, एक्स्प्रेस बॉलिवुड, गोदावरी-342001 (गोप) पोस्ट: 0281-2432008, फैक्स: 0281-2432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add - nsfby@sidhhashram.org

नियम

पविका में प्रकाशित सभी चर्चाओं का अधिवाद पविका का है। इस 'बच-तंत्र-यत्र विज्ञान' पविका में प्रकाशित लेखों से तमादक का सटमत दोनों अनिवार्य नहीं है। तर्क-पुरुषक करने वाले पाठक पविका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गमन राखें। किसी नाम, स्थान या बटन का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, परिवर्ती एवं उत्तर नाम या तथा मिल जाय, तो उसे संगोना रखें। पविका के लेखक बुल्लूड तारु-तंत्र लेते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पविका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाय-विद्याद या तर्क सम्बन्ध नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, बुल्लूड या सम्पादक लिखनार होंगे। किसी भी सम्पादक की जिसी भी प्रकार का परिवारिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के बच-विज्ञान में जोगपुर न्यायालय की मानव होगा। पविका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को ताथक या पाठक करने से भी प्राप्त कर तरक्की है। पविका का सम्बन्ध से भगवान् पर हम अपनी तरफ से प्राप्तिक और सभी सामग्री अज्ञात वंच भेजते हैं, पर किसी भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अज्ञात प्रभाव होने वा न होने के बारे में रामारी जिम्मेदारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पविका का वायालय से मंगवाये। सामग्री के भूल्य पर तर्क या बच-विज्ञान मानव नहीं होगा। पविका का वायिक बुल्लूड बंडलन में ₹६५/- है, पर किसी विशेष एवं अपारिदृश्य करणों से पविका को बैमासिक या बंद करना पड़े, तो जिसने उसके अपने आपसे प्राप्त हो कुर्के हैं उसी से वायिक संबद्धता अस्था दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय संबद्धता के पूर्ण समझे, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आत्मोवना किसी भी स्वप्न में स्वीकार नहीं होगी। पविका में प्रकाशित किसी भी साधना में रामकृष्ण-असंप्रकल्पना, द्यनि-लाभ की जिम्मेदारी साथक की स्वयं की होगी तथा साथक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रस्तोत्र न करें, जो नैतिक, सानाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पविका में प्रकाशित लेखों को लेखक सभी या सभ्यता लेखकों के विचार बात होती है, उन पर भाषा का आवरण पविका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठक की मान पर हम उनके द्वे पविका के लिखते लेखों का भी ज्ञान का त्वयी सम्बन्ध विद्या गया है, जिससे कि नईन पाठक लाभ उठा सकें। साथक या ताथक अपने प्राप्तिक अनुभवों के आवार पर जो संख, तंत्र या वंच (अले ही ते शास्त्रीय व्याख्या के दृष्टर ही) बताते हैं वे ही हो देते हैं अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। अवश्य पूर्ण पर या अन्वर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेदारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अवश्य आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का वायालय यह नहीं है, कि साथक उससे तावान्वित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो बीमों और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण शब्द और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आत्मोवना श्वीकार्य नहीं होगी। युक्तेव या पविका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

गुरु शिष्टि गुरु पूर्ण ज्ञानि शोभ्यवेदी त।

यस्य साधाक सौभाग्य पूर्ण दिष्टि त उंचायः॥

गुरु ही भिंडि है, गुरु ही पूर्ण है और वह गुरु को निवास है, साधाक के लिए वही शक्ति पैठ है। वह देसे ज्ञानसर को प्राप्त कर साधाक गुरु के समीप बैठकर साधारण सम्बन्ध करता है, तो वह निःचय जी सौभाग्यशाली है और साधारण सम्बन्ध करने पर यह पूर्ण सिद्ध बनता ही है, इसमें कोई संशय नहीं है।

* हृदय से पुकारो *

उस दिन स्वामी विवेकानन्द बोमार थे, ज्वर से पीड़ित होकर शव्या पर लेटे थे। एक भी चार डिग्री से कुछ ऊंचा ही तापमान था और यान भाँति ज्वर के नाप से जल रहा था। विवेकानन्द को पीटा सहन न हो रही थी। उनके पाप ही उनके गुरु श्रीरामकृष्ण परमांग स्तुपचाप बैठे विवेकानन्द को निहार रहे थे, परन्तु बोल कुछ भी नहीं रहे थे।

आखिर विवेकानन्द से चूप न रहा गया। बड़ी खीझ में प्रक्षर खड़ते हुए वे परमहंस से बोले—

'मैं ज्वर से मरा ना रहा हूं, और आप कुछ कर ही नहीं रहे हैं? मैं जो कह रहा हूं, क्या आप सून नहीं पा रहे हैं?'

'तू यह सब मुझसे क्यों कह रहा है, मां (काली) को कह देना?' श्रीराम कृष्ण ने रापाट उत्तर दिया।

'मैं मां से कह तो रहा हूं, पर . . .' विवेकानन्द कुछ उदास होकर हुए बोलते थीं बोलते ही खड़ गए।

श्री रामकृष्ण ने बात को बही काटने हुए बोले—'तमारी बणी में आद्रना नहीं है, अपनत्व और दीनता नहीं है। इसीलिए मां तक तेरा आवाज नहीं पहुंच रही है। अरे! जब तेरी बाणी का असर मुझ पर ही नहीं ही रहा है, तो मां काली के वित्त पर क्या ढोगा? उसके लिए तो स्वर में दीनता, विहूलता जरूरी है रे! बालक पूरे अपनत्व से बहे और मां भूने नहीं, ऐसा असम्भव है।'

बस्तुतः मंत्र जप हो या प्रार्थना, उसके प्रभावकारी होने के लिए वह बेहत आवश्यक है, कि वह हृदय से की गई हो, पूर्ण मनोव्योग से की गई हो। मात्र चंचवत् की गई कोई भी साधना या उपासना सफलीभूत नहीं हो पाती, क्योंकि मूल बस्तु तो मन के भाव ही होते हैं, जिससे देवी देवता या सद्गुरुदेव भी कृपा करने को विवश हो जाते हैं। पुकार हृदय की महानाहयों से की जाए, तो तुरन्त सद्गुरु चरणों में स्वीकार होती है, इसमें कोई संशय नहीं है।

લોગ્રા ૧૦૫ ચંદ્રો કી

समर्पण और साथेना द्वारा शिख्य सब कुछ प्राप्त कर सकता है। केवल आवश्यकता है उसके पास वह मडाल्क गुफ हो जो उसे पूर्ण झाल प्रदान कर सके। शंकराचार्य के जीवन उत्थान की धर्म के साथ ही सद्गुरुदेव का वह अपेक्षित प्रवचन -

दं व्योर्थ	मातुं	परिवेह	स्पृष्टं
जातोप	मां	व्योर्थ	श्रीवेवं
आत्मानुभूति	परमां	वहितं	स्वदेवं
दं व्योर्थ	वातुं	भवदेव	सिन्धुं ॥

मेरे जीवन का उद्देश्य, मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं उन रहस्यों को जात करूँ जिन रहस्यों को विज्ञान नहीं मालूम कर सकता, नहीं जान सकता। पिछले पांच शी वर्षों में विज्ञान तो ब्राह्मण प्रयत्नशील बना हुआ है मगर वह उस ज्ञान को समझ नहीं पाया कि एक गाय घास खाती है और घास दूध में कनवट कैसे हो जाता है। आज तक विज्ञान घास की दृश्य में कनवट नहीं कर पाया, एक मां जेहू की रोटी खाती है और दृश्य बन जाता है। यह विधान क्या है, यह विज्ञान नहीं समझ पाया, यह जरूरी नहीं कि प्रत्येक वस्तु विज्ञान समझ पाए। उसको एक लिपिट्रैशन है, उसको एक सीमा है।

मगर अपने व्यक्तिगत की कोई सीमा नहीं है। वह दोनों हैं, और उनना अनेक हैं कि हम एक स्थान से पूरी दुनिया को देख सकते हैं और हम साधनाओं के द्वारा उन प्रिद्वियों को प्राप्त कर सकते हैं कि जगदम्बा क्या है, लद्भी क्या है, सिद्धांशम् क्या है और विष, मून, यज्ञी यति ये सब क्या हैं, क्या जीवता है, चेतन्यता क्या है, आखिर यह जीवन क्या है और मेरे जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य क्या है? जैसा कि गुरुदेव कहते हैं कि अपने जीवन को बहुत ऊचाई पर उठा देना है तो किस प्रकार से ऊचा उठाएं, क्या करें? सीढ़ियों पर खड़े होने से तो ऊचा नहीं हो पाएगा और गुहात्थ में रहने हुए बाल बच्चे ऐदा करते हुए, चिम्बे, घरीटते हुए भी नहीं प्राप्त कर सकते। उसके लिए कहीं कुछ छोड़ना पड़ेगा, बहुत कुछ छोड़ना पड़ेगा। दस परसेंट भी छोड़ेंगे तो नव्ये

परसीट अब प्राप्त कर लेंगे और दोहंगे ही नहीं तो कुछ प्राप्त नहीं कर पायें और उसके बाद जब आपको लगेगा कि आपने हीरे से गंवा दिए थे, केवल आप कोयले और केकर पत्थर एकत्रित कर रहे थे तब आपको पहसुआ हो पाएगा।

आज यदि मुझसे पूछा जाए कि आप गृहस्थ में भी रहे, सन्ध्यास में भी रहे आप अब क्या कर रहे हैं और यदि मैं जो साधकों और शिष्यों को दे रहा हूँ उसमें परे हठ कर देखूँ तो केवल धीरे, पत्थर इकट्ठे कर रहा हूँ। बच्चों की रोटियां खिला रहा हूँ पन्नी को गेटी खिला रहा हूँ। घर में मेरी पन्नी है, बच्चे हैं और देसा ही है जैसे समुद्र के बिनारे बैठे ककर पत्थर, अपनी छोली में बक्कुड़ा करते रहे। परंतु वह जो मैंने साधना का जान प्राप्त किया था वे हीरे मोती थे और आज भी मुझे उसके ऊपर गवर है। आज भी गवर है अपने योगियों पर रोन्यासियों पर, अपने जान पर, अपनी चेतन्यता पर।

वह सब कुछ आप प्राप्त कर सकें और उन आधारों को देख सकें, उस पथ को देख सकें। देखेंगे तो जीवन अपने आप में उन्नवल बन जाएगा।

और आप मुझसे पूछें तो वृद्धावस्था जीवन में आती ही नहीं, होती भी नहीं। वह बस एक शब्द है। मानसिक न्यूनता जैसी कोई चीज होती नहीं, मृत्यु जैसा कोई शब्द है ही नहीं। वह समाप्त हो सकती है, मगर वह को खुद ही जीवन्त बना देता है। फिर आत्मा तो समाप्त होती ही नहीं, उस आत्मा के ऊपर फिर से वह का आवरण कर लेंगे। फिर कायाकल्प कर लेंगे। अगर हमारे ब्रह्म मुनि वो हजार साल जीवित रह पाते थे तो हम बसों नहीं रह पाते। हममें फिर क्या कमी है?

कमी है, हमारी साधना की कमी है जीवन में गुण वह जान नहीं दे पा रहा है आपको, आप साधनाओं में वह रिहिं प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। आप साधनाओं में प्रवर्गल नहीं कर पा रहे हैं। पूर्ण मनोयोग ने उनमें जुट नहीं पा रहे हैं। पूरी तरह से जुटने की जरूरत है आपको दुकड़े-दुकड़े ही जीवन होना और सांस लेना। वह कोई बहुत महत्वपूर्ण नहीं है। आप पर आकसी जन मास्क चढ़ा दिया जाए और अस्पताल में लिटा दिया जाए, वह जीवन नहीं है। आप आकर्षीजन ले रहे हैं और भर रहे हैं आकर्षीजन ले रहे हैं और जी रहे हैं वह जीवन कहलाता ही नहीं जीवन वह कहलाता है जहां वक्षस्थल आपका पूर्ण पोशवान है। शरीर ताकतवान और द्वामतावान हो और आप सब कुछ बैठे-बैठे दरब सके कि क्या धनाएं, घट रही है। उन पहलुओं को देख सकें, जो जान को समेटे हुए हैं। उन पर्वतों को देख सकें, उस हिमालय को देख सकें,

उत्तम संवेदन को देख सके और उन उच्च कोटि की चौंबो को देख सके जो ज्ञान का मूल उत्स है। वे धीरे पत्थर नहीं हैं, वे हीरे हैं।

आप एक बार भी उम्हे अपने जीवन में दखेंगे तो आपको ये सब अपने जीवन की चीज़ें बहुत सामूली लगने लग जाएंगी। जीवन में एक ही शण दूसरी बार नहीं आ सकता। एक बार कल उस शण कोने जाने नहीं पकड़ा ले आप चूक गए। मान लो इस क्षण में आपको साधना सिद्धि सफलता दीक्षा दे रखा है जो यह जन्मी नहीं कि आपके जीवन में दूसरा ऐसा शण आए या मैं बापस आपको यह दीक्षा दे यह जानी या समझ नहीं है। अगर चूक गए तो चूक गए आप। चूक गए तो बहुत बड़ी दीज़ चूक गए आप। छोटी माटी दीज़ नहीं थीक। अब सबद आप इस बात को गृहस्थ न करें, मगर एक दिन अवश्य करेंगे।

मैं आपको अमृत के बाचों बीच कृदने की तैयारी करा रहा हूँ। मैं नहीं चाहता कि आप समृद्ध के किनारे बैठ जाएं, आप हमेशा बने रहें, भासु बने रहें। आप घबराएं नहीं कि अंदर कुदूगा तो मर जाऊँगा, मर जाएंगे तो मर जाऊँगे, नगर यह गारंटी की बात है कि अगर निकलने तो मीठी लेकर निकलेंगे, धीरे, पन्थर लेकर फिर बाहर नहीं निकलेंगे।

और मेरा तो बगबर यही चिन्तन रहता है कि मैं उन दीशाओं को, प्रयोगों को, उस ज्ञान को, उन प्रवचनों को स्पष्ट करूँ। जिसने शण हमारे पास है जाह दो घंटे हैं, चार घंटे हैं तो इनमें जितना न्यादा शिष्यों को दे सकता हूँ। मैंने निश्चय कर लिया या कि बिल्कुल शिकिरों में नहीं जाऊँगा। मजस बना लिया था। सी परसीट सांच लिया था कि शिकिरों में भाग नहीं लेना है। अगर साधक मेरे पास स्वयं आएंगे तो सिखा देंगा।

मगर प्रेम की ओर एसी मजबूत होती है जिसमें मजबूत कोई दौर होता ही नहीं। फिर आप खींच लेते हैं उस दोस्री को खींचते हैं तो मेरे पांव उठते हैं, फिर सोचता हूँ कि यह ज्ञान तो अदर रह ही जाएगा फिर क्या कायदा होगा? फिर मेरे सांस लेने से कायदा भी क्या जब एक एक सास इस बात के लिए गिरकी रख दी है कि शिष्यों के जिए ही हर शण समर्पित हो, प्रत्येक सांस शिष्यों के लिए हो तो फिर मेरे सांस अवैना लूँ उससे, कायदा भी क्या होगा?

मैं ऐसा जीवन नहीं जी सकता कि पलंग पर लेता हूँ और एसी जलता रहे और मैं नींव लूँ। ऐसा सभव नहीं हो पाता। जो कुछ अंदर है वह मैं उन्हा बाहर हूँ और उन्हा आधिक हिलोर है, समुच है कि मैं बेता हो रहा। पस्तकों के माध्यम से,

प्रबुद्धों के माध्यम से, कैसेटों के माध्यम से और आपको जीवित जागत चेतन्य-व्यक्तित्व बनाकर के। मैं चाहता हूँ कि आपको कृष्ण और राम की तरह उच्चा उठा सकूँ।

वे भी एक व्यक्तित्व थे, एक सामान्य व्यक्तित्व यदि उन्हें आप एक इंतेहास को दृष्टि से देखें। भगवान की दृष्टि से तो वह प्रणम्य हैं। मैं तो आपको भी प्रणाम करता हूँ कि आप भी निर्विचित ही उसी रूप में हैं। भगवर आप उम् जगह पहुँचेंगे तब पूरा संसार झुक जाएगा आपके सामने। जगह-जगह आपकी स्तुति हो पाएँगी, जगह-जगह एवम्यास हो पाएगा कि हमारे पूर्वज क्या थे क्योंकि आप उन लिंगियों उन सफलताओं को प्राप्त कर पाएंगे और यदि आप नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं, तो ही आपका अभ्यास है तो गुरु खुद की नपस्या के अंश से उसे आपके भीतर प्रवाहित कर दें।

जोड़े साथमा शिविर होता है तो पांच पांच दिन तक सोता ही नहीं, क्योंकि समय ही नहीं मिल पाता। रात्रि में नींद लेने का और दिन में सोने का नवाल ही नहीं होता, लेटता हूँ तो फिर यह कल्पना होती है कि कल यह दिनस है शिष्यों को बत्या दूँ, किस प्रकार से दूँ। बीस दीनों भैरों मानस में होती है तो बीसों उतनी महत्वपूर्ण होती है। बीस में से ज्या दूँ, भगवर ऐसा दे दूँ कि फिर उनको कुछ लेने की जसरत रहे ही नहीं।

मैं तो हर जण ढेने को तैयार हूँ, आवश्यक है कि आप यहण करें और यहण करने के लिए कोई भी क्षण उपयुक्त हो सकता है। उसके लिए फिर कोई जरूरी नहीं कि रिक्ष मुहूर्त हो क्योंकि जगदम्बा तो आपने आप में प्रत्येक क्षण चेतन्य है, गुरु तो हर क्षण देने के लिए तत्पर है।

शास्त्रों में कहा गया है कि आचार मर्हीने में देव शमन करते हैं और कानिंक शुक्ला एकादशी को देवात्मान होता या देव उठेंगे। अगर उस समय उठेंगे तो फिर शावण के मर्हीने में हम भगवान शिव की पूजा किसे करते हैं। फिर भगवान शिव तो सोए हुए हैं? फिर शारदीय नवरात्रि में हम जगदम्बा की पूजा किसे करते हैं, जगदम्बा तो सोई हुई है?

देव सोए हुए नहीं हैं, वे तो सदैव चेतन्य हैं। वह तो
इमार अंदर भी जान है वह सोया हुआ है। उसको
जीवित जागत चेतन्य करके एक एक वेवता की
नम्बिर को जिंदा, जागत करके सामने खड़ा कर
सके, वह जान, वह चेतना आपमें आनो चाहिए,
वह ताकत आपकी आख में ऊनी चाहिए और
उठो ताकत आपको देना चाहता हूँ मैं।

फिर आप देखेंगे कि उस आनंद का अलग
ही मजा है, उपने आप में अनमन्त्र फकीरी
है। गृहस्थ फिर भी चलाते रहेंगे आप। गृहस्थ
आपका चलना भी चाहिए। मैं आपको
संन्यासी होने की दीक्षा नहीं दे रहा हूँ। मैं
आपकी कह भी नहीं रहा हूँ कि आप
आपनी पत्नी को छोड़ दे या पति को
छोड़ दें। मैं कह भी नहीं रहा हूँ कि
छापार छोड़ दें या नौकरी छोड़ दें। मैं
कह रहा हूँ कि वेसे धीरे, पत्थर आप
बटारिए मत। करते रहिए काम, मगर

बांच लमुद्र में कृत्त्वे की हिम्मत रखिए, आप।

और फिर जब मैंने आपको आश्यासन दे दिया तो आप मेरे ऊपर भरोसा करिए कि इस लमुद्र में मैं आपको दुवने नहीं दूँगा यह गलटी है निश्चित रूप से।

अगर कोई समझदार आकर्षी है तो इशारा भी समझ जाता है, मूर्ख आदमी है तो उड़े गार्हे से नहीं समझता। हम तो आंख कान वाले तो हैं, मगर हम कितने ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं, यह आपको खुद निर्णय करने वाली बात है। आपको समझना होगा कि क्या यह आदमी जो इसना कह रहा है बार-बार, क्या यह मूर्ख है, क्या इसको कोई स्वार्थ है, क्या इसको कोई कमी है, क्या इसको रोटी नहीं गिल रही है क्या है इसके जीवन में?

और कमी नहीं है तो हमारे सामने आकर के इतना फोर्स क्यों कर रहा है यह हमें? क्यों बार-बार प्रत्येक को लेवार कर रहा है? प्रत्येक को क्यों छाती में लात मार रहा है?

और मैं कह रहा हूँ कि मैं ऐसा यदि नहीं बसं तो फिर मेरे जीवन का मतलब रहेगा भी नहीं। यदि आपमें से प्रत्येक साधना में सिद्धि नहीं प्राप्त कर पाएं, तो मैं समझूँगा कि मैं स्वयं निराश हो जया, असफल हो जया और अन्यफलता से मैं भजना ही नहीं चाहता, रहना ही नहीं चाहता हूँ, यास भी नहीं लेना चाहता हूँ।

और साधना में सफलता के लिए आपको, एक महार की जरूरत है, एक गुरु की। ऐसा गुरु जो आपसे तीस साल से जुड़ा है, पचास साल से जुड़ा है, पिछले कई जन्मों से जुड़ा है। और मैं संन्यास में था तो एक भी संन्यासी शिष्य हिला नहीं, विचलित नहीं हुआ, मैं चार-चार साल भी उनसे नहीं मिला तो भी उनके मन में कोई फर्क आया ही नहीं अंतर आया ही नहीं। उन्हें भरोसा था कि ही सकता है किसी बजह से गुरुजी नहीं मिल पाए हैं मगर मिलेंगे जहर। मिलेंगे तो एक साथ सब कुछ देंगे और बराबर उनका इतनार बना रहता था। और मुझे भी बराबर मेरा माइंड में किन्तुक करता रहा कि उनका क्रण मेरे ऊपर हैं क्योंकि बराबर जुड़े

हूँ है वे उनको नुड़ा देना है।

आप इनसे साल से मुझसे जुड़े हैं और प्रत्येक बात मेरी मानी है। तो मेरा धर्म, मेरा कर्तव्य है कि मेरा ऋण तब उत्तर पाएगा जब मैं आपको वह सब कुछ दूजा जो देना मेरा धर्म, मेरा कर्ज़, मेरा कर्तव्य है। उसमें पीछे नहीं हट सकता आपने।

और नवरात्रि हो, होली ही या शीपावती हो नड़ा ग़ृहस्थ शिष्यों को संभालना पड़ता है वहाँ सन्यासी शिष्यों को भी संभालना पड़ता है। वे भी डंतवार करते हैं कि पंद्रह मिनट के निए ही सही गुरुदेव आएं और दीशा दें, प्रवचन हैं और कुछ ऐसा किया करें जो हमारे जीवन में उभीष्ट लक्ष्य दायक हो। यों तो साल का प्रत्येक दिन महत्वपूर्ण है, ३६५ दिन ही महत्वपूर्ण है मगर कुछ क्षण ऐसे होते हैं जो आपने आपमें बहुमूल्य बन जाते हैं। उन क्षणों की कोई तुलना नहीं हो सकती। उन क्षण विशेष में कुछ ऐसा कार्य हो जो अपने आपमें दुर्लभ हो, अद्वितीय हो, अप्राप्त हो और वही चित्त लेकर के मैंने उस श्लोक से आपनी बात प्रारम्भ की।

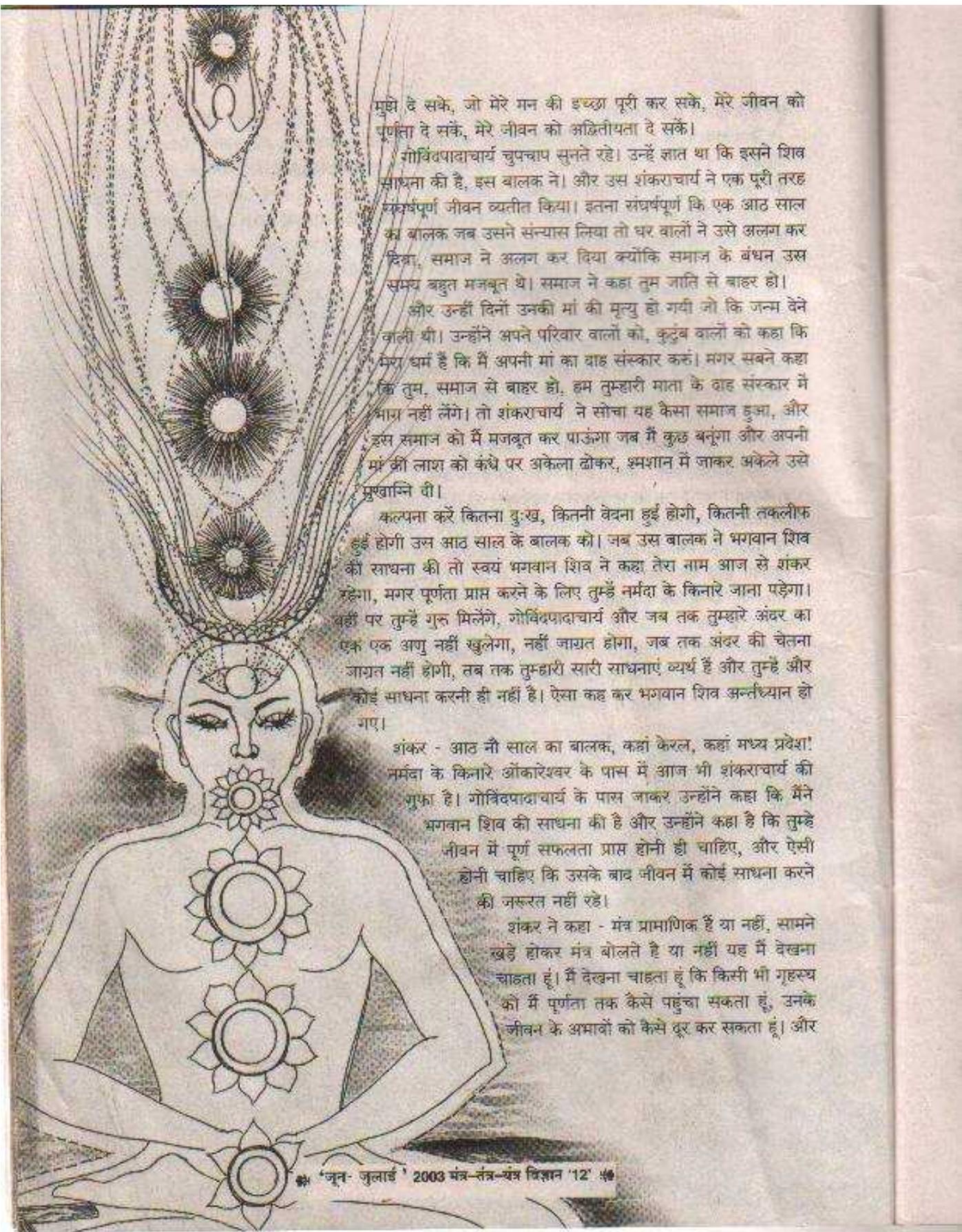
वैद्योर्थ मातुं परिदेह रुपं

इसी श्लोक, इसी चित्तम, इसी विचार, ही ही पक्षियों के माध्यम से शंकराचार्य आपने गुरु के पास जाकर खड़े हुए। और उन्होंने कहा कि मैं एक सामान्य व्यक्तित्व हूँ, एक सामान्य खालक हूँ, एक ऐसा खालक हूँ कि कोई जान नहीं है मुझे, एक भड़क पर पहा हुआ ककर पत्थर हूँ, जिसको कोई भी ढोकर मार देता है। और मैं केवल से रखना ढोकर नर्मदा के किनार तक इसलिए पहुँचा हूँ कि मैं आप जैसा गुरु प्राप्त कर सकूँ।

मगर आपसे पहले मैंने शिव साधना की है, इसलिए कि मैं शोक के

कुछ चाहता ही नहीं था, मैं तो केवल यही चाहता था कि

जीवन में ऐसा गुरु हो जो मेरा उभीष्ट लक्ष्य



मृण दे सके, जो मेरे मन की इच्छा पूरी कर सके, मेरे जीवन को पूर्णता दे सके, मेरे जीवन को अद्वितीयता दे सके।

गोविंदपादाचार्य चुपचाप सुनते रहे। उन्हें जात था कि इसने शिव साधना की है, इस बालक ने। और उस शंकराचार्य ने एक पूरी तरह शब्दपूर्ण जीवन व्यतीत किया। इतना संघर्षपूर्ण कि एक आठ साल के बालक जब उसने सन्यास लिया तो घर बालों ने उसे अलग कर दिया, समाज ने अलग कर दिया क्योंकि समाज के बंधन उस समय बहुत मजबूत थे। समाज ने कहा तुम जाति से बाहर हो।

और उन्होंने उनकी माँ की मृत्यु हो गयी जो कि जन्म देने वाली थी। उन्होंने अपने परिवार बालों को, कुटुंब बालों को कहा कि मैं धर्म हूँ कि मैं अपनी माँ का दाह संस्कार करूँ। मगर सबने कहा कि तुम, समाज से बाहर हो, हम तुम्हारी माता के दाह संस्कार में भाग नहीं लेंगे। तो शंकराचार्य ने सोचा यह कैसा समाज हूँगा, और इस समाज को मैं मजबूत कर पाऊँगा जब मैं कुछ बनूँगा और अपनी माँ की नाश को कंथे पर अकेला ढोकर, ध्मशान में जाकर अकेले उसे प्रस्तुति की।

कल्पना करें कि तना दुख, कितनी वेदना हुई होगी, कितनी तकलीफ हुई होगी उस आद साल के बालक को। जब उस बालक ने भगवान शिव की साधना की तो स्वयं भगवान शिव ने कहा तेरा नाम आज से शंकर होगा, मगर पूर्णता प्राप्त करने के लिए तुम्हें नर्मदा के किनारे जाना पड़ेगा। वहाँ पर तुम्हें गुरु मिलेंगे, गोविंदपादाचार्य और जब तक तुम्हारे अंदर का एक एक अणु नहीं खुलेगा, नहीं जागत होगा, जब तक अंदर की चेतना जागत नहीं होगी, तब तक तुम्हारी सारी साधनाएं व्यर्थ हैं और तुम्हें और कोई साधना करनी ही नहीं है। ऐसा कह कर भगवान शिव अनन्दित्यान हो गए।

शंकर - आठ नी साल का बालक, कहां केरल, कहां मध्य प्रदेश। नर्मदा के किनारे ओकारेश्वर के पास में आज भी शंकराचार्य की मृत्यु है। गोविंदपादाचार्य के पास जाकर उन्होंने कहा कि मैंने भगवान शिव की साधना की है और उन्होंने कहा है कि तुम्हे जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त होनी ही चाहिए, और ऐसी होनी चाहिए कि उसके बाद जीवन में कोई साधना करने की जरूरत नहीं रहे।

शंकर ने कहा - मंत्र प्रामाणिक हैं या नहीं, सामने खड़े होकर मंत्र बोलते हैं या नहीं यह मैं देखना चाहता हूँ मैं देखना चाहता हूँ कि किसी भी गृहस्थ को मैं पूर्णता तक कैसे पहुँचा सकता हूँ, उनके जीवन के अभावों को कैसे दूर कर सकता हूँ। और

इससे भी बड़ी बात यह कि भगवान शिव ने कहा कि मेरी उम्र केवल ३२ वर्ष है, इन ३२ वर्षों में मैं जरुर जगह पहुंचना चाहता हूं जहाँ आपने आपमें संपूर्णता प्राप्त हो। बस केवल यही उच्छ्वास है। मगर गोविन्दपादाचार्य ने कहा कि नद तक तुम्हारे अदर के रखे अगु, परमाणु विश्वादित नहीं होंगे, जाग्रत नहीं होंगे, चैतन्य नहीं होंगे, तब तक तुम्हें अद्विनीय प्राप्त नहीं हो पाएश्च। तुम्हारे जैसे साधना करने वाले और पव्योग मिल जाएंगे और सेकटों लोग मिल जाएंगे, मगर संसार में तुम अंकले ही बनो, तुम्हारे जैसा कोई अद्विनीय बने ही नहीं, अगर तुम्हारी यह अभिलाषा, यह लक्ष्य है, और अगर इस बात के निए

मेरे पास आए हो तो बहुत कठोर साधना करनी
पड़ेगी और साधना करनी पड़ेगी पक शिष्य बन
करके। केवल गुरु जीवा के अलावा नुम कुछ
करो ही नहीं। मैं देखना चाहता हूं कि तुममें
किसी श्वसना है।

शंकर ने कहा - यह तो बहुत छोटी
बात है, अगर आप कहें तो अपना जीवन
हे गुरुठेव आपके चरणों में समर्पित कर
दू। मैं चाहता हूं कि मेरे अदर के सारे
चक्र जाग्रत हो जाए एक बार मैं ही और
आप ही कर सकते हैं अपने पाद प्रहार
से वर्योंकि आपका नाम इस चमत्व विश्व
में विश्वानात है। सारा विश्व इस बाग
को स्वीकार करता है कि आप
उस जान को भी दे सकते
हैं कुण्डलिनी जागरण होने

के माध्यम से, चक्र
जागरण होने के
माध्यम से।

और आप
लोगों की एक
गलत

फहमी दूर कर दू कि कुण्डलिनी के सात चक्र नहीं होते कुण्डलिनी के एक सी आठ चक्र होते हैं और उनमें से भी ६४ चक्र केवल आपके मस्तिष्क में है। और जब वे पूरे चक्र जाग्रत होते हैं तभी पूर्णता प्राप्त होती है। पहले यह ज्ञान था मगर बाद में यह ज्ञान अधूरा बना रहा, एक शार्ट कट बना रहा कि ये सात में पाइट हैं इन्हें स्पर्श कर लोजिए।

शंकराचार्य ने कहा - मैंने तो सना था कि मूलाधार से सहस्रार तक केवल सात ही चक्र हैं। तो गोविंदपादाचार्य ने कहा - इसीलिए अद्वितीय नहीं बन सकते क्योंकि ज्ञान अधूरा है। तुमने शब्द प्रयोग किया अद्वितीय और मैंने कहा कि तुम्हें अद्वितीय बनाऊंगा। मगर अद्वितीय बनना है तो पूरे १०८ चक्रों को जाग्रत करना लिए वह विधि तुम्हें देनी होगी, एक एक चक्र को पूर्णता के साथ जाग्रत करना पड़ेगा एक ही श्वेत में एक ही झटके में और अगर ऐसा नहीं होता तो तुम जीवन में वह नहीं प्राप्त कर सकते जो तुम चाहते हो। इसलिए मैं यह ज्ञानना चाहता हूं कि तुम चाहते क्या हो।

शंकराचार्य ने कहा - मैं छःचौं चाहता हूं, यदि मुझे बोलने की अनुमति हो तो मैं छःतथ्यों की ओर आपका ध्यान, आकर्षित करना चाहता हूं। मैं केवल प्रवेश के बाह्यण का एक बालक हूं। बचपन में पिता की मृत्यु हो गई। माँ का बाह संस्कार मैंने अपने कथे पर डाल कर किया और आपको जात है कि भगवान शिव की साथना इसलिए की कि

मैं उस गुरु को प्राप्त कर लूं जो गुरु मुझे उस पूर्ण ज्ञान को दे सके। और पहली बार आपने यह बताया कि सात चक्र

नहीं होते १०८ चक्र होते हैं। यह पहली बार सुन

रहा हूं। छः तथ्य मेरे सामने हैं और मैं चाहता हूं

कि मैं कायाकरन्य कर सकूं, जिस समय भी मैं

चाहूं में पूर्ण द्वारिषं को परिवर्तन कर सकूं। मैं

यह ज्ञान लेना चाहता हूं कि किस प्रकार

एक सर्व पूर्ण कायाकरन्य कर लेता है।

भगवान शिव भी सर्व में प्यार करते हैं

और भगवान विष्णु के ऊपर भी सर्व

की छाया रहती है। उस कायाकरन्य

विधि, को समझ लेना चाहता हूं, मैं

समझ लेना चाहता हूं कि किस प्रकार

ये वृद्धावस्था को यौवनावस्था में

परिवर्तित किया जाए किसी का भी

मेरा ही नहीं। और मनुष्य के ही रूप

में नहीं, मैं जिस स्वयं में चाहूं वैसा बन

सकूं। क्या ऐसा संभव है?

गोविंदपादाचार्य ने कहा - ऐसा

संभव है।

शंकराचार्य ने दूसरी बात कही कि

मुझे ३२ वर्ष उम्र मिली है। ३२ में

इस भूमिके
बहुतों हो
जह जीव पर
वह मे क्या
दें। पूरे भासन
वर्ष मे अपसे

व्याप्तिश्व
को, अपने जान को, अपनी चेतना को हजारों
हजारों शिष्यों तक पढ़वा सकता है? क्या
इतनी विद्वता और सारे शास्त्र एक साथ
कठुस्य हो सकते हैं? कब तक मै पढ़ा
रहूँगा, यनुवेद, ऋयवेद, सामवेद, वज्रवेद?
उन शास्त्रों का तो कई अत छी नहीं है उन
उपनिषदों बी मै कई तक पढ़ना रहूँगा? क्या
कोई ऐसी साइना नहीं है जिसके माध्यम से
समस्त मन छी मेरे शरीर में अपने आप मै ग्राहकमय
बन जाएँ? एक एक रूप से मंत्र निष्ठने जाए
जाए। क्या कोई ऐसी कियो है? क्या मै उन सब
सकता हूँ?

गोविंदपादाचार्य ने कहा - ऐसा तुम कर सकते हो।

शंकर को बड़ा आश्वर्य हुआ। उन्होंने कहा - मुझे
तो सही ढंग से करन की भाषा ही नहीं बोलनी आती, क्या
मै इतना अद्वितीय बक्ता बन सकता हूँ कि मै बोलूँ और
सामने बाला सम्मोहित हो जाए, मंत्र मुख्य हो जाए,
बात सुनने मै अपने आप मै तन्मय हो जाए, लीन
हो जाए? कोई कहे और पूर्ण शास्त्र मेरे जवार से
प्रवाहित हो, कोई कहे उपनिषद का श्लोक और
मेरे अंदर ने उपनिषद का श्लोक प्रवाहित
हो। उस प्रवाह मै मुझे वेद मन बोलना पढ़े
तो मै बोल सक, मुझे सोचना नहीं पढ़े
कि यह यनुवेद का कहां मन है कैसे
बोलूँ। ऐसा मै चाहता हूँ। क्या मेरा
पूरा शरीर मंत्र नय बन सकता है?

गोविंदपादाचार्य ने कहा - ऐसा जब
सकता है क्योंकि प्रत्येक रोक अपने
आप मै एक मुख होता है, जो खो
मुख है।

सहस्राक्षी रुद्रः पूर्वः
सहस्राक्षः सहस्र यावः
मनुष्य के तो लाखों मुख है, लाखों
माथ हैं, लाखों चेतन्यताए हैं और

॥ 'जून-नुवाई' 2003 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '15' ॥

आप यह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

शंकर ने कहा - चौदा एक और बिंदु, उस कृष्णलिनी जगरण के माध्यम से क्या मैं अपने, पिछले सेकंडों जर्मों को और अगले सेकंडों जर्मों को एक साथ देख सकता हूँ? और देखने ही नहीं, क्या मैं, इस जीवन को उन आने वाली बाधाओं से परे हटा सकूँ, सफलता प्राप्त कर सकता हूँ? बाशाएं मेरे सामने आए ही नहीं, कठिनाइयां नहीं आएं। जो कुछ मैंने चाहा है वह प्राप्त हो जाए। अगले मैंने समरोहन चाहा है, वशीकरण चाहा है तो सामने वाला पूरा वशीभूत हो। देख और यह सम्पोहित हो जाए। क्या कोई पुस्ती विधि है? क्या इसके निए मुझे कोई दूसरा मव जप करना पड़ेगा? कोई दूसरी विधि है?

जोविदपादाचार्य ने कहा - एक ही विधि है। दूसरी विधि की जरूरत ही नहीं है और तुम क्या पूछना चाहते हो?

तो शंकर ने कहा कि वेर अंतिम इच्छा यह है कि आचार्य वह प्राप्त कर सकूँ, उच्च कोटि का कवि बन सकूँ, उच्च कोटि का लेखक बन सकूँ और मैं उस वशीकरण के माध्यम से पूरे ब्रह्माण्ड की नायन करता हुआ बेतनाशुक बना सकूँ।

जोविदपादाचार्य ने कहा - यह अंतिम बात नहीं पांचवीं बात कही है तुमने, छठी और कुछ है बात तुम्हारी।

शंकर ने कहा - मैं भक्तों के मारे बोल नहीं पाया था।

जोविदपादाचार्य ने कहा - जब गुरु और शिष्य के बच्ची में हवा भी नहीं होती तो कोई पर्याप्त होता ही नहीं तो फिर भक्तों तुम्हें रखने की जरूरत ही नहीं।

तो शंकर ने कहा - क्या आज के युग में.....

अभी केवल ३०० साल हुए हैं शंकराचार्य की उत्पत्ति हुए, कोई दम हजार, पचास हजार साल नहीं हुए हैं।

तो शंकर ने कहा - क्या ऐसा संभव है कि एक अंगुष्ठ माथ में मनुष्य इस पूरे शरीर को, कनवर्ट करके, इनना छोटा सा बनाकर के अन्नमय, कोष से प्राणमय कोष में परिवर्तित करके, किसी भी स्थान पर जा सकता है? अगर ऐसा सिद्धांश्म जाना चाहूँ, तो क्या जा सकता हूँ? क्या मैं इदलोक में जा सकता हूँ? क्यों मैं भगवान् शिव के कैलाश चाकर देसे भगवान् दर्शन कर सकता हूँ, जैसे शापक बर रहा हूँ? क्या मैं ब्रह्म लोक में नाकर के जो उनके चारों मुख से वेद उच्चरित हो रहे हैं, उनको सून सकता हूँ? क्या आज के युग में ऐसा संभव है?

जोविदपादाचार्य ने कहा ये प्रश्न सारे, नम्हरे

नहीं है, ये प्रश्न भगवान् शिव के

हैं जो तुम्हें

किया जाता है। उन्हें रास्ता बताया है और वह बताया है कि तुम वह जल्द चहों से प्राप्त कर सकते हो। और ये छँ की छँ अपने जन्म में ऐसी विधियाँ हैं कि एक एक विधि में बीस याल लगते हैं। कोई देखा चौंज तुमने पूछा हो नहीं। ऐसा केसे संभव है कि एक ही बार में सब कुछ संभव हो जाए। पूरा आकाशमन् एक लोक से दूसरे लोक में जाने की किया, गंणपात्र डेंद बेदान जान, बहना, सब अपने आप में प्रत्येक रोम-रोम में निकलते हों। एक व्यक्तिमत्त्व उन्होंना रामगोहित कर सके, यदरे का भाष्य कोई देखे और उनकी विषयता न रहे कि आपके सामने खड़ा रह सके, और ऐसा आचार्य बन सको कि विकला के देवता में तुम्हारे सामने खड़ा नहीं हो सके, और तुम गृहस्थ जीवन को भी पूर्णता के साथ केहुना चाहते हो। और मन्दस्त सौवन को भी अस्तिम पराकार्षा नक्क पहुंचाया चाहते हों। और तुम चाहते हो कि तुम भगवान शिव को लाक्षात देख सको कि वे द्विलक्षण पर मा पावित्री से बात कर रहे हैं, और तुमने प्रश्न किया कि क्या तुम विष्णु लोक, द्विलक्षण में विजया कर सकते हों, क्या पूरा शरीर अग्नि के आकाश का हो सकता है? तो शास्त्रों में तो इनके बारे में कहा गया है कि प्रत्येक विधि अपने आपमें दूसरों परामर्श है कि एक ही विधि प्राप्त कर ले तब भी व्यक्ति अद्वितीय बन जाता है और उसमें भी दौस चल जाते हैं। तुम्हारे सामने आप ये संन्यासी शिष्य बैठे हैं, उनमें से किसी को, कोई मंत्र मिखा रहा है, किसी को कोई मंत्र मिखा रहा है, किसी को कोई और मंत्र मिखा रहा है, पंखह बीम सान में और तुमने आकर के एक नाथ छँ की छँ चौंजों को मांग लिया, मेरे सामने रख दिया। वह असंभव है। कोई युस वह जान दे ही नहीं सकता क्योंकि उनको जानना ही नहीं है।

और गोविंदपद्मचार्य ने कहा - जाने वाली पीढ़ियाँ फिर जान चहों में उलझ जाएँगी, उनको मालूम हो नहीं होगा कि ३०८ चक्र चहा होते हैं और जब जात ही नहीं तो कोई गूरु चक्रों की जाग्रत करेगा कैसे, और गोप्ता नहीं करेगा, तो फिर शैम-रोम से मंत्र घ्यनि होगी कैसे और कैसे का प्राणी में परिवर्तित करेगा कैसे जिससे देह सुरक्षित रहे।

शंकर ने यहीं चाड़ा कि उम्म यह सब आम हो कि वह प्रत्येक लोक में जात कर सके एक संघटन में। यह विदाना आनन्दामूलक नद्य, किन्तु अस्तित्वात्मक प्रश्न है। क्या आपको अपने जीवन में कोई देखा गए मिला तो यह सब देसके शंकर की मिला मगर उसके मिलन से पहले उसने भगवान शिव को पूर्ण साधना की। एक प्रेर यह खड़े द्वावर के, पते खाकर के। वह चाहता था कि उसे एक ही संकलन करने के उसके अपने उसके पास थी ही नहीं, उस केवल २१ या २२ साल जैसी थी और उसने भावा कि वह आचार्यता को अपनी मुट्ठी में कस लेना है। मत्रमय जन्म जाना है, चेतनामय बन जाना है, पूरे बहुपाद में यात्रा कर लेना है, और यह विद्या देना है कि मैं आचार्य हूं। मैं विद्या देना चाहना हूं कि मेरे चेहरे में अपूर्व ज्ञान है मैं दिखा देना चाहता हूं कि इनी चुंबकीय शक्ति है कि जिसको चाहूं अपने अनुकूल बना सकता हूं चाहे वह कोई भी व्यक्तित्व हो मेरे सामने खड़ा नहीं रह सके।

शंकर ने कहा - सबसे बड़ी बात तो यह कि मैं सारे १०८ चक्रों को एक साथ जाग्रत करना चाहता हूं। और मैं सीखूंगा तो आपसे ही। क्योंकि इस विधि का और कोई गूरु जाना है ही नहीं। मूल देह को अपने जागने का विद्या गंगावनी जान और किसी के पास नहीं ही नहीं। बृहत्यानस्था में विलक्षण मृत्यु के संत्रिकट भए ब्याहि का पूरा जीवन दे दिया जाए, उसकी हीके कर दिया जाए वह

कहा किसी के पास नहीं है, उन लोकों में विचरण कर लिया जाए जो भद्रमत हैं, वह विद्या किसी के पास नहीं है। क्या मैं एक मरणी व्यक्ति को बापस जीवित कर सकता हूँ?

तो गोविंदपादाचार्य ने कहा - तुम तब ऐसा कर सकते हो जब एक पूर्ण गुरु तुम्हें मिले, जब उस गुरु के प्रति पूर्ण तुम्हारी श्रद्धा हो ही और वह पूर्ण प्रसन्न होकर तम्हारे चक्रों को जागृत करें।

इकल ने कहा - मैं तेथर हूँ।

जे विद्यपादाचार्य ने कहा - नहीं। यह आज संभव नहीं है, और यह भी जरूरी नहीं कि तुम मंत्र जप करो। मगर यह नवरात्रि में विद्यिदात्रों के दिन ही संभव है। उस विशेष मुहूर्त के न पहले न अच में, सिद्धि तभी प्राप्त हो सकती है। इतनी उच्चकोटि की किंतु तभी मिल सकती है। हमसे पढ़ले नहीं मिल सकती। तुमने नारे शास्त्रों को एक साथ इकड़ा करके रख दिया है, यह एक मन्त्रालय के दिमाग का विचार नहीं हो सकता। इतने उच्चकोटि के बाहर उपलब्ध भानस में नहीं आ सकते, किसी के भानस में आज नहीं जाए ही नहीं एक साथ। न क्रमवेद में आया, न धर्मवेद में आया, न ऋग्वेद में आया, न सामवेद में आया, न उपनिषद में आया। पुराण में आया। यह किसी और के मस्तिष्क के प्रधन है। भगवान शिव के अलावा कोई और इस ज्ञान को बता ही नहीं सकता। यिससे एक मत व्यक्ति की जीवित कर सके, येतना जल्दी, येतना रहित कर सके, अपने आप को चुंबकीय कर सके और कुपड़िलिनी के १०८ वक्तव्याश्रय बर सके।

मैंने यहां जब गोविंदपादाचार्य और शंकराचार्य के इस माध्यम से पढ़ा तो आश्चर्यचित रह गया कि क्या इस सब अग्नी तक दोधरे में भटक रहे हैं, क्या मैं अपने शिष्यों को समझ नहीं पा सकता हूँ। अपने शिष्यों को एकद्वारा मैं ही नहीं सब दे दिया जाए कि उसका बेहरा अपने आप में बहुत सम्मोहक बन जाए, इतनी लाकृत जा जाए, क्षमता आ जाए कि सारा वेद पुराण का ज्ञान प्राप्त हो जाए, किर यह नस्तरत रहे हो नहीं कि यह मंत्र जप करें, वा यो साधना करें।

शंकराचार्य ने कहा - मुझे कोई साधना करनी ही नहीं, व्यक्तिकृपा ही मेरे पास लगती है। मुझे और कोई साधना चाहिए ही नहीं व्यक्तिकृपा ही भगवान शिव ने कहा है कि इन छः तथ्यों से बिलकर ही राखांगपूर्ण व्यक्तित्व बन सकता है, और यह साधना एक ग्रन्थ कंकर तो तुम जीवन चुक जाओगे, पूरा जीवन खोखला और निरर्थक हो जाएगा। और भगवान शिव ने यह भी कहा कि यह ध्यान रखना कि बरदान मांगना गुरु से तो एक ही मांगना,

कि मेरे पूरे ३०८ चक्र जाग्रत हो केवल सात चक्र नहीं। वे तुम्हें
बहुत अच्छा, बहुत कुछ भी करे तुमने मेरी साधना की तैयारी में नम्हे उभी
जगह पहुँचा रहा हूँ जहाँ तुम्हें यह यत्र प्राप्त हो सकता है। वही युक्त
तुम्हे संजोवनों विश्वा वे सकता है, वे युक्त मृत व्यक्ति को जीवित कर के
प्रत्येक रोम-रोम में किस प्रकार ये अन्न ज्वाला पैदा की जा सकती है, आप
देने की किया कहा से आ सकती है यदि कुण्डलिनी पूरी जाग्रत है, तो
जो आप बोले वह सत्य हो ही है। उसके बरदान कहते हैं और यह
आपने झोश में किसी को कह दिया तो वह मरण होगा ही समाप्त होता
है, यह वह आपका कैसा भी प्रबल शब्द हो, वह बरदान देने वाले और
शाप देने का ज्ञान तभी आ सकता है ये तभी आ सकती है जब
आपका पूरा शरीर एवं कुण्डलिनी जाग्रत हो।

गोविंदपादाचार्य ने कहा - ऐसा ही पात्र के लिए आवश्यक है कि
तुम पूर्ण तन्मयता से युक्त सेवा एवं समर्पण करो। व्या तुम पैदा कर
सकोगे ?

शंकराचार्य ने कहा - अपर मेरे जीवन के २५ साल बचे हैं तो
आप कहे तो मैं २० साल भी आपकी सेवा करने की तैयार हूँ, एक
साल भी फिर मेरे लिए यत्र कुछ प्राप्त करने के लिए बहुत चाहता हूँ।
मगर मैं यह अवसर नहीं चूकना चाहता क्योंकि फिर गोविंदपादाचार्य
जैसे, आप जैसे युक्त मुझे नहीं मिलेंगे, फिर मणवान शिव को भी नहीं कह
जाराधन बेकार जाएंगे, फिर जो इस जीवन में चाहता हूँ वह एक अस्ति
रहस्य देखूँ वह नहीं हो सकेगा। मैं चाहता हूँ भार विदान-मूल
परास्त हो, मेरे सामने खड़े ही नहीं रह सके।

और शंकराचार्य ऐसे ही बने उनके सामने कोई विदान दिया नहीं
पाया चाहे वे काशी में रहे, भोज में रहे, उन्नेन में रहे। इसीलिए वे
आचार्य कठलाए। मंडन मिश्र को भी उनके सामने हारना पड़ा, उनके
चरणों में चुकना पड़ा जो कि उस समय का संसार का श्रेष्ठ-विष्णु
था और शंकर एक स्थान से कायाकल्प करके दूसरे स्थान में त्रा-
सके। यत्र मंडन मिश्र और शंकर का शास्त्रार्थ हुआ तो मंडन मिश्र न
कहा मैं तुम्हे बहुत उत्त कोटि का विदान नहीं मानता हूँ क्योंकि मैं
मंसार का श्रेष्ठ विदान हूँ मुझे यारे वेद कंतरस्थ है, पुराण कंतरस्थ है,
शास्त्र कंतरस्थ है। आप जो भी कहें वह श्लोक में उच्चारित कर
सकता है, आप मुझसे शास्त्रार्थ करें।

शंकराचार्य ने कहा - मैं आपा ही इसलिए हूँ क्योंकि जो कुछ यह
प्राप्त किया है, वह तुम प्राप्त कर ही नहीं पाए हो, इसलिए मैं तुम्हें
जीत जाऊंगा।

मंडन मिश्र की पत्नी भी विद्वी थी। तो शंकराचार्य ने जब मंडन
मिश्र को प्रदानित किया तो मंडन मिश्र की पत्नी ने प्रश्न किया तीव्र
कहा कि पत्नी, पति की जड़ीबेंगी होती है, युद्धों आप हराएंगे, ताकि

मंडन मिश्र परागिन गाने जाएंगे। मंडन मिश्र की पत्नी ने गृहस्थ जीवन से संबंधित प्रश्न पूछा तो एक राजा के शरीर में कायाकल्प द्वारा प्रवेश करके शंकराचार्य ने गृहस्थ को भी देखा कि गृहस्थ क्या होता है। और मंडन मिश्र और उसकी पत्नी को परागिन होकर उनका शिष्य बनना पड़ा।

और शंकर ने गृहस्थ भी देखा, सन्नाम जीवन को भी देखा, ब्रह्म लोक और रुद्र लोक को भी देखा, अपने ऊपर एक चुनबीय आकर्षण भी पेया किया और सारे शरीर को मंत्र मय भी बनाया और पूरे भारतवर्ष में, पौरे आशीर्वाद में शंकर जैसा एक व्यक्तित्व ही बना और हम आज भी कहते हैं कि शंकर भाष्य जैसा गुण बन ही नहीं सकता, अगले हम हजार भाल तक भी वैसा गुण बन ही नहीं सकता और शंकर जैसा व्यक्तित्व भी बापस पैदा नहीं हो सकता।

यह क्या चीज़ है? हम कब विस्टारे हुए जीवन व्यतीत करते रहेंगे? आपने अपने जीवन में पोथियों पढ़ी कि सात चक्र हैं - मूलाधार, स्वधिकृत, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा चक्र और सहस्रार चक्र और जाग्रत एक भी हुआ नहीं और पोथियों पढ़ पढ़ के हजारों नामों ने कुण्डलिनी जागरण करने की क्रिया शुरू कर दी। मगर क्या

गोविंदपादचार्य जलत थे? क्या वहकर भाष्य जलत है?

गोविंदपादचार्य ने शंकर से कहा - मैं तुम्हें अद्वितीय बनाऊंगा, मैं बनाऊंगा कि तुम केसे अपने शरीर को दूसरे शरीर में परिवर्तित कर सकते हो, मैं बनाऊंगा कैसे किसी शंगा को वापस जीवन में सकते हो। मैं तुम्हें बता सकता हूं पूर्ण संजीवनी विद्या किसे कहते हैं, मैं तुम्हें सिखाऊंगा। मैं तुम्हें बता सकता हूं कैसे एक श्वास में दूसरे श्वास पर एक क्षण में जा सकते हैं। मैं पिंखा सकता हूं कि कैसे उस काल को देख सकते हैं कि एक जीवन पहले तुम भया दो जीवन में क्या है और दो घट बाद क्या घटना घटित होने वाली है और जला वेव सारे उपनिषद, सारे शास्त्र अपने आप तुम्हारे शरीर में समाहित कर सकता है। मगर यह हो सकता है केवल सिद्धिकृति के द्विष्ट पर।

और मैं भी इस द्विष्ट पर जब सन्नामी शिष्यों के पास जाता हूं तो वे कहते हैं कि आज तो आप केवल १०८ कुण्डलिनी जागरण की दीक्षा दी जाए। इसके अलावा हमें कुछ चाहिए ही नहीं आज क्योंकि ऐसा दिन फिर बापस जीवन में आ ही नहीं सकता और आज के दिन हम वह प्राप्त ही नहीं कर सकते हो सब व्यर्थ है। हम बीस साल से तीस साल से केवल आपके नाम का स्मरण कर रहे हैं कोई साधना नहीं कर रहे हैं, आप दीजिए तो यह उच्च क्रांति की दीक्षा दीजिए।

और अगर मैं उनको दे सकता हूं वह दीक्षा तो मैं गृहस्थ शिष्यों में क्या कर्मी हूं, उनको कर्मी नहीं हूं। उन सन्नामी शिष्यों में क्या विशेषता है, तो गृहस्थ शिष्यों में क्या न्यूनता है?

ठुः की ठुः की ठुः साधनाएं जो शंकराचार्य

एक ही दीक्षा के द्वारा अपने गुरु

गोविंदपादचार्य से प्राप्त की थे अपने

उपर्युक्त अद्वितीय है, वेव दुर्लभ है,

केलना है और प्रत्येक संन्यासी के लिए अगर आवश्यक हैं तो प्रत्येक गृहस्थ के लिए तो और भी आवश्यक हैं जिसमें कि वहने से उन्हें पता लग जाए कहाँ समस्याएं आने वाली हैं, पल-पल जो हमारे सामने मां, बाप, भाई, बहिन नहीं जा रहे हैं उनको हम संजीवनी विदा दे सकें। ऐसे अर्थी जाती हैं, हम कुछ नहीं कर पाते। हम जानना चाहते हैं कि भगवान् शिव का साक्षात् स्वरूप क्या है? हम उन्हें देख नहीं पाते और केवल के नमः शिवाय का जप करते रहते हैं।

शंकराचार्य ने पृथा - क्या मैं अपनी आँखों से कैलाश पर्वत देख सकता हूँ, क्या ब्रह्म लोक देख सकता हूँ, क्या इदं लोक देख सकता हूँ, क्या उन अन्सराओं को देख सकता हूँ, क्या सिद्धांशुम को देख सकता हूँ?

और गोविन्दपादाचार्य ने कहा - अवश्य देख सकते हैं। सिद्धिवाचि के अवसर पर आप मेरे पास आना, मैं अवश्य तुम्हारों वह दीक्षा दूँगा।

और संन्यासियों के लिए यह दीक्षा महत्वपूर्ण है तो गृहस्थ के लिए भी गहरापूर्ण है। गृहस्थ भी जपने आप में उतना ही कठिन जीवन है जितना संन्यास है, सन्यास में ज्यादा कठिन गृहस्थ है नो मैं अपने गृहस्थ शिष्यों को उन जगह कहीं नहीं पहुँचाऊ जहाँ सन्यासी शिष्यों को पहुँचा रहा हूँ। उनके लिए भी मेरा वही भर्ते वही कनेक्शन है, सन्यासियों के लिए यह दिवम् महत्वपूर्ण है तो गृहस्थों के लिए भी अद्विनीय है। मगर भृत्यांत तब है जब आप गुरु से इस इन्ह सिद्धिवाचि के चिन वह दीक्षा प्राप्त कर सकें।

और यह साधनारं वह दीक्षा आपको कहीं और मिल नहीं सकती बार बार ऐसा गुरु मिल नहीं सकता जो अन्य साथ छः की है; कियाओं को प्रदान कर सके, बार बार ऐसी जीवन में स्थिरि बन नहीं सकती, बार-बार ऐसी चेनना मिल नहीं सकती, बार बार ऐसा कोहिनुर मिल नहीं सकता और यह दीक्षा मैंने पिछले पचास साल में दी ही नहीं। देना समझ ही नहीं था, क्योंकि शिष्य उस स्थिरि तक पहुँचे नहीं थे कि शहण कर सकें। मगर मैं कोई जान बचा कर रखना नहीं चाहता और क्रांध और जिव मुझे इस बात पर आई कि सन्यासियों ने कहा ऐसी दीक्षा हम ही प्राप्त कर सकते हैं। मैंने कहा - अगर तुम प्राप्त कर सकते हों तो मेरे गृहस्थ शिष्य भी प्राप्त कर सकते हैं। उनको मैं मैं यह दीक्षा दूँगा। अगर यह देह है,

मल-मूत्र से भरी है तो मैं इसे प्राप्तमय बना दूँगा जहाँ
अवमय कोष की जल्लरत ही नहीं रहे, खाने की
जल्लरत ही नहीं रहे, पीने की जल्लरत ही नहीं

रहे। अन्नमय कोष की प्राणमय कोष में परिवर्तित हो तो करना है, परिवर्तित करने वे उस जगह पहुँच जाएंगे जहाँ तुम पहुँचे हुए, तो, उसके बाद वे छः की छः साधनाएं उन्हें एक साथ दे देंगा।

यही कथमाकश मेरो उन संन्यासियों के साथ चली। वे सब उत्सुक होकर सोचते हैं कि यह तो बिल्कुल एक नयी पुण्ड्रिनी नया रास्ता बना रहे हैं, जिनको देना ही नहीं चाहिए, उनको दे रहे हैं एक दुर्लभ ज्ञान कि वे गृहस्थ कल को कुछ भी कर लेंगे।

और मैं उनको कहता हूँ कि मैं चाहता हूँ मेरे गृहस्थ शिष्य इतने सक्षम बने कि कुछ भी कर सकें और सम्मान में उन जैसा किसी का व्यक्तित्व ही न हो। यही चाहता हूँ मैं।

वे कहते हैं यह जिद है आपकी। और मैं कहता हूँ कि अगर जिद नहीं है, उठ नहीं है तो पौसन भी क्या है आपका। कोई संन्यासियों का टेका थोड़ी ही ले रखा है कि वे ही राब कुछ करेंगे। गृहस्थ शिष्यों से भी मेरा उतना ही प्रेम है जितना संन्यासी शिष्यों से है, शायद उनसे भी ज्यादा है क्योंकि गृहस्थ शिष्य वेरों से आकर लिपट जाते हैं, एक क्षण भी आखों से आसू निकलने दृढ़ते नहीं हैं, इतना आप शिष्य प्यार करते हैं।

जब मैंने उन संन्यासी शिष्यों से कहा कि मैं यह दीक्षा तुम्हें दे रखा हूँ तो उन गृहस्थों को भी दृग्मा।

तो वे बोले - क्या सारे गृहस्थ शिष्यों को करेंगे?

मैंने कहा - मैं एक-एक गृहस्थ शिष्य को दृग्मा, मां के पेट एक-एक बच्चा जो होगा, उसको भी दृग्मा। बाहर ही नहीं जो अंदर पेट में होगा, उसे भी दृग्मा।

तो ऐसी दीक्षा में दे सकता हूँ आवश्यकता है आपके समर्पण की प्रेम की दृढ़ता की। आप इस साधनाओं की चाहे चमत्कार कहिए, याहे विश्वास कहिए, चाहे विश्वास न कहिए। आप विश्वास नहीं करेंगे तो वे आपके जीवन के पाप हैं जो आपके सामने आकर खड़े होंगे। जीवन में कई रूपों में पाप सामने आकर खड़े होते हैं, कभी बेटे के रूप में पाप आते हैं, कभी अविश्वास के रूप में, कभी पत्नी के रूप में आते हैं जो अपको साधना करने से रोकते हैं, कभी संशय के रूप में पाप सामने आकर खड़े हो जाते हैं।

ये जीवन की न्यूनता है क्योंकि आप गृहस्थ जीवन में हैं। मगर मैं भी गृहस्थ हूँ। यदि मैं इन सिद्धियों को प्राप्त करके सफलता प्राप्त कर सकता हूँ तो आप भी कर सकते हैं और आपको मैं करवाऊंगा ही, हर हालत में करवाऊंगा।

जो आपके अंदर अधिकार है उसे तुर करने की आवश्यकता है। संशय आपके जीवन का अंग है कि मैं जिदा हूँ या भरा हुआ हूँ। जिसका संशय है वह जीवन में कुछ कर नहीं सकता। सियार जीवन में शेर बन नहीं सकते और शेर बनना है तो ढुकार करनी ही पड़ेगी, उछल कर हाथी पर प्रहार करना ही पड़ेगा, उसके मर्सिष्वक को फाड़ना ही पड़ेगा। तभी शेर बन सकते हैं।

और आपको मैं गृहकर या लियार बनाना नहीं चाहता हूँ, आपको मैं शेर बनाना चाहता हूँ कि आप दहाड़े तो शत्रु सामने टिक ही नहीं सक और यह मेरी जिद है, उठ है तो है कि यह दीक्षा दृग्मा पूर्ण।

और जीरक्षता के साथ दृग्मा, केवल पुरुषों और महिलाओं को ही

जहाँ जन्म पेट में बालक है तो उन्हें भी यह दीक्षा दूँगा।

आप जाने बढ़ कर गुरु से यह दीक्षा प्राप्त कर सके, शेषतम बन सके। अद्वितीय बन सके और जीवन में वे छः की छः स्थितियां प्राप्त कर सकें जो ज्ञानवाचार्य ने प्राप्त की ऐसी ही कामना करता है, हृदय ने आशीर्वाद देता है।

समस्त १०८ कृष्णलिनी जागरण दीक्षा परं जीवन का सौभाग्य है। सिद्धाश्रम में ब्रेठे योगियों सन्यासियों के लिए भी यह दुर्लभ है और गृहस्थ शिष्यों के लिए तो संभव ही नहीं है कि प्रत्येक रोम से मन्त्र उच्चरित हो और जो संभव नहीं है वहीं मैं संभव करके दिखाऊंगा।

जो संभव नहीं है वही जीवन में करके दिखाऊंगा है। मेरा पूरा जीवन एक जिद् पर निवारा रहा है, एक संघर्ष पर जिवा रहा है, एक निश्चय पर निरुद्ध रहा है। जो और मना करेंगे वह काम करेंगे ही। क्योंकि मेरा पूरा जीवन विद्रोही रहा है और अनिम क्षण तक निद्रोही रहेगा।

आप मुझसे कुछ लेकर जाएं तो एक अद्वितीय चीज लेकर जाएं, ऐसी दुर्लभ चीज लेकर जाएं कि किसी योगी को यानि को, तांत्रिक को, गुरु को बताएं तो वह दुश्म दुश्म ताकता रहे कि ऐसा कैसे संभव हुआ। यह जान कही मिल नहीं पाएगा, किसी ग्रन्थ में नहीं मिल पाएगा। यह केवल इस जीवित ग्रन्थ में मिल पाएगा और कहीं नहीं मिल पाएगा। संभव ही नहीं है।

और यह मेरी जिद् है कि आपको अद्वितीय बनाना है। अद्वितीय का अर्थ है कि आपके सामान दूसरा कोई न हो। ऐसे ही आप अद्वितीय बन सकें इस दीक्षा के माध्यम से ऐसा मैं आशीर्वाद देता हूँ, कल्याण कामना करता हूँ।

सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरनन्द जी

गुरु कृपा सो हरि कृपा

हरि कृपा सो गुरु कृपा

नुस्ख पूर्णिमा के इस विशेषांक में एक साधक के भाव अक्षरशः दिये जा रहे हैं जो सदगुरुदेव से पिछले कई वर्षों से जुड़ा है जो अनुभूति उसे प्रथम अवसर पर प्राप्त हुई थी वैसे ही अनुभूतियां उसे निरन्तर प्राप्त हो रही हैं ये पत्र इस बात का प्रमाण है कि गुरु की सत्ता सर्वत्यापक कालजयी और अक्षुण्ण है -

यह बात मैं अपने जीवन की व्यक्तिगत अनुभूति से लिख रहा हूं, यह बात कई वर्षों पुरानी है उस समय मुझे की थी न मैं जानी हूं न ही परम भक्त। मैंने योग की कोई उच्च अपनी जीवन की अधेड़ अवस्था में आध्यात्मिक साहित्य पढ़ने का नया नवा शीक जागा, इसे जानकर मेरा पुत्र सदगुरुदेव की

ओर यह कृपा केरे हुई ? मैंने कोई कठिन तपस्या नहीं नाधना भी नहीं की थी सांसारिक विलास में इबा हुआ अज्ञान के अंधकार में मटकता हुआ मैं एक सामान्य व्यक्ति था गुरुसेवा एक पुस्तक और एक पत्रिका लेकर आया। तो क्या, गुरु के परम गहन्त्र से भी मैं बिनकुल अनजान था।

मैं उन्सुकलावश ऐसे ही पने पलट रहा था तो गुरुदेव के चित्रों पर मेरी वृष्टि पड़ी। इन तस्वीरों में कोई विशेष सुन्दरता तो नहीं थी फिर भी न जाने क्यों बार बार उनके ही लेहरे पर नजर सहज टीक जाती थीं दो दो दिवों को देखते देखते एक

हां, मन में एक बात अवश्य थी परम तत्व को पहचानने की ओर परम तत्व यज्ञिदानन्द का अनुभव करने की एक उक्त अभिनाशा थी। उस दिन गुरुदेव के चित्र देखते देखते पल भर में अन्दर के छाए खुल गए, पने अंधकार को भेद कर चमत्कार हुआ। अचानक आख्ये बन्द हो गई और अन्धेरा सा छाया गूलाघार में डलका सा कल्पन हुआ और अन झन करता हुआ मस्तक से तानु तक पहुंच गया गड्ढे अंधकार के

ऊपर तिल के लगान छोटा एक चमकदार बिन्दु लटका हुआ धारणा समाधि, कुण्डलिनी नाद ब्रह्म, विश्व की अलौकिक नजर आया। मन निर्विचार शांत और तृप्त हो गया, मैं एक साधनार्द, गुरु गीता, अमृत बृद्ध, निरिविलेश्वरानन्द स्तवन, दिव्य आनन्द से विभोर हो उठा यह रिथिति कुछ समय तक तुलमोपनिषद पढ़ी और मन आनन्द एवं आश्वर्य में दब गया चली आगे खुली तब हृदय नीव से जागने से बाव बाली गुरुदेव ने इन पुस्तकों में साधना पथ के सारे रहस्य सरल ताजगी और शांति से भर गया था। मैं नोचता ही रह गया शोली में खोल कर रख दिये। जो अब तक गहस्यमय था और और पुस्तक में दिये हुए गुरुदेव के प्रवचन पढ़े।

उसके पश्चात मैंने सदगुरुदेव की पुस्तके - ध्यान धारणा समाधि, कुण्डलिनी नाद ब्रह्म, विश्व की अलौकिक तुलमोपनिषद पढ़ी और मन आनन्द एवं आश्वर्य में दब गया गुरुदेव ने इन पुस्तकों में साधना पथ के सारे रहस्य सरल योगी मुनियों तक ही इसका ज्ञान नीमित था गुरुदेव ने ध्यान

वास्तव नमांडि के जो विवेचन
किया गया है उस व्यक्ति के लिए
मार्गदर्शक है।

इसके बाद मैंने गुरुदेव के सम्मुख उपस्थित होकर अनुबोल एवं शक्तिपात्र दीक्षा लगायी। उसके बाद मुझ में अद्वेक परिवर्तन होने लगे जब्दुर के प्रति, घर के लोगों के प्रति, अपने प्रति, लोगों के प्रति प्रेम बढ़ता गया। बैठे-बैठे सदगुरु को याद कर आये बहने लगते और ऐसा लगता कि अनन्त मन की खुलाई हो रही है। साथ ही मेरी आर्थिक और सामाजिक समस्याएं भी हल होने लगी तथा मन में उठने वाले प्रश्नों का समाधान मन में ही ही जाता। एकान्त में बैठकर भजन एवं जप करता हूँ। अद्याम भी अच्छा लगता है मेरी बाणी में एक भिठास सी आ गई। लोग मेरी बात का स्वागत करने लगे हैं। कम बोलना किसी की बराई न

करना और न सुनना वही मुझे अच्छा लगता है। निरन्तर ऐसा
लगता है कि जगत के ऐसो आराम से मन ऊबकर गुरु चरणों
में ही मन रमने लगा है।

गुरुभाव ही परम तीर्थ है। गुरुभाव, यानी अपने आपको गुरु में खो देना। गुरु में इन्हाँ लबलीन हो जाना कि हममें और गुरु में बोईं भेद ही न रहे। मेरे विचार में यह श्रेष्ठ प्रकार की गुरु सेवा है।

मेरा शरीर, मेरा मन, मेरी आत्मा, जिस जिल्हको भी वै
अपना समझ बैठा हूँ वह सब, मैं जो कुछ सोचता हूँ, अनुभव
करता हूँ, जो भी कार्य करता हूँ वह सब गुरु का है। मैं करता
नहीं, गुरु ही केवल करता है। गुरु ही ज्ञान है, गुरु ही ज्ञेय है
और वही जाता भी है। मैं पिट गया। बग! अब गुरु ही है —
ऐसी हमारी स्थिति हो जाए तो कितना कल्पाण हो!

सन्त कर्बीर जी ने एक भजन में इस प्रकार भावना का कितना संदर्भ वर्णन किया है। वे कहते हैं



Digitized by srujanika@gmail.com

गुरु प्रताप जा दिन से जाही दिन दिन बढ़त

जह जह दोली सो परिकमा, जो कुछ करी
सो रेत। जब सोचों तब करौं इउपट दून्हों और ना
देवा।

यह एक महान श्रीलिया कहने हैं - सहज समाधि

अच्छी, मगर वह लगती है तो केवल गुरु प्रताप से।
प्रताप की ऐसी महिमा है कि उनकी सचारित और
की सचिनित अद्भुत स्माधि दिन बिना बढ़ती ही जानी
पारे सदगुरुदेव जी एक बार हम में शक्ति का संचार
है, तो किसी छोटन नहीं। हमें पृथिवी से भिन्न कर

ही छोड़ते हैं – चाहें कितना ही समय लग जाये। अस ! उनकी

कृपा बनाये रखने के लिए हम जो उनके शिष्य हैं, हममें उनके साधक, साधना और साध्य एक हो जायेगे। तब साधना रहे प्रति भक्ति, संसार के प्रति विवेक और साधना में सचि होनी था न रहे, कोई बात नहीं। मग्न सदा ब्रह्म में जीन होकर चाहिए। सदगुरुदेव जी की कृपा तो सरिता की तरह बहती ही सचिवदानन्द जन जायेगा। मगर यह याद रहे कि अकेली रहती है। हमें ज्ञान कर उस कृपा जल को पीना चाहिए।

गुरु नानक देव जी कहते हैं — ‘संसार में किसी भी कृपा चाहिए। तभी तो गुरु का इन्द्रा महात्र है। हमारे सिद्धयोग मनुष्य को इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि वह गुरु के में तो गुरु ही साधारण परब्रह्म है। गुरु मिल गये तो ब्रह्म मिल सहारे के बिना संसार साशर को पार कर सकता है।’ ‘और जी नवा। मिलना क्या था वह तो मिला हुआ ही था। बस, गुरु यह ब्रह्माण्ड भगवान का मंदिर है, किन्तु गुरुमख से प्राप्त ने जगुलि निवेदा कर दिया।

जान के बिना यह अंधेरा है।’ और गुरु के भक्तों को आत्मिक साधना का रहस्य सदगुरुदेव जी ने बार बार हमें समाप्त एवं अनेद मिलते हैं, सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है और बताया है। सच्चास्त्रदेव साधना में विवेक को बहुत ऊचा स्थान उनके मन में गुरु का निवास होने से वह भगवान का धर बन देते हैं। तुलसीदास जी ने कहा है —

जाता है। भारत के एक बड़े समर्थ गुरु कह गये हैं — ‘जिसे दुलसिदास हरि गुरु करुना बिनु विमल विवेक न राजा से मिलना ही उसे राजा के प्रियजन से मिलना गांठनी होई। वैसे ही जिसे भगवान को पाना हो, तो उसे भगवान विनु वितेक रासार घोर निधि पार न पाये कोई॥’ हरि और गुरु की कल्पा की तुलसीदास ने एक ही अर्थ में कहा है। गुरु कृपा सो हरि कृपा, हरिकृपा सो गुरु

होती है, वह वस्तु उसे निस्वेदह प्राप्त होती है। समृत कवि के समान है। उसे राजा सूझता नहीं। उसे विमल विवेक ल्पी आखे चाहिए। गुरुकृपा से विमल विवेक मिल संकल्प है और उसके अहरे अद्वा भक्ति पूर्ण साधना से मनुष्य यथास्मय जीव से शिव हो सकता है। अथवा गुरुदेव जी के नित्य स्मरणीय शब्दों में कहे तो मानव शिव तो हो हो, उसका जीवन्त मिट जाता है।

जापार नापर सत्य सनेह।
नो तेहि मिलत न करु सनेह।

हमारे अन्तर में भगवान, यानी परम अनन्द, परम सुख और परम शांति के प्रति सच्चा स्नेह जागृत होते ही, भगवान हमारे ओर दीदा आता है। कारण, भगवान सच्चे सनेह का चाहक है। किन्तु वह हमें सीधा आकर नहीं मिलता। हाँ, किसी विरल विभूति को सीधा भी मिल सकता है, किन्तु वह मिलन बहुत ही दुर्लभ है। इसलिए ईश्वर हमारे मार्गवशील के लिए गुरु को भेज देता है। गुरु भक्तों को यह बात याद रखनी चाहिए कि सदगुरु का मिलना कोई साधारण बात नहीं — जब भगवान की अन्यन्ता कहाना होती है, तभी गुरु मिलते हैं। पर गुरु के एक बार सच्चे वशीन हुए तो हमला बेड़ा पार, इसमें संशय नहीं।

हमें तीन तोकों में दुनिम मालगुरु मिले — उन्होंने हमें मंत्र दिया। हमारी सुम शक्तियों को जागृत किया, साधना का मार्ग बतलाया। इतना ही नहीं, हमें ब्रह्मानन्द की झालक दिखायी। अब हमारा काम है — श्रद्धा और भक्ति से युक्त साधना छारा गुरुसेवा करना। गुरुसेवा, जेमी कबीर साहब ने कहा है वैरसी हो — जो कुछ करी सो सेया। हमारी साधना जब ध्यान में थेरे तब ही नहीं, पठन, पूजन या भजन करे तब ही नहीं, हर हमारे प्राणार्पण प्रणाम प्रणाम . . . बार बार हर चांस में घड़ी चालू रहनी चाहिए। फिर एक दिन ऐसा भी आयेगा, जब प्रणाम।

सद्गुरुदेव

से मैं बोला कथा सीरिया

सदगुरु शिष्य रूपी घट को सहजते हुए उसका निर्माण करते हैं और उसके जीवन को अमृत कुंभ बना देते हैं जीवन में निरन्तर आनन्द की अनुभूति होना ही सर्वोच्च अनुभूति है और जब सद्गुरुदेव का ध्यान करके ही आनन्दभाव में शिष्य प्रगत हो जाता है तो यह शास्त्रों के शिष्य ने गुरु को आत्मसात कर लिया है। २४ वर्षों से निश्चिन्तर गुरु सम्पर्क में रही एक साधिका के यह भाव हर साधक के लिए एक प्रेरणा योग्य है -

हवा, पानी, भोजन, वृद्ध की गरमी, इन सबके समान उत्तेजक अथवा शामक गोलियों का शिकार हो जाता है। उसे मनुष्य की जीवित रहने के लिए कठिनपूर्व अन्य उपादानों की नहीं मालूम कि उसकी यह खोज वास्तव में उसके मूल की, भी आवश्यकता होती है। परन्तु ये उपादान अमृत होते हैं। उसके उत्पन्न की खोज है। और यह उन्हें उसकी नाभि में कड़ी छनका अनुभव किया जा सकता है, इनके प्रभाव जो प्रत्यक्ष बहन गहरे, बहुमूल्य कल्पना वृत्त्य के समान छिपा पड़ा है। देखा जा सकता है, किन्तु इन्हें भोजन और पानी के समान उसकी सुगंध उसे मस्त करती है, मतवाला बना देती है, हाथ में लेकर स्पर्श नहीं किया जा सकता। परन्तु वह उसे सही दिशा में न खोजकर चारों ओर पागल सा

जीवन की व्यवस्था और आनन्दवायक बनाने वाले पार्थिव तीढ़ लगाता रहता है। इसके विपरीत हमारे देश का यह स्वभाव और आशह ग्राम कर लिया है। अधिसंख्यक नमता वहाँ भूख, बेरोजगारी गहा है कि मनुष्य का मूल्यांकन केवल उसके पार्थिव उपादानों और जरीबी से पीड़ित नहीं है, यद्यपि यह नहीं कहा जा सकता के आधार पर न करके उसके आमनेतर एवं बाह्य व्यक्तित्व के कि इन आपदाओं का वहाँ अत्यंताभाव हो गया है। अच्छा सम्मिलित स्वरूप से किया जाये। कारण, मनुष्य केवल वही खाने, अच्छा पहनने और बड़ियां मोटरगाड़ियों में घूमने के नहीं हैं जो ठिखाई देता है - एक मनुष्य वह भी है जो सोचता जावजूद, मनुष्य के भीतर कोई आक्रांका रहती है, जो अपूर्ण है, अनुभव करता है, प्रेरणा देता है। सद्गुरुदेव ने इसी दृष्टि रहती है और पूरी होने की मांग करती है। इस अध्यात्मिक मनुष्य को निवार किया है।

आकांक्षा के अपूर्ण रह जाने से समाज में अनेक असंतुलन और सद्गुरुदेव का कहना है कि यह नंसार दैश्वरमय है। विसंगतियां परन्तु लगती हैं और मनुष्य बेचैन हो जाता है। ईश्वर ब्रह्म है और वही सत्य है - ब्रह्म सत्यं जगन्मित्या। इस बेचैनी का इलाज खोजने के लिए वह डॉक्टरों के पास ईश्वर को जानना अपने आपको जानना है, और अपने आपको जाता है, उसप्रतालों के चक्कर लगाता है, अनेक प्रकार की जान लेने पर मांसारिक अथ दूर थाग जाने हैं। तब यह जान

अंतर है। का का से वह म हु, जि कि ज स्वयं

मुझे उ हुई है। स अपने हम प यानधो अपनी

जाने चाहिए है। स थी। उ पर आ

समझा लगता जिसके अभिष सरोकर मूरम है। मै जब उ शरीर बरहाता

दिये है उनकी उनके और प

हो जाता है कि ये सांसारिक भय और व्याधि, दुःख और पीड़ा शरीर को ग्रसित करते हैं, वह इसलिए कि जरा, व्याधि, सुख, दुःख, जीवन, मरण ये सब शरीर के धर्म हैं। शरीर पार्थिव है, उसे इन सब दशाओं के बीच जाना ही पड़ता है, इन्हें भोगना ही पड़ता है। अतः जो अनिवार्य है उसे लेकर सुख दुःख मानना कोई अर्थ नहीं रखता — उसे तो सहना ही चाहिए, जैसे मनुष्य जाड़ा, गरमी और बरसात रहता है। परंतु अन्य जानवरों अथवा वनस्पतियों की अपेक्षा मनुष्य इन शारीरिक मौसमी परिवर्तनों के लिए पर्याप्त और अधिक अच्छी तैयारी करता है। जगत मिथ्या है और जो प्रत्यक्ष दिखाई पड़ रहा है, वह सत्य नहीं है, सूत है — यह सोचकर उससे बेखबर रहना, उसके लिए तैयारी न करना कदापि हमारा ध्येय नहीं हो सकता। जगत को मिथ्या कहने का उद्देश्य केवल इतना है कि भौतिक जगत की परिवर्तनशीलता हमारे आध्यात्मिक 'हम' को प्रभावित नहीं करती। सागर में उठती तरंगों की निरंतर परिवर्तनशीलता के बावजूद, समुद्र का एक दृश्य वह भी है, जो बराबर एकरस, एक समान अपरिवर्तनशील रहता है। बड़े से बड़े चक्रवात और तृफान के बाव भी सागर अपने नट को नहीं तोड़ता, अपने किनारों का सतिकामण नहीं करता। उसकी लवणात्मकता में कहीं कभी बेशी नहीं होती। सदगुरुदेव कहते हैं कि बड़ी से बड़ी उष्णल पुष्टि के बाव भी जैसे सागर का रूप एक समान रहता है, उसी प्रकार बड़े से बड़े सुख और दुःख के झोंकों को सहने के बाव भी, मनुष्य का अभ्यन्तर स्फटिक के समान स्वच्छ और दुःख बना रहता है।

यह सन्य है कि हमें से अधिकांश लोगों को अपनी इस शक्ति का जान नहीं रहता। हम सोचते हैं कि प्रकाश बाहर है, जब कि वह हमारे अंदर छिपा हुआ है। केवल हमें अपनी आँखों को अंदर की ओर मोड़ लेना है। परन्तु अज्ञानवश और भ्रमवश यह बात हमारी समझ से बाहर रहती है। यदि कोई हाथ पकड़कर हमारी दृष्टि परिवर्तित कर दे, तो यह बात हमें



आसनी से दृष्टिगत रूप से नहीं है। सदगुरुदेव कहने हाथ पकड़ कर दृष्टि धुमाने वाला और कोई नहीं, गुरु है। बड़े भ्रान्त से योग्य गुरु मिलता है। गुरु की यादि कृपा हो गयी, तो वर्षों साधना और अध्ययन के बाव भी जो बात समझ में नहीं आती, वह शीशे के समान स्पष्ट हो जाती है।

गुरुधाम दिल्ली एवं जोधपुर में और गुरुदेव जहां भी जाने हैं, प्रातःकाल का आरंभ ही गुरु पूजन, निखिल स्तवन, गुरु गीता पाठ से होता है। पुरुष और स्त्री साधक बीच में रसना छोड़कर परिवर्तन बैठते हैं और हृदय की धड़कन के समान, श्वास प्रश्वास के समान श्लोकों के पूर्व और उत्तर चरण उच्चारित करते हैं। बिजली के ठंडे और गरम प्रवाह ज्वों और पुरुष के कठमरी के गाध्यम से बायुपदल में तेरसे द्वारा एक साहित्यिक शक्तिमयी गुरुमूर्ति की संरचना करते हैं, जो

जलत के जल-जल में प्रवेश कर मनुष्य को चैतन्य कर देती और गुरु पर अविश्वास करने लगे हैं। हमारी आसथाएं टृटी हैं। यह जनन जलत है कि मैं 'मैं' हूँ, मैं क्षी बहा हूँ, अनन्त शक्ति जा रही है, हम भौतिकता के बहाव में बहे जा रहे हैं, अविश्वास का सोन और कर्म। जो मैं हूँ, वही भन्य है, जो मुझसे बाहर है और छन दूमरे जीवन के अंग बनते जा रहे हैं। संसार से यह नजा है, परिवर्तनशील। मैं ही वह अपरिवर्तनशील केन्द्र ठोकर खाकर, निराश होने के बाद ही हम आध्यात्मिकता की हूँ, जिस पर आधारित होकर यह नगत पूर्णता है। यहां तक ओर अश्वर होते हैं। सदगुरुदेव के जीवन और शिक्षाओं ने कि जलत के इस पूर्णते चक्र का केन्द्रियित्, उसकी नाभि मैं सहस्रों लाखों व्यक्तियों के मन में विश्वास उत्पन्न कर आज्ञा नहीं है। जैसा कि गुरुगीता में कहा गया है -

जुझोऽहमजरोऽहं च अनादिनिथनः स्वयम्

अदिकारशिवदानन्द अणीयालमहतो महान्

जब जब मैं सद्गुरुदेव के पाठ और भजन में बैठा हूँ, परंतु जब भजन, कीर्तन या पाठ होता है तो लगता है, अनेक नुस्खे अपने भीतर इस अग्रल्व, अनग्रल्व और अमरल्व की अनुभूति महार्दीपों की शक्ति एकत्र होकर एक रवर में बोल रही है, वह हड्ह है। उस समय मैं हिमालय को भी कंधों पर उठ सकती थी देववाणी में। और यह समिलित उच्चारण इतना शुद्ध है। सद्गुरुवेव मुझे उस समय वराह अवतार में पृथ्वी को इतना साफ सुधरा, इतना सम्मोहक कि जिसे हम भारतवासी अपने एक दात पर ऊपर उठाये प्रतीत होते हैं। और तब मुझ भून चुके हैं। शायद विश्व के इन काले, गोरे, भूरे विविध वर्णों इस पुराण कथा के वास्तविक अर्थ हवांगम हो जाते हैं कि के लोगों के आस्थाभाव को देखकर हमहरी प्रशुम व्रद्ध और बनधोर वृष्टि से बचाने के लिए श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत विश्वास पुनः जागरित हो सके।

अपनी छोटी उंगली पर उठा लिया था। रामायण, महाभारत, गीता, कुछ उपनिषद, आधिक सबसे पहली बात है कि गुरु की खोज। गुरु मिल रूप से वेद, भगवत्, अन्य अनेक धार्मिक ग्रंथ, कुछ संतों की जाने पर शिष्य को उस पर आस्था और विश्वास होना जीवनियाँ आदि पढ़ चुकने के बाद भी मैं अपने को खोया चाहिये। सर्वेह होने पर शिष्य गुरु की परीक्षा भी ले सकता अशांत और अनुम पाता आया था। किन्तु सद्गुरुदेव के सम्पर्क है। स्वप्नी विवेकानन्द ने अपने गुरु की सम्मत परीक्षा ली मैं जाने के बाद से मैं देवता हूँ कि मुझ में, शहर में कहीं सूखा वी। और फिर गुरु कृपा की प्रतीक्षा में उनके बताये हुए रास्ते परिवर्तन होता चला जा रहा है। बेकार के आध्यात्मिक तरफ पर आस्था पर्वक चलने रहना चाहिये। विनकों में उलझा हड्डा मन अब मानों अंतर्मुख होकर लक्ष्य

संक्षेप में सदगुरुदेव से मैंने यहीं सीखा है, और मैं की ओर खिंचा जा रहा है। हवय में हीले हीले साक्षीभाव समझती हूँ कि यह बहुत है। सदगुरुदेव के पास बैठे कभी मुझे उत्पन्न होने लगा है। मन का असंतोष मिटा जा रहा है। यंशय लगता है, मैं एक सीमाहीन कामन बन के साक्षिध्य में हूँ, भिरे जा रहे हैं। संसार और संसार के लोगों को बेखबर का मेश जिसकी रेशमी सुगंध और गुलाबी स्पर्श मुझे अंदर ही अंदर दृष्टिकोण बदलता जा रहा है। भेरी मनोवृत्तियों में बहा अतर अभिभूत कर रहे हैं। कभी लगता है, मैं स्फटिक स्वच्छ आ गया है। जब मुझे कोई व्यक्ति बहुत बुरा नहीं लगता, न सरोबर के चिकने सोपानों पर बैठी हूँ और बायु में उड़ते उसके किसी की कोई बात बहुत बुरी लगती है, न कोई दुर्घटना बहुत सूक्ष्म जल सीकर मेरी आत्मा के अवसाद को शीतल कर रहे दुर्ख वेती हैं। कभी मैं निष्क्रामन सहन ही उतरी जा रही हूँ हैं। मैं आत्म विभोर हूँ, आत्मा से 'मरी हुई' कि आत्मविस्मृति। और मैं कुछ अलिम सा हुआ जा रहा हूँ। होई है सोई जो राम जब शरीर का पोर पोर आत्मा बन जाये, तो आत्मा और रचि रास्था। फिर व्यर्थ की हाय हाय और धिना क्यों? मनोवृत्तियों शरीर की भिन्नता दृट जाती है, और उस समय मनुष्य का का यह परिवर्तन मुझे तो विश्वस्त रूप से सदगुरुदेव का चरमत्कार ही लगता है।

सद्गुरुदेव ने अपनी असीम कृपा से ये अनुभव मुझे किन्तु सद्गुरुदेव का सबसे बड़ा चमत्कार तो यह है दिये हैं, मेरे भीतर छिपी वह आख खोली है – इसके लिए मैं कि वे आपके अंतःकरण पर जमी हुई अज्ञान की धूल आइ उनकी द्विर आपारी हूँ। मेरी आकृष्णा है कि ऐसी ही पूर्णता पौँछकर आपको आपका आपना पता लिकाना बता देते हैं। उनके सहस्रों देशों विदेशी साधकों को प्राप्त हो। फिर आपकी अपनी साधना पर निर्भर है कि आप अपने तक

अन्न में एक बात और कहनी है। विज्ञान की सिद्धियों पहुँचकर अपना वास्तविक रूप देख ले। आपकी साधना में और पश्चिम की नकली मानसिकता के कारण हम आत्मा ग्रस्तगत सदा साथ देंगी।

की नयी किरण उगायी है। दूनिया भर के देशों से शिष्य उनके

पाप्म आध्यात्मिक शांति की खोन में जाते हैं और उसे पते हैं। सदगुरुदेव की सभाओं में चाहे हजारों आदमी बैठे हैं, परंतु जब प्रश्न, कीर्तन या पाठ होता है तो लगता है, अनेक महादीपों की शक्ति एकत्र होकर एक स्वर में बोल रही है, वह भी देववाणी में। और यह सम्मिलित उच्चारण इतना शुद्ध, इतना साफ सुधर, इतना सम्पोषक कि जिसे हम भारतवासी भूल चुके हैं। शायद विश्व के इन काले, गोरे, धूरे विविध वर्णों के लोगों के आस्थाभाव को देखकर हमारी प्रसुष अक्षर और विश्वास पुनः जागरित हो सकें।

रामायण, महाभारत, गीता, कछु उपनिषद, आंध्रिक

रूप से वेद, भागवत, अन्य अनेक धार्मिक ग्रंथ, कुछ संतों की जीवनियाँ आदि पढ़ चुकने के बाद भी मैं अपने तो छपित अशांत और अनुभ पाता आया था। किन्तु सदगुरदेव के सम्पर्क में आने के बाद से मैं देखता हूँ कि मुझ में, जहारे में कहीं सूक्ष्म परिवर्तन होता चला जा रहा है। बेकार के आध्यात्मिक तक विनकों में उलझा हुआ मन अब मानों अंतर्मुख होकर लकड़

की ओर खिंचा जा रहा है। हृदय में हीले हीले साक्षीभाव उत्पन्न होने लगा है। मन का असंतोष मिटा जा रहा है। संशय गिरे जा रहे हैं। समार और संसार के लोगों को देखने का मेरा दृष्टिकोण बदलता जा रहा है। मेरी मनोवृत्तियों में बड़ा अंतर आ गया है। अब मुझे कोई व्यक्ति बहुत बुरा नहीं लगता, न किसी की कोई बात बहुत बुरी लगती है, न कोई दुर्घटना बहुत दुःख देती है। कर्मों में निष्क्रामता सहज ही उतरी जा रही है और मैं कुछ अलिङ्ग सा हुआ जा रहा हूँ। होइ है सोइ जो राम रचि राखा। पिर व्यर्थ की हाय हाय और चिंता क्यों? मनोवृत्तियों का यह परिवर्तन मुझे तो विश्वस्त रूप से सद्गुरुदेव का चमत्कार ही लगता है।

किन्तु सद्गुर्लदेव का सबसे बड़ा चमत्कार तो यह है

आपके अंत करण पर जमी हुई ज्ञान की धूल आढ़ र आपको आपका अपना पता छिकाना बता देते हैं। आपकी अपनी साधना पर निर्भर है कि आप अपने तक

न अपना वास्तविक रूप देख ले। आपकी साधना में
मा सदा साथ देगी।

गुरुदेव श्रीप

श्रीलक्ष्मण महादेव हौ

हम सब गुरु को जानते हैं लेकिन उन्हें पूरी तरह समझ नहीं पाते हैं गुरु तो एक तत्पुरुष महादेव हैं जो तत्वदर्शी हैं और शिष्य को मंत्र और तंत्र के माध्यम से स्वतंत्र करते हैं वेदों के श्लोकों से युक्त यह आवानात्मक पत्र एक साधक गुरु की गतिमा को प्रकट करता हुआ उनके श्री वरणों में प्रणियात हैं -

वेदों ने जिसे तत्पुरुष कहा है, वे हैं हमारे प्यारे अगोचर तत्पुरुष के ज्ञान को प्रस्तोतर स्वप्न वाक्यों में तंत्र के सदगुरुदेव जी परमहंस ! उस तत्पुरुष के ज्ञान के लिए श्री स्वप्न में, अवतरित करते हैं। वहीं तंत्र है और सिद्ध पुरुष उसी मद्भगवतभीता कहती है -

को 'स्वतंत्र' कहते हैं।

तद्विद्वि प्रणिपातेऽपि प्रश्नेत ऐवथा।

उपदेशद्वित ते ब्राह्म इडित तत्त्वदर्शितः॥

अर्थात् इस तत्पुरुष को अन्यन्त नमनापूर्वक प्रणिपात (सर्वस्वार्पण), से, विवेकयुक्त प्रधनों से एवं अनन्य भाव से अहेतु की सेवा से जानना चाहिये। नवदर्शी सिद्धज्ञानी पुरुष तुम्हें तत्त्व का उपदेश करेंगे। इस प्रकार जीवा केवल तत्वदर्शी सदगुरु से ही आत्मज्ञान आत्मदर्शन प्राप्त करने की शक्यता का संकेत करती है। आत्मदर्शन या आत्मग्रामि, प्राप्त की ही प्राप्ति और दर्शन का ही दर्शन है।

अभिनवगुप्तादाचार्य तंत्रालोक में लिखते हैं -

गुरु शिष्यपदे देवि स्वयं देवः सदाशिवः।

प्रश्नोत्तरपदैवक्यैस्तंत्रं समवतारयत्॥

अर्थात् हे देवि! गुरु और शिष्य में सर्वत्र स्वयं मिल रूप से निवास करने वाले सदाशिव ही प्रश्नकर्ता शिष्य के रूप में और उत्तर देने वाले गुरु के रूप में, मन और वाणी से वे सभी शिष्यस्तेऽहं - मैं आपका शिष्य हूं कह सकते हैं।

चतुःषष्ठ्या तंत्रैः सकलमभिसंवाद्य भुवरं

विद्यतत्त्वत्त्वस्त्विद्वि प्रस्तवपरतंत्रैः पशुपतिः।

पुनस्त्वप्रिवृद्धादस्त्रिवलपुरुषार्थ्यकघटना

स्वतंत्रं ते तंत्रं क्षितिवलमवातीतदिदम्॥

सौन्दर्य लहरी के इस श्लोक में कहा गया है कि ६४

तंत्रों की रचना के बावजूद, उन उन सिद्धियों को पाकर भी पर तंत्र

जैसे सदाशिव ने, पार्वती की विनती एवं आग्रह से प्रेरित

होकर, समस्त पुरुषार्थों के सारभूत इस स्वतंत्र तंत्र को पृथ्वी

पर अवतारित किया। उसी स्वतंत्र तंत्र को अग्निवगुप्ताचार्य

ने गुरु शिष्य के दर्शन र्घर्षन स्मरण या संवाद के रूप में और

श्रीमद्भगवत गीता में तद्विद्वि प्रणिपातेन लोक द्वारा र्घष्ट

रूप से निर्दिष्ट किया है।

गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी परमहंस स्वामी

निरिदुलेश्वरानन्द जी के देश और विदेशों में आसंग्य शिष्य हैं।

मैं हूं आपका शिष्य हूं - मैं आपका शिष्य हूं कह सकते हैं।

उन्नेक उपर्युक्ते वैदेतु की
कहा से इस किसी
विज्ञानी वादक की
वज्ञन, अवधारण, समरण
वादका इत्यनोनती से
तत्पुरुष का चालानकार
तत्त्वान करने हैं और
उस उभी तत्पुरुषाव
विज्ञे - हम सब उस
दृष्टि को जानते हैं - ऐसा
कह सकते हैं।

वेद के ऋषि ने
जिस गीरव के साथ
तत्पुरुषाव विज्ञहे कहा है,
उसी तत्पुरुष को ब्रेदमाता
गायत्री

तत्सवित्तवरिण्य भर्गो
देवस्थ थीमहि। धियो
यो न् प्रचोदयात् ॥
अपने शब्द वेह में आदि
पद 'तत्' कहकर उसी
को ज्योतिर्मय स्वरूप में
भ्यास करने का संकेत
करती है।

उपनिषदों ने भी
कहा है - तत्सृष्ट वा
तदेवानुप्राविशत्। अथात्,
उस पुरुष ने इस दृश्य
ब्रह्माण्ड परं पिण्ड की
रचना की और वह इसी
में यानी ब्रह्माण्ड सौर पिण्ड

में स्वयं प्रविष्ट हो गया। इसी को गुह्याद्वित गङ्गरेत्वं पुराणम् -
हृदय - गुहा में स्थित और पुराण पुरुष कहते हैं।

ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में कहा गया है -

पुरुष एवेद सर्व धद् भूतं यच्च भाव्यत्।

उताऽमृतत्वस्यैशानो यद्येताऽतिरिहति॥

अथात्, वही वह पुरुष है, जो पूर्वकाल में या, वर्तमान
में है और भविष्य में भी रहेगा। वह पुरुष अमृतत्व का स्वामी
होकर भी 'अतेन' भोग्य पदार्थ - इतम् गङ्गराच्य सूप बनकर

'अतिरिहति' प्रकट होता है।

इष्टा और दृश्य, पौत्रा और भोग्य एक ही पुरुष के
अवयव हैं, और प्रत्येक मानव साकार विश्वात्मा परम पुरुष है
ऐसा अप्य निर्देश इस मंत्र में है। पुरुष सूत्र के ऋषि ने एक
अवधूत छटा से किसी अग्राधारण अमाधिभाषा में आन्मदर्शन
का उल्लेख किया है। वेदों की समाधिभाषा केवल गुरुज्ञान
ही है।

ऋचो अक्षरे पदमे व्योमन् यस्तिर्द् देवा अशि
विश्वे तिषेदुः।



सहस्रदल वेद किमुचा करिष्यति ? . . .

अर्थात्, अक्षर परमाकाश में क्लृप्तं प्रतिष्ठित है, जिसमें है।

देवता लोग बैठे हुए हैं। जो मनुष्य इस परम व्योम को नहीं जानता, नहीं देखता, वह क्लृप्तों का पाठ अथवा उच्चारण करके क्या करेगा? ऐसा प्रश्न करता है उपनिषद का ऋषि। यानी जिसमें अपने अंतराकाश सहस्रार में प्रवेश नहीं किया है या उसका दर्शन नहीं किया है, उसके वेद मंत्रों का पाठ करने का क्या प्रयोजन?

सदगुरुदेव ने हम सभी को परमाकाश का स्पर्श दिया है। बस्तुतः अर्जुन (अर्जुन भाव वाले मनुष्य) को ही कृष्ण—सदगुरुदेव का स्पर्श हो सकता है। कृष्ण और अर्जुन का बाह्य सम्बन्ध तो सामान्य था ही। गुरु कृष्ण सभी के सारथी है ही, किन्तु जब अर्जुन कर्मभूमि (युद्ध भूमि) में हताश होकर कार्यों को सिद्ध करता है, उस परम—महस (परम शिष्यस्तेऽहम— मैं आपका शिष्य हू— कहता है, तभी कृष्ण—

गुरु उसे तत्त्वोपदेश देकर कृतार्थ करते हैं।

हम सभी चिन्तित कर सदगुरुदेव से शिष्यस्तेऽहम कहने रहते हैं, किन्तु कोई वीर अर्जुन ही शिष्यस्तेऽहम के बाद, शाश्वत मां त्वां प्रपत्नम— गुडो अनुशासित कीजिये, मैं आपकी शरण में आया हू— कहने का साहस कर सकता है।

सदगुरुदेव साक्षात् कृष्ण है और हम सब अपने को अर्जुन मानते हैं, और उनकी कृपा से जीव के साथ हम तत्पुरुषाय विघ्नहे अर्थात् उस पुरुष को जानते हैं, जिसका उल्लेख सदगुरुदेव बार बार आपको ध्याओ, आपको सम्मान करो, आपका परमात्मा आप में ही आप होकर रहता है, इस महादेवाय से करने हैं। किन्तु तत्पुरुषाय विघ्नहे के बाद का दूसरा चरण है महादेवाय धीमहि— हम महादेव का ध्यान करते हैं। यह महादेव किसी सामान्य मंदिर के कोने में स्थापित देव नहीं, जिन्तु सर्वव्यापक चिन्मय-नित्यनिर्व-ज्योतिर्मय महादेव है।

गुरु गीता में श्री गुरुदेव को सर्वधी साक्षिभूतम्— सभी मानवों की बुद्धि के नाशी कहा है, और महादेवाय धीमहि में भी भी (बुद्धि) से ही ध्यान करते हैं, ऐसा निर्देश है। मानव की बुद्धि व्यभिचारिणी स्त्री जीर्णी है। जैसे व्यभिचारिणी स्त्री अपने पुरुष को छोड़कर अन्य अनेक पुरुषों का चिन्तन करती रहती है वैसे ही हमारी बुद्धि भी अपने स्वरूप भूत, गुरु कृपा प्राप्त तत्पुरुष को छोड़कर अन्य विषयों का चिन्तन करती रहती है।

जब साधक शिष्यस्तेऽहम के बाद शाश्वत माम कहता है, तभी श्री गुरुदेव महादेवाय धीमहि, अर्थात् सर्वव्यापक,

पुराणपुरुष, नित्यनिर्व एवं पुरुष का ध्यान हमसे करते

अब तीसरा चरण है, तत्रो रुद्रः प्रचोदयात् अर्थात् वह रुद्र (सत) दुर्ख की (द्वावयति) प्रवाहित या वाष्पीभूत करता हुआ हम सबको प्रेरणा देते, यानी वह रुद्र हमारे सभी दुर्खों को यानी की तरह प्रवाहित और वाष्पीभूत करता हुआ अपने आप या उसका दर्शन नहीं किया है, उसके वेद मंत्रों का पाठ करने में सभी व्यवहारों को करता हुआ प्रेरणा देता रहे।

सर्वतः सर्वदा यस्य लक्षितः सर्वदिहिनाम्।

सर्वार्थं साधकस्तद्वै परस्तै महसे नमः॥

जो सभी और से, प्रतिक्षण, सभी देहधारियों के साथ रहता है, यानी जिसका कभी भी किसी से भी एक क्षण के लिए भी वियोग नहीं होता, और जो प्रत्येक देहधारी के सभी है ही, किन्तु जब अर्जुन कर्मभूमि (युद्ध भूमि) में हताश होकर कार्यों को सिद्ध करता है, उस परम—महस (परम शिष्यस्तेऽहम— मैं आपका शिष्य हू— कहता है, तभी कृष्ण— ज्योतिःस्वस्य) को नमस्कार है।

पूर्य गुरुदेव ने जिसको भी हम परमाङ्गस का स्पर्श दिया है, वह थन्य है, क्योंकि उपनिषद कहती है—

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो

न मेष्यद्या न वहुना श्रुतेन।

यमेवेष वृणुते तेज लभ्यः

तस्याऽव्यमात्मा विवृणुते तनुं स्वाम्।

अर्थात् यह तत्पुरुष— आत्मा प्रवचन से या तीव्र बुद्धि

शक्ति से अथवा बहुत शास्त्रों के ज्ञान से प्राप्त नहीं होता।

किन्तु जिस मनुष्य का यह तत्पुरुष वरण करता है, उसी को

यह आत्मसत्त्व प्राप्त होता है। उसी के सम्मुख यह आत्मा

अपना परम ज्योतिर्मय शरीर प्रकट कर देता है।

और अंत में—

तत्पुरुषाय विघ्नहे। महादेवाय धीमहि।

तत्रो रुद्रः प्रचोदयात्॥

उस पुरुष को हम जानते हैं, उसी महादेव का हम सर्वदा ध्यान करते हैं, जो प्रति क्षण हम सबको प्रेरणा देता रहता है।

हमारे सदगुरुदेव ही— तत्पुरुषाय विघ्नहे।

महादेवाय धीमहि। तत्रो रुद्रः प्रचोदयात् है और

हमने सदगुरुदेव के दर्शन किये हैं वे हम सबको प्रेरणा देकर जीवन के अंधकार को दूर कर परम ज्योति से संस्पर्शित करायें, यही कामना है इसी

आशीर्वाद की प्रार्थना सदगुरुदेव से है।

आगा है गुरु पूर्णिमा

महोत्सव में

11 12 13 जुलाई

टाटा नगर जमशेदपुर में

यह गुरु पूर्णिमा वर्ष में पड़ने वाला एक पर्व मत समझ लोजिए। यह गुरु पूर्णिमा तो वर्षों वर्षों ही नहीं युगों युगों में पड़ने वाला अवसर बनने जा रहा है।

जिनके सौभाग्य के शण आ गये होंगे वे ही दीड़ते हुये आकर गुरुदेव की बांटेंगे रामा सकेंगे।

पूज्य गुरुदेव स्पष्ट कहते हैं कि बहुत मार्ग बनाये जा सके हैं, किन्तु जो पण-पण पर अलग हो सकती है। हो सकता है आप नाचते हुये बांटे, जैसा नीवन धड़क रहा है उसे पहचानना कोई नहीं सिखा सका। कभी मीरा ने इस अमृत को और राजमहल छोड़ कर सङ्कोच यही कारण है वैगनस्य, विवाद, तनाव और परस्पर धृणा का। पर बांटने निकल पड़ी। हो सकता है आपके मन में कोई और जीवन की यह शैली केवल गुरुदेव ही अपने संस्कार से विभारी फूट उठे और आप कबीर की तरह इस समाज की पिंडा सकते हैं आपने यदि उस शिशु का आनन्द देखा हो जो कुरीतियों पर प्रहार कर बैठे। हो सकता है आपकी बाणी उसे किसी नयी वस्तु को देखने पर गिलता है या जिसी मां के अवसर हो जाये आप कुछ बोल ही न पाये केवल आपकी आनन्द को छलकते देखा हो, परखा हो जो उसे अपने अबोध आंखों से अश्रुपात ही होता रहे। हो सकता है आप अपनी इस शिशु को समझाने पर आता है, तो ठीक वही सम्बन्ध है गुरु पत्रिका का प्रचार प्रसार करके बाटे। या यह भी हो सकता है प्रियंक के मध्य। हम अपनी धौतिक, वासना में ढूबी आंखों से कि आप केवल गुमनमूम रह कर खोई खोई आंखों से इस विश्व मले ही इस आनन्द को रामझना गूल गये हों किन्तु इस को आपार कलणा से निहारते ही रह जायें। कई स्थितियाँ आनन्द की स्थिति से मुख्य नहीं मोइ सकते और मुख्य मोइ कर सभव है कि इन्हें प्रत्येक स्थान में आपके अन्दर से अमृत का पाया भी क्या उदासी और निराश। तुमि नहीं मिलो। यही प्रवाह दूसरे हृदय पर होगा ही क्योंकि यह अमृत पूज्य गुरुदेव नृपि आपके नीवन में आ सके, यही हमारी शुभकामना है। प्रवत है संभव है आप आपके इस बांटने को कोई ना समझे इसी के लिये निमंत्रण है। कल को आप जब इस अनुठ प्रेम को किन्तु आप जिस अलौकिक आनन्द के साक्षीभूत बनेंगे वह तो छककर पी लेंगे तो फिर आप भी नियंत्रण भेजेंगे दूसरों को। केवल युगों युगों में कुछ एक को ही मिल पाता है। कई मीरा, शुभकामा भेजेंगे सभी को। क्योंकि यह ऐसा ही अमृत है कि कई कबीर, कई सूरदान, कई तुलसी नहीं होते। प्रत्येक युग जिसने छक कर पी लिया वह बांटे बिना नहीं रह सकता। में कोई कोई बिरला ही होता है आप क्यों न उस बिरलों में से

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर छलकता है अमृत कलश। जिसले भी पिंडा मस्त हो गया। जब वह व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है तो विश्चय ही उनके अन्दर से अमृत का प्रवाह दूसरों के हृदय पर पड़ता है। आप जिस अलौकिक आनन्द के साक्षीभूत बनेंगे वह तो युगों युगों में किसी विह्ले को मिल पाता है।

क्योंकि यह अमृत की धारा प्रवाहित होती है सदगुरु के श्री चरणों से।

गुरु तो शाश्वत होते हैं।

गुरु एक ब्रह्माण्डों का शहिर का नाम है, जो शाश्वत शहिर है हर जल में माता पिता अलग हो सकते हैं माता पिता अलग लोग तो भाई बहन भी अलग हो सकते हैं, हर जीवन में इन अलग हो सकते हैं, कभी बगाल में जन्म ले सकते हो तो कभी-प्रदास में, यह बड़े चलते रह सकते हैं। लेकिन जिस जन्म में भी रहीं गुरु एक ही होंगे। किस जन्म में आप वहबाल सकोगे कि मेरे कोन वास्तविक गुरु हैं? गुरु का तात्पर्य ही यही है आपके जीवन का वह समुद्र जहाँ आप को पूर्ण रूप से पिछोना हो जाता है। एक बार विलीन हो जाने के बाद फिर समुद्र से नहीं बही निकलती है क्योंकि यहाँ आकर वह पूर्ण हो जाती है। समुद्र उसे अपने जैसा ही बना देता है। गुरु भी शिष्य को अपने जान साथ में उकाकर कर उपजे जैसा बना देते हैं। यह वह महाज दिया है जो कोई और समझ नहीं नहीं सकता।

एक ही।

जब इस समाज की एक इकाई कूमरी इकाई को बांटने ही लगेगी तो सबमध्य यह धरा छोटी पढ़ जायेगी प्रेम के विस्तार को। यही हमारा न्यून है। हमारी समस्या की पृथ्य गुरुदेव ने सिद्धाश्रम साधक परिवार नाम दिया है। परिवार शब्द का जोड़ना महत्वपूर्ण है क्योंकि हम सब देह गत रूप से नहीं अपितु आत्मगत रूप से भाई बहिन ही हैं। हमारा विश्व भी तो सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार सदृश्य मानने का ही रथ है। जीवन की उसी विराटता पर ले जाने की पाठशाला है अपनी यह संस्कार। हमारा आज का परस्पर प्रेम ही कला हमारी सीमावे विस्तारित कर हस देश के परे ले जायेगा। गुरु पूर्णिमा एक शास्त्रोत्तर पर्व तो है भी, गुरु जो देव है, उनकी बहना करने का, उनकी अभ्यर्थना करने का। किन्तु वे गुरु से भी उचिक हमारे पिता हैं और गुरु पूर्णिमा केवल एक पर्व हो नहीं। यह तो उनके पुत्रों पुत्रियों का उनके चरणों में बैठने का अवसर है। यह परिवार की बात है और यही हमारी पूर्णिमा मनाने का अवधि है। यही गुरुदेव का भी भैषज है। उन्हें व्यक्ति पूजा नहीं चाहिये। जो अलौकिक व्यक्तित्व होते हैं वे इस तरह की भावनाओं से बहुत ऊचे उठे होते हैं। उनका तो यह रखन है कि गुरुनव धारण करें। आनन्द का, प्रेम का विस्तार कर राके। यह गुरु पूर्णिमा केवल फूल भेट करने चरण सदर्शन

करने तक ही सीमित न रह जाये ऐसी तो कई गुरु पूर्णिमा हो चुकी। वास्तविक गुरु पूर्णिमा नो वह है कि आपको ही पूर्ण चन्द्र सदृश्य बनकर हम अधिग्रामे पाख को समाप्त कर उत्तियारा लाना है।

जिनका कद हिमालय में भी ऊंचा होता है, जिनके ऊंचर समुद्र में भी अधिक गहराई होता है, वे ही इस तरह की बात कह सकते हैं। आज के युग में जब गुरुपद एक प्रतिरपद्धर्म का विषय बन गया हो तब आप ही सोचिए। जो व्यक्तित्व इसने दूसरे खम से कहता हो कि मैं एक नहीं अमृक शक्तशाचार्य पैदा कर दूंगा उसमें कितना अधिक ओज कितना अधिक साहस और समाज के प्रति कितनी पहच है कि काशा किसी प्रकार से वह परिवेश बदले, नये बातावरण का सूचन हो। शिष्य के नाते आपका इतना दायित्व तो बनता ही है कि आप उपस्थित तो हो। गुरुदेव इसमें अधिक आपके ऊपर कोई भार या दायित्व आरोपित भी नहीं करते। वे केवल आपसे आपकी उपस्थिति की अपेक्षा करते हैं। जेष भव कुछ वे खुद ही बनाने वाले देवों का वायना करते हैं।

जो युगान्तरकारी व्यक्तित्व होते हैं वे समाज के दिशा देकर दिल्लीको में विलीन से हो जाते हैं। पीछे रह जाती है वेदना, पछतावा। अभी तो समय है। अभी आप अपने सम्पूर्ण जीवन में परिवर्तन बदल सकते हैं। यह ऐसे ही ध्यान है। जब वेड़ कूतों से लकड़ हो तभी उसके पीछे बैठकर सुगंधित हो जायेगा। कल सुबह तो फूल झट्ठ जायेंगे फिर यह बात नहीं रह जायेगी। माला तो बृक्ष पर लगे फूलों को चुन कर ही बन पाती है। जमीन पर यिरे पुष्पों की माला नहीं बनाई जाती, आप आज ही रम्यतिव्यों मधुर क्षणों के पुष्पों की लेकर गुरु सूरी बृक्ष से चुन चुन कर एक माला गूबना आरम्भ कर ही देंगिए।

गुरु पूर्णिमा न तो कोई अवतरण दिवस है न निर्वाण दिवस और न ही दीक्षा दिवस। गुरु पूर्णिमा तो एक ऐसा शाश्वत दिवस है जिस दिन वह अपने आराध्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञ धन्य-धन्य होते हुए उनके श्री चरणों में पहुंचता है। वर्ष भर में उसके जीवन में जो भी दुःख संताप आये हैं अथवा जो भी आळाव और प्रसन्नता के क्षण आये हैं उन सबको उनके श्री चरणों में प्रकट करने के लिए पहुंच जाता है और केवल एक ही निवेदन होता है 'जोविन्द त्वयियं वस्तु तुष्यं समर्पयामि' है मेरे आराध्य गुरुदेव, मैं जैसा ही हूँ और जो भी मुझे इस संसार में ग्राम हो रहा है वह आपकी कृपा से ही ग्राम हो रहा है, उसे आपको ही समर्पित कर रहा हूँ। तेत्रा तुष्यको अर्पण क्या लागे मेरा!



आदि देव
महादेव
नमो नमः

जानिये अमाङ्किये

शिव तत्त्व

विश्वेश्वर महादेव शिव स्वरूप है कल्याण स्वरूप होते से शंकर है मंगलप्रद होते से अमंगलों के विघ्नस्तक और प्रलयंकर है जो सत्यं ज्ञानं आनन्दं ब्रह्म का ही स्वरूप तत्त्व है।

शृष्टि के तीन आवाम हैं - उद्भव, विकास और भग्नासि। संकटों का निवारण करने वाले शिव हैं। समस्त देवताओं में ब्रह्म का सुनन का अधिपति माना गया है। वह सृष्टिकर्ता है। उत्ति शोद्र प्रसन्न होने वाले शब्दता शिवनी हैं, इन्हें उनका संसार में जो कुछ भी उनपर होता है, वह सब ब्रह्म का ही एक नाम 'आशुतोष' भी है। अन्य देवताओं के चरित्र में कहीं-कृतित्व है, जबकि पालन-पोषण की व्यवस्था विष्णु के अर्थात् न-कहीं वैभव-विलास, मना-लोभ और कृतनीति की झलक है। उन्मानि और पालन के पश्चात् तीसरा पक्ष रामापन का मिलती है, किन्तु शिव त्याग, साधनी, निष्पृहता एव सरलता होता है। सृष्टि के यमापन की व्यवस्था करने वाली तीसरी के याक्षान स्वरूप है।

ईश्वरीय शक्ति का नाम 'शिव' है। रोग, शोक, सौर मृत्यु तुल्य अन्य देवताओं ने जिये तु चल अथवा असुविधाजनक मानकर

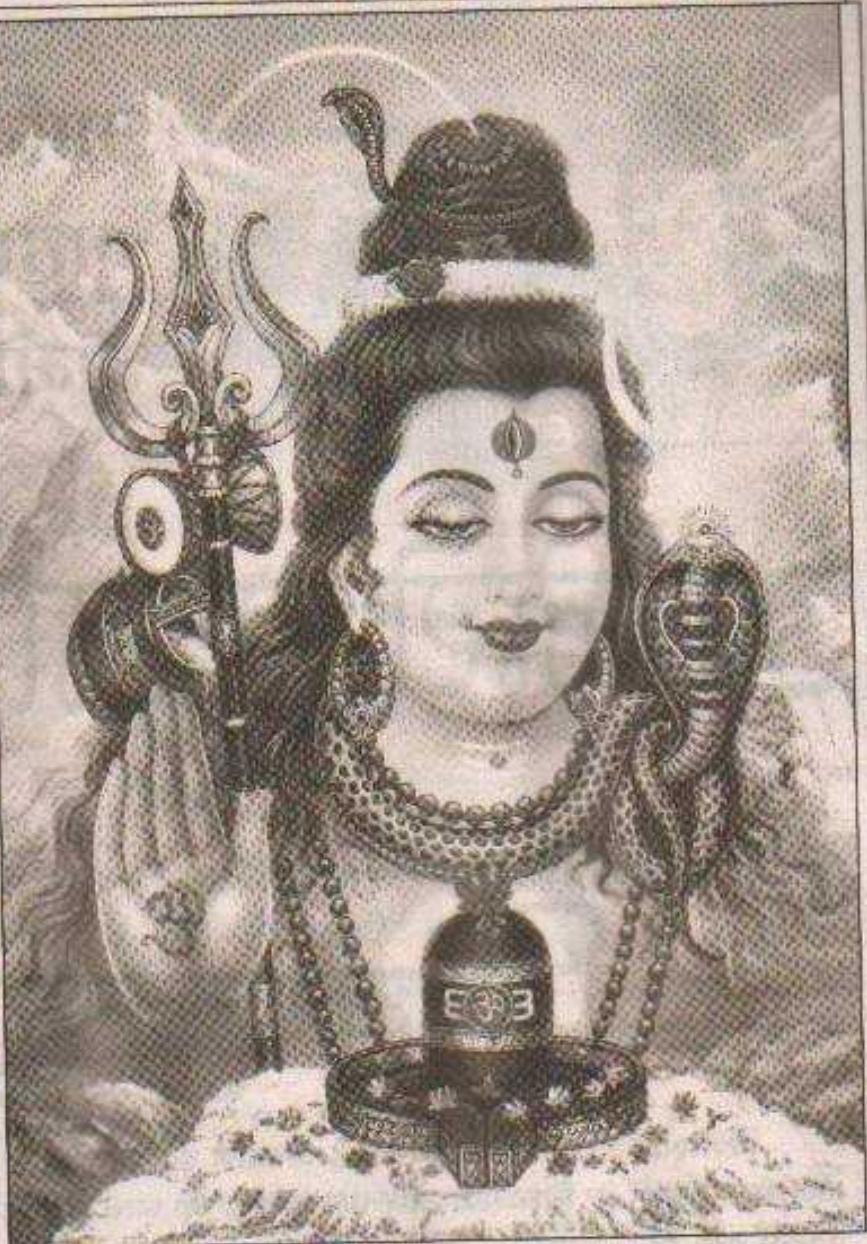
निवार्ता
महादेव
म
दरम
नै
शिव
स्मृति
उपर्युक्त
श
देव-व
प्रेत, न
प्राप्ति
व्यक्ति
होती
स
आशु
बलवान
येते हैं
सकत
के मा
महादेव
के स
रहे हैं
तथा
कार्य
नहीं
म
उरों
स्वामी
का उ
शिव
पदा।
वह ब
से, न
दिया
है। म

उरों
स्वामी
का उ
शिव
पदा।
वह ब
से, न
दिया
है। म

अस्त्रोक्तार कर शिवा, शिवजी ने उसी को परम प्रसन्न भाव से कृपना लिया। जहाँ दूसरे देवता रथ्य-पुरियों में, वैभव-विनास से युक्त भवनों एवं राजमहलों में निवास करते हैं, रक्तनाभर धारण करते हैं, उनके आभूषण, पात्र, गृह-सज्जा, वास-दाली सब सुसज्जित, वैभव-प्रवर्षक और भीतिक सुख-सुविधा के प्रकृत हैं, वहीं शिव को उन लातों में कोई रुचि नहीं। वह भोजनाथ है, जीघशङ्कानी है, अवधूत है। वह परम विराजी, महाजन योगी और हंड्या-देव, रोम-शोक से सर्वदा असन्मृत रहते हुए, आपने मर्तों का कल्पनाण करते हैं। उन जैसा महादानी भी रुपान् देवता कोई अन्व है? उदाहरण की सजीव प्रतिमा लिख त्रिकाल में, विभूति में, वैवाधि-देव, सूर्यि के अंतिम आग्राम (भवार) के नियामक और अरिवल विष्व-ब्रह्माण्ड के प्रशासक है।

‘शीता’ में श्रीकृष्ण ने कहा है - रुद्राणां शंकरश्चास्मि ब्रह्मात् पश्चात् परमात्मा ही लदी में शक्त है। शिव को ही शक्त कहते हैं। ‘शिव’ से तात्पर्य नित्य, विज्ञान-निरधन परमात्मा से है। शंकर का ‘ओं आनंद का बोधक’ है और ‘कर’ करने वाले के लिए प्रयुक्त होता है, ब्रह्मात् जो प्राणी को आनंद देने वाला है उत्थवा उसका आनंदस्वरूप है। वही शंकर ब्रह्मा शिव है।

शास्त्रों में शिव की महिमा अनंत बताई गई है, निर्गुण रथ्य में वही जगत के कर्ता, संहता एवं पालनकर्ता है। मर्तों पर



अनुग्रह करने के लिए वह समरण होते हैं। वैद, पुराण, महाभास्तु, रामायण तथा स्मृति आदि धर्मशास्त्रों में ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर की एकता का जगह-जगह प्रतिपादन किया गया है। इसना ही नहीं, शास्त्रों में उनको पातकी माना गया है जो उन तीनों में भेद बुद्धि रखते हैं।

शिवद्वेषी सम वास कहावा,
सरो वर मोहि सपनेहु ज भावा।

‘मानस’ की इन पंक्तियों में विष्णुजी ने शिवनिवक को

निष्ठाय करता है। वस्तुतः एक ही तत्त्व ब्रह्मा, विष्णु एवं नारद के समय में परिनिधित होता है।

स ब्रह्मा स विष्णुः स लद्दःसशिवस्सोऽक्षरःस्त्रः वद्यःसद्वराट् ।

'केवल्योपनिषद्' की इस पंक्ति से यह प्रमाणित है कि विश्व सच्चिदानन्दरूप परब्रह्म है। वह सूक्ष्म-से-सूक्ष्म और सूक्ष्म-से-स्थूल है। सारा जगत् उसी का रूप है। यह सृष्टि उसकी लीला है।

शंकर जन-जन के देवता हैं। उनकी भक्ति से ऋषि-मुनि, देव-दनुज, गंधर्व, यज्ञ, राक्षस, किंवर, मनुष्य, पितर, भूत-प्रेत, देवी, अप्सरा तथा सिद्ध आदि सभी को अभीष्ट फल की जापि हुई है। उनकी निष्काम पूजा से अंतःकरण शुद्ध होकर विष्णु की भक्ति को ब्रह्माज्ञान की अनुभूति ही नहीं, उसकी प्राप्ति भी होती है।

सकाम पूजा से भक्त को भोग-ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। शिव आशुतोष है। वह थोड़ी-सी साधना से ही प्रसन्न होकर मृत्युंजय वरदान देते हैं। योग निवारण तथा अकाल मृत्यु से मुक्ति दिला देते हैं। ऐसे भोजनाचा 'शिव' की महिमा का वर्णन कौन कर सकता है।

'अव्यय' के लद, 'यनुवेद' के शिव (या शंकर), 'अद्यविद्' के महादेव (या भव, शर्व), 'सामवेद' के लद, 'धार्मीकि' के महादेव, 'महाभारत' के महादेव और शंकर तथा 'शिवपुराण' के सदाशिव प्राचीनकाल से भक्तों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। भक्तों को अभीष्ट फल देना, उनके कष्ट दूर करना तथा उन्हें मुक्ति प्रदान करना भगवान शंकर के लिए सहज कार्य है। वह प्रसन्न होकर भक्त को सर्वस्व देने में भी संकोच नहीं करते।

भस्मासुर राक्षस की नपस्या ने ग्रहण देने पर शिवजी ने उसे यह वरदान दे दिया कि जिसके सिर पर तुम अपना हाथ रखोगे, वह भस्म हो जाएगा। कितनी उदारता तथा महानता का उदाहरण है, शिव भक्ति का! वह वरदान पाकर भस्मासुर शिव को ही भस्म करने के लिए दौड़ा तो उन्हें उससे छिपना पड़ा। असुर माँ जगदन्बा के संघ-लाक्षण्य पर आसना होकर वह इस कुमारी पर चला गा। अनः भगवान विष्णु की मूड़ाबूझ से, उसकी भलग करने की शक्ति ने, उसे ही भस्मीभूत कर दिया। इस कथा में भगवान महादेव की असीम करुणा झलकती है। भक्तों के लिए उनका सर्वस्व देय होता है।

भूमिल पर जितना शिव-पूजा का प्रचार है, उतना किसी

अन्य देवता की पूजा का नहीं है। नगर-नगर, ग्राम-ग्राम, दुर्ग-दग्गर में स्थापित शिव मंदिरों का यही रहस्य है। ब्रह्मा विष्णु-महेश-इन विदेशों में शिव की महिमा 'देवी भागवत' में चबसे अधिक बताई गई है -

स हि सर्वेश्वरो देवो विष्णोरपि च कारणम् ।

विश्व जब संकटग्रस्त हो जाता है, तो महादेव उसका निवारण करते हैं। सागर-मन्दिर के अवसर पर कालकृष्ण विष्व को देखकर ब्रह्मा, विष्णु, देव, असुर तथा ऋषि-मुनि आदि सभी भयभीत हो गए। समस्त जगत् विष्व की गर्भ से सत्तम हो उठा। उन्हें सब ने आशुतोष भगवान शिव की शरण ली तथा उनकी स्तुति की। प्रश्न देने पर उस विष्व को भूतमात्रन विश्वनाथ (महादेव) ने अपने कंठ में रख लिया, जिससे उनका कंठ भीला पड़ गया। फलतः वेद में 'नील-शीव' नाम से उनकी प्रसिद्धि हो गई।

समस्त देव एवं मानव-समाज के कष्ट निवारण की इससे बड़ी शिकाय और क्या हो सकती है? वह सब भलके कल्पाण में प्रवृत्त रहते हैं। वह अमंगल हास, सुख एवं मंगल का वर्धन करते हैं। इसीलिए उनका भगवानमय नाम 'शिव' लोक में कल्पाण का वाचक बन गया है। अतः 'श्वेताश्वरोपनिषद्' में जन्म से मृत्यु के पाय से मुक्ति पाने के लिए की गई प्रार्थना भाजवीय है -

अरपरात् इत्येवं कश्चिद् भीरुः प्रपद्यते ।

रुद्र वत्ते दक्षिण मुख्यं तेज याहि नित्यम् ॥

आर्थात् हे रुद्र! आप अनन्मा हैं। जन्म-मरण के चक्र से मुक्त करना आपका स्वभाव है। यह समझकर जन्म-मृत्यु के चरण से उत्तर हुआ साथक आपकी शरण लेता है। आपका जो कल्पाण मुख है, उसके द्वारा जन्म-मृत्यु के चरण से मेरी सर्वथा रक्षा करें।

रुद्र भगवान की महिमा का वर्णन 'रुद्रहक्षयोपनिषद्' में इस प्रकार किया गया है -

सर्वदेवात्मको रुद्रः सर्वे देवा शिवात्मकाः ।

सद्वात्मवत्तर्ते बीजं बीजं वोन्निर्विजार्दनः ॥

वो रुद्रः स स्वयं ब्रह्मा यो ब्रह्मा स हृताशनः ।

ब्रह्मा विष्णुमयो रुद्र अग्नीयोमात्मकं जगत् ॥

रुद्रः सूर्य उमा लाला तस्मै तस्मै नमो नमः ।

रुद्रो वहिरुमा स्वाहा तस्मै तस्मै नमो नमः ॥

रुद्रो यज्ञ उमा वेदिस्तस्मै तस्मै नमो नमः ॥

रुद्रो नर उमा नारी तस्मै तस्मै नमो नमः ।

श्रीरुद्र-रुद्र-रुद्रति यस्तं शूद्याद् विचक्षणः ॥
कीर्त्तनात्सर्वदेवस्य सर्वपापे, प्रमुच्यते ।
ये रुद्रं नाभिजानन्ति ते न जानन्ति दैवतम् ॥
सर्वदेवात्मकं रुद्रं नमस्कुर्वत्पृथक् पृथक् ।
एभिर्भवपूर्वैरेव नमस्यामीशपार्वतीम् ॥

इन मंत्रों में भगवान् शिव को ही मूल प्रकृति, पुरुषमय आदिदेव तथा साकार बहु बताया गया है। वेदविहित यज्ञपूरुष एवं भू महादेव हैं। वेद-स्मृति शिव-पार्वती का रूप है। यहाँ सर्वत्र उमाशक्ति का ही दर्शन करने को उपेक्षण है। ऐसे दुष्टों को सही समझ होनी जरूरी है, वहीं यह भी आवश्यक है कि को सब पापों से मुक्ति मिल जाती है। अतः भी भगवती, उस शिव के रहस्यमय निर्गुण स्वरूप को भी समझा जाए। जगदम्बा, पार्वती सहित भोलेनाथ का पूजन करने से भक्त को इसी रहस्य से पर्वा उठाने के लिए हम यहाँ विचार कर रहे हैं कि शिवतत्त्व क्या है?

शिव-महिमा के विषय में 'प्रवेताश्वतरोपनिषद्' कहती है

यदा तमस्त्र तिवा न रात्रिनितत्र चासन्तिव एव केवतः ।
तदक्षरं तत्त्ववितुर्विष्णवं प्रज्ञा च तस्मात् प्रसूता पुराणी ।
अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ से जब केवल अध्यकर ही था - न दिन था, न रात थी, न सत (कारण) था, न अनन् (कार्य) था, उस समय केवल निर्विकार शिव ही विद्मान थे। वही अहर है, वही सबके जनक परमेश्वर का प्रार्थनीय रूप है। तथा उन्हीं से शास्त्र विद्या का प्रवेतन हुआ है। इस युति में भगवान् शिव को आदितत्त्व के रूप में वर्णित कर 'शिवपुराण' में प्रतिधादित सदाशिव के स्वरूप का समर्थन किया गया है। कल्याणकारी शिव प्रलय एवं संहार के भी देवता माने जाते हैं। उनके प्रलयकारी स्वरूप का वर्णन भी शास्त्रों में मिलता है। उनका ताढ़व नृत्य इसी महाविनाशलीला का अंग है। सृष्टि और प्रलय - दो उवध्यभावी तत्त्व हैं। समस्त चराचर ब्रह्माण्ड को उपने में लीन कर वह नई सृष्टि का उपकरण करते हैं।

वेद, पुराण, न्यृतियों तथा धर्मशास्त्रों में आशुलोष भगवान् को जान, विजान एवं 'मुक्ति-मूलि' का देवता माना गया है। उनकी भक्ति से ज्यक्ति को सब कुछ प्राप्त हो जाता है। 'प्राणपुराण' के उन्नुसार भगवान् के परिवर्त का अर्थन करने से भक्त को सुदूरीभ वस्तु भी प्राप्त हो जाती है। असाध्य रोगों, कष्टदायी कलाओं तथा गय-बाधा को हटाने के लिए भगवान् शक्ति यहन साध्य है। थोड़े जल-पृथक् अपित्त करने से वह प्रसन्न हो जाते हैं।

भगवान् नणेश विष्णु विनाशक है। उनका श्याम-कार्य सिद्धिवायक है। मां जगदम्बा भगवती पार्वती, कुमार कात्तिक्य तथा नवीगण के भजन-पूजन से अमोघ सिद्धियों भक्तजनों को मिलती है। अतः 'शुक्लयजुवैद' की यह प्रार्थना से मनः शिवसंकल्पमस्तु सदैव श्याम रखने योग्य है। आज चारों ओर फैली अशांति को दूर करने के लिए शिवशरणगति में जाने का श्रेष्ठ संकल्प करना चाहिए।

शिव की आराधना के लिए जहाँ उनके विघ्न और प्रतीक मध्यमू गहादेव हैं। वेद-स्मृति शिव-पार्वती का रूप है। यहाँ ऐसे दुष्टों की सही समझ होनी जरूरी है, वहीं यह भी आवश्यक है कि को सब पापों से मुक्ति मिल जाती है। अतः भी भगवती, उस शिव के रहस्यमय निर्गुण स्वरूप को भी समझा जाए। इसी रहस्य से पर्वा उठाने के लिए हम यहाँ विचार कर रहे हैं कि शिवतत्त्व क्या है?

श्रेते प्राणिन्नो यत्र स शिवः

जीव अनतानंत-पाप-संतापो से संवस्तु होकर जहाँ परम विद्वाम हेतु शयन करे, उस सत्त्वाधिष्ठान, सर्वात्मय को ही शिव कहा गया है। इस संसार में कल्प्याण के लिए प्राणियों को उसी परम शिवतत्त्व की शरण में जाना चाहिए। शिवतत्त्व के दर्शन से परम शांति की प्राप्ति होती है। मनुष्य सभी प्रकार के अपने दुःख, कष्ट और रोग आदि को भूल जाता है। मृत्यु-भय का अहसास तक समाप्त हो जाता है।

श्री शिव के पूजन में कोई कटिनाई नहीं है। केवल विल्व-पत्र, पृथ्य, कल और जल आदि जो भी कुछ बन पाए, उन्हें सच्चे मन से समर्पित कर अपने सभी शुभाशुभ कर्मों को, उस भूतभावन सदाशिव शंकर भोलेनाथ के चरणों में लौप देने से प्रत्यक्ष शांति मिलती है। शिव के उपासक को समद्रष्टा होना चाहिए। ब्रह्मा, विष्णु, राम, कृष्ण, दुर्गा-सम्बक्ता आदर करते हुए, सब में परम शिवतत्त्व का दर्शन करना चाहिए। 'मंडपाला तंत्र' में उल्लेख है -

रुद्रस्य चित्तकादुद्रो विष्णुः स्वादिष्णुचित्तनात् ।
दुर्गायादिचित्तनादुदुर्गा भवत्येव न संशयः ॥
वथा शिवस्तथा दुर्गा या दुर्गा विष्णुरेव सः ।
अत्र यः कुरुते भेदं स वरो मूढ परिचित्येत् ।
भेदकुरुत्वरकं वाति रौरवं नात्र संशयः ॥
श्रुति भी कहती है कि संसार में जो कुछ भी देखा, सुना और जाना जाता है, सब परम शिवतत्त्व है।
सर्व देवात्मको रुद्रः सर्वे देवाः शिवात्मकाः ।
रुद्रस्य दक्षिणे पाश्वे रविर्भृहा पवरोऽप्नयः ॥
वामपाश्वे उमादेवी विष्णुः सोमोऽपि ते त्रयः ।

वा उमा चर स्वयं विष्णुर्यो विष्णुः स हि चंद्रमा॥
ते नमस्यन्ति जारिनदं ते नमस्यन्ति शकरम्।
तेऽर्चवन्ति हरि भवत्या तेऽर्चवन्ति वृषभरजम्॥

वह परम प्रियतन्त्र ही सर्वत्र समाया है। वही भजनीय तत्त्व है, वही माननीय शक्ति है, वही पूजनीय तत्त्व है, वही समग्र है, वही निरग्र है, वही विश्वरूप है, वही पूर्ण चैतन्यस्वरूप और वरम आन्मा है। भगवत्पाद भगवान आदि शंकराशार्थ जी महायाज कहते हैं -

आत्म त्वं जिरिजा मति: सहचरा प्राणाः शस्त्रीरं यहः।
पूजा ते विष्ण्योपमोज रचना निर्दा समाधि स्थितिः॥
सचारः पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो।
यद्यत्कर्म करतोमि तत्तदेखितं शम्भोः तवाराथनम्॥

भगवान शिव का पूजन करते करते जीव शिव ही जाता है। वह राज, ठेष, लोभ, मोह, मद मालसर्य, धर्म, गर्व, काम, मोक्ष, पुण्य, पाप, सुख, कुख, बंधु, भिन आदि की तेर-मेरे की भावना से ऊफर ऊठकर स्वयं इनका साक्षी भूत बन जाता है, इस दृश्यमान नगत का सब्दा बन जाता है। उस समय वह केवल सत-चित, आनंद रूप, स्वयं शिव रूप ही जाता है। किन्तु इस स्थिति के लिए बड़े श्रेय, अङ्गिं विश्वास एवं दृढ़ श्रद्धा की आवश्यकता है। बिना श्रद्धा के उच्च परम शिवतन्त्र की प्राप्ति असंभव है 'पीता' में कहा गया है -

श्रद्धावांस्त्रभतेज्ञानम् और अङ्गारचाश्रद्धाधात्रश्च
संश्वात्मा विनश्यति।

उर्ध्वांश्च अज, श्रद्धाविहीन और संशययुक्त व्यक्ति निष्ठा एवं दृढ़ विश्वास के अभाव में नाश को प्राप्त होता है। अतः शास्त्र वचनों में अखंड विश्वास रखते हुए जरा भी इधर-उधर विचलित हुए बिना अपना पिता, माता, बंधु, गुरु-सब कुछ उन्हीं को मानकर, उन्हीं की शरण में जाना चाहिए।

भगवती श्रुति कहती है, तस्मै तस्ये ज्ञाने ज्ञानः अर्थात् जो हृदय में परम शिवतन्त्र का सर्वत्र दर्शन करते हुए 'नमो नमः' कर सकते हैं, वे धन्य हैं। नमः का अर्थ है - न मम। जो लोग 'मेरा कुछ नहीं है, सब तुम्हारा है' कहते रहते हैं, वे ही उस परमतन्त्र शिव पद की प्राप्ति कर सकते हैं।

जो शिव जीवों के उपकाशथी तीनों लोकों की स्थिति पालन, लाश संहार और उत्पत्ति कर्त्य सम्पन्न करते हुए विष्णु, ऋषि और ब्रह्मरूप को धारण करते हैं तथा जिस शिव की शक्ति समस्त प्राणियों की वाणी और मन से अत्यन्त अग्रभ्य है, वह इत्यं प्रकाश शिव पश्चेष्वर सर्वदा अक्षय कल्याण प्रदाता करें।

ज्ञान के सृष्टिकाला

जगजननी भगवती शिवा और शिव ही समस्त सृष्टि के सबस्ता हैं। इनकी कृपा से ब्रह्मादि देव आविर्भूत होकर आदेशानुसार सृष्टि, स्थिति और संहाति में प्रवृत्त होते हैं। अखिल ब्रह्मांडनायिका भगवती एवं अखिल ब्रह्मांडनायक प्रगवान शिव एक रूप होते हुए भी लोकानुग्रह के लिए द्विधा रूप ग्रहण करते हैं और शिव-वैष्णवि के रूप में शब्दाशयमयी सृष्टि को भी विकसित करते हैं। यही ब्रह्मस्वरूप है, अतः निगम और आगम की सृष्टि भी इनके द्वारा ही हुई है।

ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव में कोई भेद नहीं है। लोक-बोध के लिए इनका पृथक-पृथक निरूपण किया गया है, किन्तु तत्त्वतः इनकी पृथकता नहीं है। वैसे यह भी स्पष्ट है कि इनके मूल में शक्ति ही अवितत्त है, जिसके द्वारा स्वेच्छा-विलास के लिए देवगृस्ति हुई है।

शास्त्रों के अनुभार ये आदि दम्पति लोक-कल्याण की उदार भावना से परस्पर संवाद रूप में, प्रश्नोत्तर रूप में कर्तव्य-कर्मों का विनाप्रस्तुत करते रहते हैं। इनकी अनंतरूपता के अनुसार ही अनंतशास्त्रों का उद्भव होता रहा है। यह आवश्यक भी है, क्योंकि यदि माता-पिता बालकों की शिक्षा-व्यवस्था न करें तो और कौन करेगा।

जब इत्यं ब्रह्मादि देव भी प्रादुर्भूत होने के पश्चात् अबोध की भाँति 'कोऽहं कृतःआयातः', का मेरे जननी को ते तातः इत्यादि नहीं जान पाए तो उन्हें इन्होंने ही कृपापूर्वक ज्ञान दिया था।

ते जन्माभाजः खलु जीवलोके थे वै स्वरा
व्यायांकित विश्वकरथः।

वाणी गुणान् स्तोति कथां शृणोति श्रोत्रद्रव्यं
ते भवमुत्तरन्ति॥

अर्थात् जो सदा भगवान शिव का ध्यान करते हैं, जिनकी वाणी शिव के गुणों की न्युति करती है और जिसके दोनों कान उनकी कथा सुनते हैं, इस जीव-जगत् में उन्होंका जन्म लेना सफल है। वे निश्चय ही संसार-सागर से पार हो जाते हैं।

गुरु पंच रत्ने स्तोक्रम

वं विज्ञातुं भृगु पितरमुपग्रहः पंचवारं वथावज्ञानादेवमृतास्तःः सततमनुपमं चिद्रिकेकादि
लब्ध्वा। तस्मै तुभ्यं नमः श्री हरिहरजुरवे सच्चिदानन्दमुक्तानंताद्वैतप्रतीते न कुरु कितवतां
पाहि मां दीनवंधो ॥१॥

निस परम तत्त्व को जानने के लिए भृगु क्रष्ण ने अपने पिता ब्रह्मा के पास पांच बार गये फिर उस वथार्थ उम्रुत तत्त्व को
विवेक वैराग्य जायि से युक्त होकर प्राप्त किया। ऐसे उस विष्णु और शिव स्वरूप सच्चिदानन्दमय अनन्तानन्त, उस तत्त्व
ज्ञान के प्राप्त होने साधक सासारिक बाधाओं से मुक्त हो जाता है ऐसा ज्ञान देवता है दिन बनधु गुरुदेव आप मेरी रक्षा करें।

यस्माद्ब्रह्मश्यस्य जन्मस्थितिविलक्षणमिते तैत्तिरीया: पठंति स्वाविद्यामात्र योगात्सुखशयनतत्त्वे
मुख्यतः स्वप्नवच्च तस्मै तुभ्यं नमः श्री हरिहरजुरवे सच्चिदानन्दमुक्तानंता द्वैतप्रतीते न कुरु
कितवतां पाहि मां दीनवंधो ॥२॥

जिस परम तत्त्व के आधार पर तैत्तिरीय क्रष्ण इस संसार के जन्म फलन तथा विलय की कल्पना करते हैं और उस
वथार्थ तत्त्व को जानने के बाद यह सब कुछ स्पन्दनवत् प्रतीत होता है। ऐसा ज्ञान देकर दीनबन्धु गुरुदेव मेरी सतत रक्षा करें।

यो वेदांतेकलभ्यं श्रुतिषु नियमितस्तैत्तिरीदेवेऽच काण्डैरन्यैरप्यानिषेकादुदयपरिमितं
चारुसंस्कारभाजाम्। तस्मै तुभ्यं नमः श्री हरिहरजुरवे सच्चिदानन्दमुक्तानंताद्वैतप्रतीते न
कुरु कितवतां पाहि मां दीनवंधो ॥३॥

जो परम तत्त्व वेदान्त वाक्यों से ही बोटों, शास्त्रों में वर्णित है तैत्तिरीय काण्ड तथा अन्य ऋषिगण निसके उवन और अस्त
की कल्पना करते हैं वह हरि हर स्वरूप सच्चिदानन्द स्वरूप गुरुदेव भावा से दूर करके रक्षा करें।

यस्मिन्नै वावस्थाः सकलक्रियम् वाङ्मौलवः सुषषुसि प्रोत्तं
तज्जामरतद्विज्ञिजमहिमयत्थांतत्कार्यलये। तस्मै तुभ्यं नमः श्री हरिहरजुरवे
सच्चिदानन्दमुक्तानंता द्वैतप्रतीते न कुरु कितवतां पाहि मां दीनवंधो ॥४॥

जिस परम तत्त्व में ही सारे शास्त्र ज्ञान संविहित है और सोये हुए पुरुष को जैसे स्वना में सब कुछ सत्य प्रतीत होता
है उसी प्रकार यह कार्यजनित संसार अज्ञान अवस्था में सत्य प्रतीत होता है पूज्य गुरुदेव के हरि हर स्वरूप को नमन करता
है वह मेरी रक्षा करें।

चित्वात्संकल्पपूर्वं सूजति जज्जिवं योजिवन्मायव्या नः स्वात्मन्येवाद्वितीये परमसुखदृशि
स्वप्नवद् भूमित्वं लित्ये ॥तस्मै तुभ्यं नमः श्री हरिहरजुरवे सच्चिदानन्दमुक्तानंता द्वैतप्रतीते न
कुरु कितवतां पाहि मां दीनवंधो ॥५॥

चैतन्य रूप होने के कारण गो गुरु योगियों की तरफ अपनी माया से इस संसार की कल्पना करते हैं उस अद्वितीय ज्ञान
प्राप्ति के बाद काल्पनिक इस संसार का मुझे ज्ञान करावे। ऐसे हरिहर स्वरूप गुरु को मैं बार बार नमन करता हूं वे मेरी
रक्षा करें। इस पंच रत्न स्तोत का साधक गुरु चित्र के सम्मानी का दीपक जलाकर नित्य १ बार पाठ करें।

शिष्य धर्म

- शताव्युदेव दोक्षा स्वरूपं भवता किञ्चित् वैश्वस नदेहं
जुरोवत्तं पूर्णं मर्त्यं तत्त्वं अद्वा सत्यं ज्ञानं बदोपितुल्यं
गोविलंपलात्म्यं का यत् भ्रोक बताता है कि शिष्य आपी सफलता और प्रभाव कर सकता है
जब उम्में पूर्ण श्रद्धा नों पूर्ण समर्पण हो।
- जो अपने आपको गुरु में पूर्ण रूप से विभासित करते गया अस्तित्व रखे ही जहाँ और जिरंत्य
गुरु की सेवा में रहे वह ही शिष्य हो सकता है। और ऐसा होने पर ही सफलता उसे प्राप्त हो
सकती है।
- शिष्य के जीवन में गुरु के जीते रैक्टि से उत्तर के लिए इच्छाज बहों होता है, तो अब्दा शिष्य से समाज
में गुरु की में दृष्टिकोण 100% फूटता है तो उसकी सफलता में कोई कार्रवाची जहाँ नहीं होती है।
व. गुरु स. शिष्य श्रोतुत. वा शिव. ल. शुक्र. एम्बुन.
तस्या भद्रेन भावेन ल यस्यि भृषका जनिस।
- शिष्य लों चाहिए कि जुल्ल की छिप ही रामड़ी, तथा उसी भावता से उल्लक्ष वित्तक पूजन करें।
- प्रा. व्याख्या शिष्य नहीं बता सकता कि भृषक गुरु के प्रभु कर सकता है शिष्य जीव जीव में भव
करता है। या जीव के भृषक के लिए अद्वानों को उत्तम विषय जीव सत्ता जीव लेता।
- जहाँ समर्पण नक्ष जया बहाँ दीक्षा और साधनाओं का भी कोई प्रभाव रहेगा ही नहीं।
इसीलिए यह शिष्य का परम कर्तव्य है कि वह गुरु में पूर्ण समर्पण सदैव बनाए रखें।
- जहाँ शुक्र के ढाके में कठीन लियम बनाए भए हैं कि वह अठवय ही अपना ज्ञान जिष्य को
पूरी तरह से ही बहु शिष्य के लिए भी लियम बनाए बाट हैं कि वह पूर्ण श्रद्धा और बाठना,
कामर्पण भौति व्येष्ठिता के बाद लिहंतर, जीवन पर्याप्त शुक्र कार्य में भृत्यजन बहे।
- गुरु कार्य में जीवन भर लहान रहने पर ही शिष्य जो पूर्ण अध्यात्मिक सफलता प्राप्त
हो पहनी है।
- उन्हीं अन्न शिष्य को सफलता ने न्यूनता आई है तो वह तब्दी वाहिए। कि ज्येष्ठ उत्तम गुरु के प्रति श्रद्धा
में न्यूनता आई है। समर्पण और श्रद्धा ही शिष्य के लिए श्रेष्ठतम वरदान है।

हाप
लेव
भी
उम

ज्ञा
च
सा
द्ये
क्षु
ता
ज्ञ

व
न
म
न
व
न

ज
ब
न

गुरुवाणी

* जहां शिष्य के लिए जरूरी है कि वह समर्पित और गुरु सेवा में संलग्न रहे वहीं गुरु का भी यह कर्तव्य है कि वह शिष्य को पूर्णता के साथ अपनाए, उसकी ज्ञान और चेतना दे, जहां उसके जीवन में बाधाएं, कठिनाइयां आए उनको दूर करे और उसके बाद देखे कि वह दीक्षा के घोष्य है या नहीं।

* शिष्य और गुरु एक ही शब्द हैं, दो अलग - अलग शब्द नहीं हैं। न इनमें भेद किया जा सकता है।

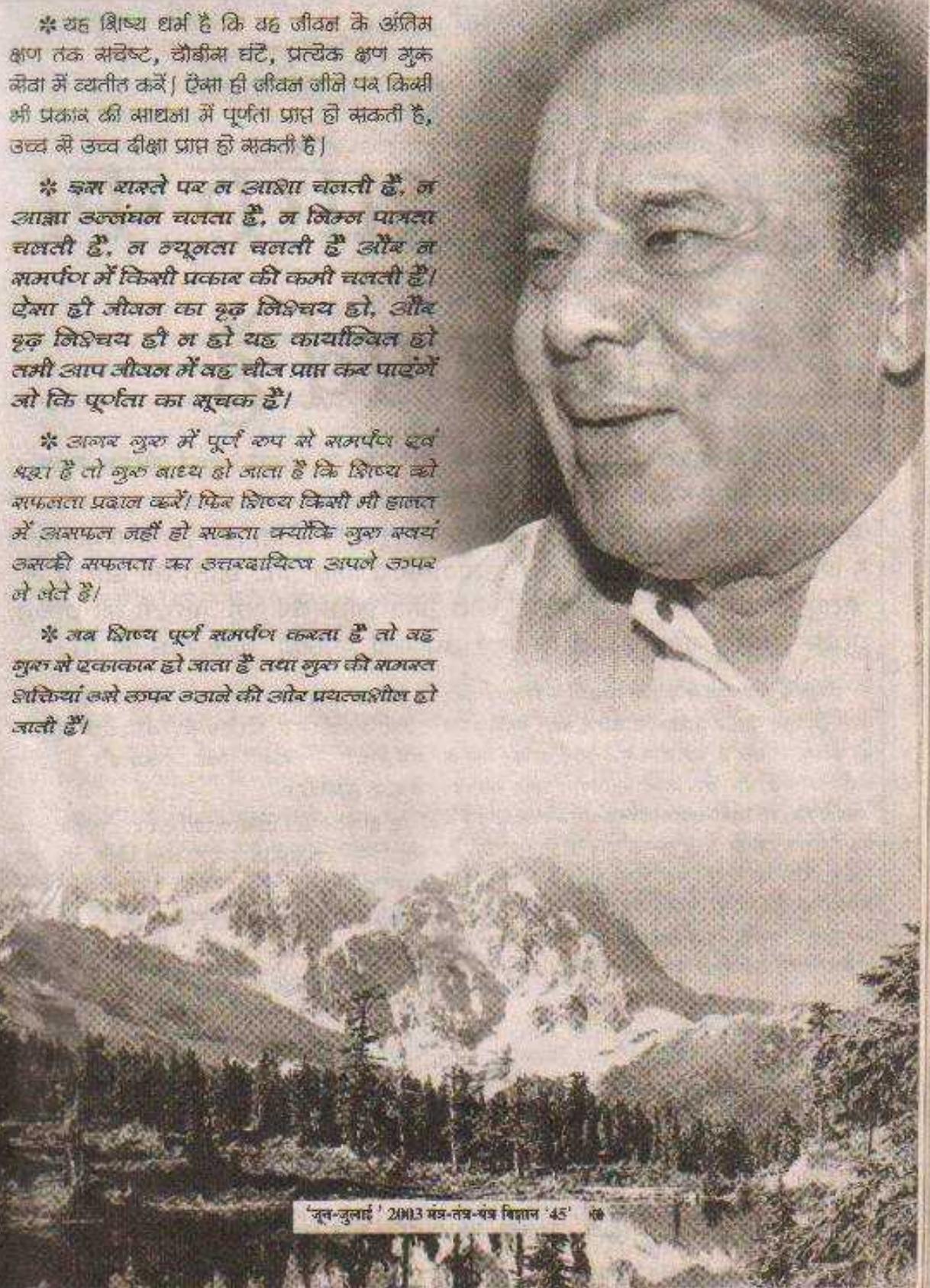
* आध्यात्म जीवन की ऐसी परंपराहै, एक ऐसा सास्त्र है जिस पर गुरु के प्रति समर्पण एवं अच्छा के

सहाय ही चला जा सकता है। यहां पर दूसरी कोई शुरू काम नहीं करती।

*

पूर्णसदः पूर्ण मिदं, पूर्णात् पूर्ण मुदच्छते,
पूर्णस्य पूर्ण मावाय, पूर्ण सेवा व शिष्यते।

शिष्य तभी पूर्ण होना जब उपने आप में कुछ रखें लहीं, तब गुरु चाकरों में ऊपोष्ठित व्यक्ति द्वारा ज्ञाली दिये में तेज सबा जा सकता है, जो पहले से भवा हुआ है, अमिमान, क्रोध, घमंड, लोम, भोग जै उलझे छिपाई भौ प्रकार ज्ञान क्षणी तेज की बूँद नहीं डाली जा सकती।



* यह शिष्य धर्म है कि वह जीवन के अंतिम
क्षण तक सर्वेष्ट, दोषील घटे, प्रत्येक क्षण गुरु
जीव में व्याप्ति करें। ऐसा ही लीबन जीने पर किसी
भी प्रकार की आश्रिता में पूर्णता प्राप्त हो सकती है,
उच्च से उच्च दीक्षा प्राप्त हो सकती है।

* कल साक्षे पर न आश्रा चलती है, न
आश्रा उल्लंघन चलता है, न विना पात्रता
चलती है, न व्यूनता चलती है और न
ममर्ण में किसी प्रकार की कमी चलती है।
देखा ही जीवन का शूँह लिङ्गेचय हो, और
शूँह लिङ्गेचय ही न हो वह कायान्वित हो
तभी आप जीवन में वह चीज़ प्राप्त कर पाएंगे
जो कि पूर्णता का शूचक है।

* अनन्त नुस्खा में पूर्ण रूप से लम्पेण इन
शब्दों हैं तो बुल बाद्य हो जाता है कि शिष्य को
सफलता प्रदान करें। फिर शिष्य किसी भी हालत
में असफल नहीं हो सकता जब्तक नुस्खा इन्हें
असक्षी सफलता का उत्तरदायित्वा अपने उपर
ने देते हैं।

* जब शिष्य पूर्ण लम्पेण कहता है तो वह
नुस्खा जो उत्तरदाय हो जाता है तथा नुस्खा की लम्पता
इत्येत्यां उसे लपर उठाने की ओर प्रयत्नशील हो
जाती है।

श्रीकृष्ण भाष्यम्

शिव और शक्ति का रसेश्वर पर्व है

शिव से शक्ति की भिज्जता नहीं है और यह बात अपने पूर्ण योगील के साथ चरित्रार्थ होती है श्रावण मास में जब प्रकृति जो शक्ति रूप है अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ खिल उठती है और शिव आहाद मुद्रा में प्रतीत होते हैं। क्या शम्बवन्ध है शिव और शक्ति में और कैसे उताश जाये शिव और शक्ति को जीवित में? श्रावण मास में सम्पन्न कीजिये, शिव और शक्ति की यह साधना जो प्रत्येक युवक-युती, गृहस्थ सब के लिए उपयोगी ही गहीं आवश्यक भी है।

उपनिषदों के प्रारम्भ में ब्रह्म के सम्बन्ध में जिज्ञासा प्रकट करते हुए प्रश्न पूछा गया कि 'कि कारण ब्रह्म' अर्थात् जगत् उत्तीर्णेऽत्तीर्ण चैर्णेऽत्तीर्ण द्वैरधोरत्तरेऽत्य का कारण जो ब्रह्म है, वह कौन है? अजे बल्कर ब्रह्म के रूपेण्टि रूपेण्टि उत्तरते उत्तर स्थान पर सद और शिव शब्द का प्रयोग किया गया है। रूद्र-रूपैऽवैरे।

'एकोहि सदः सः शिव' अर्थात् जो जगत् परं जग्मन करते हैं वे सद् भगवान् एक ही हैं, वे प्रत्येक जीव के भीतर लियते हैं, समर्पन जीवों का निर्गम कर पालन करते हैं और प्रलय में भग्नाको समेन लेते हैं। अर्थात् वह जगत् पूर्ण सद् से सद् म्बर्स्य ही है, एक ही सद् में अप् परमाणु रूप में जीव आत्मारूप में कोहि कोहि सद् उपनिषद् हरे जो सद् में है किंगीन हो जाने हैं।

नारायण उपनिषद् में भगवान् शिव की अनेक नामों से प्रणाम किया गया है -

द्विद्वय रूपः, द्विद्विद्वय रूपः, द्विद्वय रूपः,
द्विद्विद्वय रूपः, द्विद्विद्वय रूपः, द्विद्वय रूपः,
द्विद्विद्वय रूपः, द्विद्वय रूपः,

इत्यादिव भगवान् रूप के सम्बन्ध में कहा गया है कि भगवान् शिव ही इन्ह इत्यादि देवताओं की उपति हनु, वृद्ध हनु, अधिष्ठित और सवर्ण हैं वे परमदेव सबको सद्बुद्धि से समुल करें।

हिन्दूपत्रकोडिकालपत्र उमापत्रकोडिकालपत्र
पशुपतिरूप रूप रूपः रूपः रूपः

इसीलिए भगवान् रूप के सम्बन्ध में कहा गया है कि भगवान् शिव ही इन्ह इत्यादि देवताओं की उपति हनु, वृद्ध हनु, अधिष्ठित और सवर्ण हैं वे परमदेव सबको सद्बुद्धि से समुल करें।

इन संग्राम में कर्म कल देने के लिए ही सृष्टि होती है।

ज्ञानि जपने जीवन में नाना प्रकार के सुख और दुःख भोगता हुआ अनन्त; पूर्ण सृष्टि में विलीन हो जाता है। इसीलिए भगवान शिव को प्रशंसन का देव कहा गया है जो व्यक्ति के जीवन में जब दुखों को हर लेने हैं, इसीलिए वे हर ही और प्रार्थना में भी कड़ा जाता है – हर हर महादेव अर्थात् जो हरण करने वाले हैं, वे ही की संयुक्त रूप से ही आराधना की जाती हैं। लिंगाकार रूप में भी शिव और शक्ति का समन्वित रूप लिंग और वेदी के रूप में प्रकट होता है।

अव्यक्त और व्यक्त दोनों ही रूपों में शिव को जाना जाता है, इसीलिए शिव संगुण भी है और निर्गुण भी है। निर्गुण रूप में वे लिंगाकार रूप में और संगुण रूप में विभिन्न रूपों में

शिव भक्ति के अधीन शिव को विनेत्र, विशुल, मुण्डमाला धारी एवं दिग्म्बर, उमशान वर्ती, अर्धनारीश्वर, भग्नधारी माना है। वास्तविक रूप में शिव के विनेत्र विकाल अर्थात् भूत प्रविष्ट्या और वर्तमान ज्ञान के बोधक हैं।

शिव के विनेत्र सूर्य, चन्द्रमा और अन्मि अवरूप हैं।

शिव की मुण्डमाला प्रत्येक व्यक्ति को मृत्यु का स्मरण करानी रहती है, जिससे वे दुष्कर्मों से विरक्त रखने का प्रयत्न करते हैं।

शिव दिग्म्बर होते हुए भी भक्तों के ऐश्वर्य को बढ़ाने वाले और मुक्त हन्त में दान करने वाले हैं। उमशानवारी होते भी तीनों लोकों के स्वामी हैं अर्धनारीश्वर होते ही योगाधिराज हैं, महानायित अर्थात् काम को जीतने वाले होकर भी सदा महा शक्ति भगवती उमा के साथ हैं, भग्नधारी होते भी अनेक रत्नराशियों के अधिपति हैं, वही शिव अजन्मा और अनेक रूपों में विभूषित हैं, व्यक्त भी है और अव्यक्त भी।

भगवान शिव के महादेव, घर, दिव्य, शंकर, शम्भु, उमाकांत, हर, मुण्ड, नीलकंठ, ईश, ईशान, महेश, महेश्वर, परमेश्वर, सर्व, रुद्र, महासूर, कालकृष्ण, विलोचन, विस्तारा, विश्वरूप, कामठेव, काल, महाकाल, कालविकरण, पशुपति उन्नादि अनेक नाम हैं।

शिव शब्द का अर्थ है कृष्ण, शिव ही शब्द है, श का अर्थ है कल्याण, क का अर्थ है कल्प वाला अर्थात् शंकर ही कल्याणकारी देव है, इह ही शिव है, सृष्टि की अत्यधि और पूर्वति '३३ में ही है।

निस प्रकार पृथ्वी में गंध, चन्द्र में शीतलता, सूर्य में प्रभा शिल्द है, उन्हीं प्रकार शिव में शक्ति भी सिद्ध है, शक्ति को किसी भी रूप में भी कहा जाए उमा, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, ब्रह्माणी, इन्द्राणी, महाकाली सब शिव के नाम ही निहित हैं।

शिव पुरुष रूप है तो उमा स्त्री स्वरूप, शिव छह है तो उमा सरस्वती, शिव विष्णु और उमा लक्ष्मी, शिव सूर्य तो उमा चाया, शिव चन्द्र है तो उमा तारा, शिव यज्ञ है तो उमा वेदी, दुखों को हर लेने हैं, इसीलिए वे हर ही और प्रार्थना में भी कड़ा जाता है – हर हर महादेव अर्थात् जो हरण करने वाले हैं, वे ही की संयुक्त रूप से ही आराधना की जाती हैं। लिंगाकार रूप में भी शिव और शक्ति का समन्वित रूप लिंग और वेदी के रूप में प्रकट होता है।

प्रणव अक्षर 'ॐ' शिव का जान कहा गया है अर्थात् संसार में वे लिंगाकार रूप में और संगुण रूप में विभिन्न रूपों में की प्रथम ध्वनि ॐ ही थी, ओंकार की ध्वनि अर्थात् प्रणव से सम्बन्ध में कहा गया है, कि यह सर्वव्यापी है, यह तात्क में है, ब्रह्म विद्या है, यह सकल मंत्रों का मूल है, इसीलिए प्रत्येक मंत्र के पहले प्रणव मंत्र अर्थात् ॐ बोला ही जाता है।

सदाशिव को मृत्युंजय कहा गया है, उन्हें ज्योंबक कहा गया है, सांस्कृतिक प्राणी सदैव यम अर्थात् मृत्यु से बचने का प्रयत्न करता है और वेदन शिव को ही महाकाल, मृत्युंजय और अमृतेश्वर कहा गया है, शिव ही काल से ऊपर महाकाल है, मृत्यु को जीतने वाले हैं, इसीलिए मृत्युंजय हैं, जीवन में बार-बार मृत्यु से बचाकर अमृत दिताने में रमर्ध हैं।

भीतिक द्युग और शिव

भगवान शिव आध्यात्मिकता के देव हैं तो भीतिकता के भी देव है, भीतिक जगत में व्यक्ति को जीवन में परिवार, पुत्र आनन्द, विद्या, ज्ञान, भयहीनता, सब कुछ तो चाहिए और पैसा ही तो भगवान शिव का स्वरूप है, शक्ति स्वरूप उमा पार्वती सदैव साथ है, देव अश्वी भजानन्द पुत्र है, वही शोष देव कानिकिय दूसरे पुत्र है, कल्पि सिद्धि पुत्र वधूर है, सब कुछ दोने हुए भी आनन्द से बुरा होकर, भस्म धारण कर हिमालय वायी हैं अर्थात् सब शुणों को रखने हुए भी मोह से परे हैं, जहाँ शिव हैं वहाँ भगवती है, जहाँ शिव हैं वहाँ जग्नायिति है, जहाँ शिव हैं वहाँ शोषपति कानिकिय है, जहाँ शिव हैं वहाँ कल्पि और सिद्धि हैं। जहाँ शिव है, वहाँ जल है क्योंकि शिव की जटाओं में जल धारण करने की क्षमता है और जहाँ जल है वहाँ जीवन भी है।

कृष्णलिङ्मी शक्ति नागरण में ज्योति स्वरूप शिवलिंग का पूजन शिव और शक्ति का समन्वित पूजन है, यह पृथ्वी रूपी इष्ट और आकाश रूपी लिंग का मिलन है। शिव साधना, शिव सिद्धि, शिव कृपा विना शिवलिंग पूजन सम्भव ही नहीं और निरन्नर ब्रह्मों जल धारा जीवन के जल तत्त्व को अभिव्यक्त करती है, यदि मनुष्य की वेह से जल तत्त्व हटा दिया जाए तो जीवन समाप्त हो जाता है, इसीलिए जीवन के प्रतीक शिवलिंग

का संदेश अभिषेक किया जाता है। अभिषेक का तात्पर्य है कि उसके लिए वर्षा ऋतु और वर्षा ऋतु में भी भगवान् शिव आपण, अभिषेक का तात्पर्य है शृण करना, अभिषेक का

का किसी न किसी रूप में आयाहन, पूजन और साधना उसके जीवन को पूर्णता प्रदान करती है। वर्षों का काल श्रावण मास माना गया है, उस समय ऐसा लगता है कि प्रकृति स्पौशी शक्ति भी आकाश रूपी शिव को अपने साथ एकाकार करने के लिए तत्पर है, कहीं बीज बोये हुए ही या नहीं ही प्रकृति में से अपने आप हरितिमा प्रकट हो जाती है। यह हरियाली पृथ्वी के शुष्क, सौन्दर्य को संबार देती है, इसीलिए श्रावण मास को शिव कल्प या शीव कल्प कहा जाया है। जिस प्रकार शिवलिंग में ब्रांश पुरुष और प्रकृति का मिलन है, उसी प्रकार श्रावण मास भी ब्रह्माण्डीय शिवलिंग और पृथ्वीरूपी प्रकृति का महामिलन है। इस कल्प में, इस काल में शिव को किसी भी रूप में आराधना की जाए वह अधूरी नहीं रह सकती क्योंकि शिव नाकार निराकार हर रूप में विद्यमान हैं, जहाँ जीवन है वहाँ शिव है, जहाँ श्रावणमास है वहाँ शिव अपनी कृपा प्रदान करने के लिए आतुर है।

वर्षाकृतु – श्रावणमास

जल को देखते ही मन में प्रसन्नता उत्पन्न होती है क्योंकि शरीर के पीतर का जल बाढ़ जल से आपने आप को जोड़ता है, वह को हजार विधियों से स्वच्छ रखा जा सकता है लेकिन ऐह के उत्पर जल ढानकर स्नान करने से जो निर्मलता प्राप्त होती है वह और किसी अन्य माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकती है। वर्षों में बरसते हुए जल को देखकर आत्मा भी प्रसन्न हो जाती है, मनुष्य हर कर्तु में अवानी शीत, उष्ण कर्तु में अपने आप को संयोगित कर लेता है लेकिन वर्षों की न्यूनता में सब कुछ शुष्क हो जाता है, वर्षा तो भगवान् शिव का वरयान है जो आकाश मार्ग से पृथ्वी को तूम करने के लिए आती है और जब तक मनुष्य के जीवन में तूम नहीं आती तब तक वह शुष्क अनुभव करता है, इसीलिए भगवान् शिव को स्वेच्छर कहा गया है, रस का तात्पर्य है जल नल्व और जीवन में जितने जल तत्पर है वे भगवान् शिव ने ही ही उत्पन्न माने गये हैं।

प्रश्न उठता है कि व्यक्ति अपने जीवन में जल तत्व को साधक कैसे करे जिससे उसके जीवन में शुष्कता समाप्त हो जाए, वह कल्पना, प्रेम, आनन्द के स्वतत्वों से सरोबर रहे?

श्रावण मास प्रेम और अनंग का प्रतीक भी है और प्रेम और अनंग के देव शिव से अधिक कीन हो सकते हैं जिन्होंने अपनी प्रत्येक लीला में एकोही रुद्र होते हुए पूरी युष्मि में अनेकानेक स्त्र उत्पन्न किये हैं। जब मन में प्रसन्नता हो, रस माव हो, सौन्दर्यभाव हो तो रसेश्वर शिव की साधना अवश्य करनी चाहिए और जहाँ शिव पूजा शिवलिंग पूजा हो वहाँ आद्याशक्ति, गीरों पूजा, गणाधिपति, गणपति पूजा शीर्य पति कानिकिय पूजा, कल्पि और चिदि की पूजा जीवन में शुभ और लाप की प्राप्ति के लिए आवश्यक है।

जो सत्य है वह शिव है, जो शिव है वह सुन्दर है, इसीलिए जो शिव है वह सत्य है, जो शिव है वह आनन्द है और यही है

— शत्यम् शिवम् सुन्दरम्।

**बलता हूं थोड़ी दूर हर हक तेज रौ के साथ
पहचानता नहीं हूं अभी अपने रहबर को मैं**

आवण मास्त में

पूर्ण मनोकामना पूर्ण सिद्धि

त्रिश्चित् मनोकामना पूर्ण सिद्धि
भिक्षावृति चर पितृवने भूतसंजभित्व
विज्ञातं ते चरितमस्तिवलं विप्रलिप्सोः कपालिन्

हे भगवान् शिव! हे स्वामी आप चाहे भिक्षावृति का आश्रय लेकर एक अभिनय करें अथवा भूत प्रेत, पिशाचों के संग श्रमशाल में वारा करें विन्दु है कपालिन! मेरी दृष्टि में आपका ऐश्वर्य अब छुया नहीं रह गया है। मैं यह जान चुका हूँ कि त्रिमूर्ति सहित इस समस्त जगत के स्वामी आप ही हैं।

आवण का महान् प्रत्येक साधक के लिए अत्यन्त प्रिय की, सुखद गडस्थ जीवन, शत्रु नाश, रञ्ज सम्पादन इत्यादि और भृत्यपूर्ण माना गया है, जो सही अर्थों में साधक हैं, वे तो स्थितियों का समाधान भी इसी साधना से प्राप्त होता है। पूरे वर्ष भर इस माह का इन्तजार करते रहते हैं और जो भगवान् शिव का स्वरूप शक्ति द्वारा होने के कारण स्वर्णधिक अपनी मनोकामनाओं का पूर्ति चाहते हैं, वे पहले से ही तैयारी प्रश्रवशाली और साधक की नवोदारा पूर्ण करने वाला है। कर लेते हैं, जिससे कि इस माह में सम्पन्न होने वाली साधना इसी से जहाँ छोटे से छोटे गाम में शिवालय की स्नापना का पूरा-पूरा लाभ उठा सके। मिलती है वहाँ कोई भी स्त्री गौरी पार्वती के आराधना के बिना

जीवन में अनेक प्रकार की समन्वयाएं होती हैं समाज के अलग-अलग वर्ग की झलग-झलग आवश्यकताएं होती है करता है कि उसका पुत्र भगवान् श्री गणपति के समान बल, किन्तु जिस प्रकार से भगवान् शिव का परिवार सभी बुद्धि से युक्त हो तो वहाँ स्त्री की कामना रहती है कि उसका विरोधमात्रों को समेटे एक सम्पूर्णता का प्रतीक है उसी प्रकार पुत्र कातिक्रिय जैसा सीन्द्रवंवान् और दीर हो। ये प्रमाण है कि आवण मास की यह साधना जीवन की विभिन्न विरोधभावी किस प्रकार सम्पूर्ण शिव परिवार जन मानस में पैदा हुआ है। स्थितियों का निदान करने में समर्थ है। उदाहरण के लिए जिस प्रकार जहाँ शिव है वहीं शक्ति है ठीक उसी प्रकार जहाँ परिवार का गुरुत्व विभिन्न निष्पेदारियों के साथ आय प्राप्ति श्री गणपति है वहीं लक्ष्मी है, जहाँ श्री कातिक्रिय हैं वहीं के लिए चिन्तित रहता है। पहली अपने अशुद्धि सीधार्य की भगवती सरस्वती है इनी से इस साधना को सम्पूर्ण साधना कामना करती है, किशोर जागु वर्ग के बालक ब्राह्मणों को कहा गया है।

विद्या प्राप्ति की समस्या होती है, वहीं युवा वर्ग के साथ विवाह साधना सामग्री

श्रावण मास से सम्बन्धित साधना करने के लिए निम्न साधना सामग्री की आवश्यकता होती है, जो कि भवति प्राण प्रतिष्ठा युक्त है, वारसनव में ही यह सामग्री अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण है।

१. मनोकामना पूर्ति शिव सिद्धि यंत्र
२. साकल्य प्राप्ति स्त्राक्ष - जो शिव आगृहित भवति से सिद्ध हो।

३. कल्पवृक्ष वरव - जो वरदायक कल्प वृक्ष हो।

४. कायाकल्प गोमती चक्र

५. ऋषि सिद्धि यंत्र

६. मनोवांछित कामना सिद्धि विशद

७. स्त्राक्ष कंठा

मनोवांछित साधना सिद्धि पैकेट

श्रावण मास निकट है, और हम बार कई साधकों, संन्यासियों और पाठकों ने ऐसी इच्छा प्रकट की है, कि वे दुर्लभ और प्रामाणिक सामग्री प्राप्त हों ताकि वे दुर्लभ हों और हम ऐसा पैकेट तैयार करवा कर प्रियवाने की व्यवस्था कर रहे हैं।

इस पैकेट में उपरोक्त सारी वस्तुएँ प्रामाणिक रूप से रखाई होंगी जिसे सर्वकामना सिद्धि पैकेट कहा गया है।

मुहर्न

विसे तो पूरा श्रावण मास भगवान शिव की भगवती गीरी की जगती की तथा कात्तिक्य की साधना करने के लिए सिद्ध मास है लेकिन प्रत्येक साधक के लिए पूरे महीने नियमित साधना करना संभव नहीं हो पाता। अतः श्रावण मास के सभी सोमवारों के दिन यह साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए। इस बार श्रावण मास में पांच सोमवार आए हैं और प्रत्येक सोमवार विशेष योग से युक्त हैं इन पांचों सोमवार को साधक निम्न विधि से जलग उलग प्रकार की साधना इसी साधना मनोकामनाएँ पूर्ण हो सकें।

अन्य सामग्री

उपरोक्त पैकेट के अन्यथा कुछ अन्य सामग्री की आवश्यकता होती है जिसकी पहले से ही व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

आसन, कोई भी रंग का हो, जल पात्र, गंगाजल यदि हों



तो, स्टील की फ्लैट, कुकम गोली, चावल, केशर, पुष्प, चिल्व पत्र, पुष्प माला, दूध, दही, घी, शहद, शक्कर, नरिचल, मौली, घजीपवीत, अबीर गुलाल, अगरबत्ती, कपूर, धी का दीपक, नेवदा हेतु दूध का प्रसाद, पांच कल इलायची।

इसके अलावा यदि पर में पंचरात्र, अष्टमपात्र, घंटी, शर्ख अगरबत्ती स्टैण्ड आदि हो तो उसकी भी व्यवस्था कर लें।

साधना प्रयोग

श्रावण मास के प्रारम्भ में प्रथम दिन साधक गुरु पूजन सम्पन्न कर निम्न विधान से पूजन सम्पन्न करें और उसके पश्चात प्रत्येक सोमवार को आगे दिये गए मंत्रों से साधना सम्पन्न करें।

प्रातः काल स्नान कर शुद्ध सफेद धोती पहन कर पूर्व की ओर मुह कर आसन पर बैठ जाएं, यदि संभव हो तो अपने पत्नी को भी अपने बाहिने हाथ की ओर आसन पर बिठा दें, फिर अपनी चौटी को गांठ लगावें और बाएं हाथ में नल लेकर दाहिने हाथ से अपने पूरे शरीर पर निम्न प्रोक्षण पढ़ते हुए जल छिड़के जिससे कि शरीर पवित्र हो -

ॐ अपवित्रः पवित्रो या सत्यविद्यां जलोऽपिवा। इससे पहले ही भगवान शिव के चित्र को क्रम में मढ़वाकर रखु
व द्वंद्वत् पुष्टुरीकाद्यै स बाह्याभ्यन्तरः शुचि।। देना चाहिए और उसे जल से धाकर पोछकर, केशर लगाकर,
फिर सामने जल पूर्ण कलश को जावल की ढेरी बनाकर
जल पर रख दे और उसके चारों तरफ कुकुन या केशर की
चार बिन्दिया लगा ले, और उभयं निम्न मत्र पढ़ने हुए जल
भरे—

जंजे च वमुक्ते चैव ज्ञोदावरि सरस्वति।
ब्रह्मदे चिन्तु कावेरि जलेऽस्मिन् सर्विष्ठं कुरु॥
पुष्टुराग्नानि तीर्थानि गंगाद्यस्मितस्तथा।
आजच्छन्तु पवित्राणि पूजाकात्मे सदा मम॥

फिर उस कलश में से जल नेकर सकलप करे।

ॐ विष्णु विष्णु विष्णु, श्रीमद्भगवतो
महापुरुषस्तथ विष्णोराज्ञाया प्रवर्तमानस्य अथ
श्रीब्रह्मणो, द्वितीय परादृश्येत याराह कल्पे
वैवस्वतमल्लवन्तरे अष्टाविंशतितमे कलिष्ठुजे
कल्पित्यमचरणे जम्बू दीपे भारतवर्षे (अपने शहर का
नाम ले) लगाए श्रावण मासे सोमवासरे मम (अपना
नाम व कामनाओं या इच्छाओं का नाम ले) उसुक कामना
सिद्धुवर्थं साथिनां करिष्ये।

इसमें जिन जिन कार्यों की पूर्ति का विवरण दिया है या
आपकी जो भी इच्छा है, उसका उच्चारण कर सकते हैं, या
मन में बोल सकते हैं।

गणेश पूजान

फिर सामने प्लेट में कुकुम से स्वस्त्रिक बनाकर जग्नपति
का रथापित करें, यदि गणपति नहीं हो तो एक पुराणी रस्तकर
उसे जग्नपति मानकर उस पर जल बढ़ाकर पोछकर, केशर
लगाकर सामने नेवद्य पव फल रख दे, पृथ्य चढ़ाये और फिर
हाथ नोड़कर बोले—

सुमुख्यश्वैकदञ्चत्वं कर्पिलो नजापर्णकः।

लग्नोदरश्वं तिकटो तिघ्नानाशो विनायकः॥
दृष्टकेतु जग्नायक्षो भालबन्दो जग्नानन्दद्वावश्च तरनि
नमानि व्यपठेत् श्रृणु श्रावणि विद्वा रम्भे विवाहे च
प्रवेशे निर्जमे तथा सद्ग्राम स्कटे चैव विष्ण्वस्तस्य
त जावते।

फिर जग्नपति को किसी अलग रसान पर स्थापित कर दे
और सामने पात्र में सनोवांछित कामना सिद्धि ऐकेट में से
अछितीय सनोवांछित कामना सिद्धि यंत्र को स्थापित करें,

पात्र में सनोवांछित कामना पूर्ति शिव सिद्धि यंत्र के साथ
साथ साकलन्य प्राप्ति रुद्राक्ष, कल्पवृक्ष वरद कायाकल्प गोमती
चक्र, कृष्ण-सिद्धि यंत्र तथा सनोवांछित कामना सिद्धि विश्वह
को भी रख देना चाहिए।

फिर शुद्ध जल में थोड़ा सा कच्चा दूध और गंगाजल
मिलाकर ‘ॐ नम शिवाय’ मंत्र का उच्चारण करने हुए इस
सब पर जल चढ़ाएं, पाली धार से लगभग पाँच मिनट तक
चढ़ाने रहें, साथ ही दृध्र, दही, धी, शब्द, शब्दकर मिलाकर
पव मृत से भी स्नान करवें फिर शुद्ध जल से धोए जे और
सभी विश्वों को बाहर निकाल कर शुद्ध वरत्र से पोछ जे और
पिन्न मत्र पढ़ने हुए केशर और कुकुम लगावें।

नमस्मूर्गन्धदेहाय ह्रावर्धयफलदायिने।

त्रुष्यं नन्दं प्रदास्यामि चान्धीकासुरभञ्जन॥

इसके पश्चात भगवान शिव यंत्र पर और इन सभी यंत्रों
पर अबीर, गुलाल और अक्षत चढ़ावें तथा उन्हें पृथ्य और
पृथ्य माला स्थापित करें।

तत्पश्चात सामने अग्रवंती व त्रीपक नलाकर नेवद्य रखें
तथा फल भी समाप्ति करें। इसके बाद श्रद्धायुक्त दोनों हाथ
गोदकर निम्न स्तुति का पाठ करें।

वन्दे देवउमापति सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं।
वन्दे पश्चगभूषणं सूर्यदर्शं वन्दे पश्चकरंपतिम्॥
वन्दे सूर्यशशाकं वहि नद्यन् वन्दे मुकुन्दशिर्यं।
वन्दे भर्तुजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्॥

इसके बाद मनोवांछित कामना सिद्धि ऐकेट में जो सद्ग्राम
कठा है, उसके द्वारा मंद नप करें। इसमें कृद्राक्ष माला का
सर्वाधिक महत्व है वही वह उपलब्ध न हो तो एक्टिक माला
या मृगा माला से मंत्र जप करें, इसमें ज्यारह माला जप इन
यंत्रों के सामने करना आवश्यक है।

1. पहला सोमवार - 14 जुलाई

श्रावण मास के उत्तम सोमवार को नाधक अपनी भौतिक
ओर सासारिक कामनाओं की पूर्ति हेतु साधना सम्पन्न करें—

* यदि साधक ऋण सम्बन्धी समस्या में उलझा हुआ है,
तो वह ऋण मुक्ति हेतु इस दिवस को भगवान शिव की आराधना

सम्पन्न करें।

* इस दिन साधना सम्पन्न करने से साधक जीवन में अतुलनीय धनाश्रमन का स्रोत प्राप्त होता है।

* यदि साधक अलग समय में ही पूर्ण ऐश्वर्य का उपयोग करना चाहता है, तो यह विकस श्रेष्ठतम दिवस है।

* इस दिवस पर साधना सम्पन्न कर कुनैर भी देवनाओं के कोवाद्यश कहलाये, अतः इस दिवस साधकों को इस साधना की अवश्य करना चाहिए।

प्रथम सोमवार का मंत्र

॥ ॐ लक्ष्मी प्रदाय ह्रीं कणमोचने श्री
देहि देहि शिराय नमः ॥

2. दूसरा सोमवार - 21 जुलाई

साधक अपने जीवन में निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इस प्रयोग की करें—

* घर में बढ़ि कलह है या अशांति है, तो व्यक्ति कुटुम्ब सुख की प्राप्ति हेतु यह प्रयोग सम्पन्न करें।

* भगवान शिव का एक स्वरूप वेदनाथ भी है, जिसकी साधना कर व्यक्ति पूर्णतः रोगमुक्त हो सकता है।

* यदि व्यक्ति के विवाह में बाधाएं आ रही हों या विवाह हेतु अवधार ही नहीं बन रहे हों तो भी व्यक्ति यह साधना सम्पन्न कर सकता है।

* यदि भाग्यल पुस्तोचित सौन्दर्य प्राप्त करने की आकांक्षा उत्पन्न है, तो पूर्ण पौरुषत्व प्राप्ति हेतु यह प्रयोग अन्यन्त उपयोगी है।

दूसरे सोमवार का मंत्र

॥ ॐ लक्ष्मीशिराय वरदाय ह्रीं लै कण्डय
शिद्धि रुद्राय नमः ॥

3. तीसरा सोमवार - 28 जुलाई

इस विशेष दिवस पर साधक अपनी निम्न कामनाओं की पूर्ति हेतु यह प्रयोग करें—

* ईर्ष की प्राप्ति हेतु।

* भगवान शिव के प्रत्यक्ष दर्शन हेतु।

* गुप्त धन प्राप्ति हेतु।

* राज्य बाधा की निवृत्ति हेतु।

तीसरे सोमवार का मंत्र

॥ ॐ लक्ष्मीदेवाय सर्वकार्यं शिद्धि देहि देहि
कामेश्वराय नमः ॥

4. चौथा सोमवार - 4 अगस्त

इस विशेष दिवस पर साधक अपने उद्देश्यों के पूर्ति के लिए साधना सम्पन्न कर सकते हैं—

* मनोकामना पूर्ति हेतु।

* वाक सिद्धि हेतु।

* शत्रु संहार एवं मुकदमे में विजय प्राप्ति हेतु।

चौथे सोमवार का मंत्र

॥ ॐ रुद्राय शत्रुं संहार्य चर्ली
कार्यासिद्धाय महादेवाय फट् ॥

5. पांचवा सोमवार - 11 अगस्त

इस दिन साधक अपनी सभी मनोकामनाओं आध्यात्मिक भीतिक हन सभी कार्यों में पूर्ण सफलता के लिए यह साधना कर सकते हैं—

* देवीय कृपा हेतु पूर्णता प्राप्ति।

* मार्ग में आने वाली बाधाओं के निवारण हेतु।

* आध्यात्मिक उत्तिति के लिए।

* भूमि, भवन और वाहन जै कि वर्तमान समय में व्यक्ति के जीवन की अनिवार्यता बन गये हैं, इनकी प्राप्ति हेतु पांचवे सोमवार का मंत्र।

॥ ॐ पंच तत्त्वाय पूर्ण कार्यं शिद्धि देहि देहि
सदाशिवाय नमः ॥

ये सभी मंत्र अछितीय भीर महत्वपूर्ण हैं यह हम लोगों का सीमाव्य है कि हमारे जीवन काल में ऐसा महत्वपूर्ण अवसर उपस्थित हुआ है, जिसका हम पूरा पूरा लाभ उठा सकते हैं।

प्रत्येक सोमवार का मंत्र जप करने के बाद 'ॐ नमः शिवाय' की एक माला जप अवश्य करें।

भगवान शिव तो सर्वाधिक दयालु और तुलन्त वरदान देने वाले महादेव हैं, इन प्रयोगों एवं साधनाओं का फल तुरन्त प्राप्त होता है और साधक शीघ्र ही ननोबांधित सफलता प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

साधना सामग्री पैकेट - 450/-

दाक व्यवस्था पत्र
प्राप्त करने
वाले द्वारा
दिया जायेगा

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8

जोधपुर प्रधान डाकघर

342001 (राज.)



सेवा में

मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

दाक व्यवस्था पत्र
प्राप्त करने
वाले द्वारा
दिया जायेगा

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8

जोधपुर प्रधान डाकघर

342001 (राज.)



सेवा में

मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

दाक व्यवस्था पत्र
प्राप्त करने
वाले द्वारा
दिया जायेगा

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8

जोधपुर प्रधान डाकघर

342001 (राज.)



सेवा में

मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

दाक
व्यवस्था
पत्र
प्राप्त
करने
वाले
द्वारा
दिया
जायेगा

१. सूर्य
२. वर्षा
३. ग्रीष्म
४. वीस
५. ग्रह
६. तब
७. होना

८. तथा
९. होना है

१०. चन्द्र
११. चन्द्रम्
१२. अम्
१३. लिङ्गम्
१४. पत्ना
१५. वर्ण
१६. फल
१७. अन्तर्वी
१८. पुरुष

ब्रह्माण्ड उपासना

यह जीवज ब्रह्मों के भूतिक है भौति 'यथा पितौ यथा ब्रह्मापौ अर्थात् जो कुछ शरीर में है वह ब्रह्मापौ में है और जो ब्रह्मापौ में है वह इस शरीर में अवश्य है ब्रह्मों की जृति मनुष्य जीवज की जृति के जुड़ी हुई है जब मनुष्य के ब्रह्म अनुकूल होते हैं तो वह लिखतद प्रवाति के पश्च पर अन्नसर देता है लेकिन ब्रह्म दीप्ति के कारण उत्पन्न बाधा से जीवज हुए प्रकाश से कष्ट कारक हो जाता है जंत्र के माध्यम से तंत्र के माध्यम से ब्रह्मों के अपने अनुकूल बनाया जा सकता है ऐसी ही एक श्रेष्ठ बाधका जिसे प्रत्येक स्वाधीक अवश्यक अनुपन्न कहते हैं -

प्रत्येक राशि का स्वामी कोई न कोई गह होता है। जब मनुष्य की आय १२० वर्ष की मानी गई है, दसमें से सूर्य कोई गह ख्रान्त स्थान में बैठ कर विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता की दशा है: वर्ष, चन्द्रमा की दस वर्ष, मंगल की सात वर्ष, है, तब मानव को कष्ट, पीड़ा और दुःख भोगना पड़ता है। गह की अठारह वर्ष, गुरु की सोलह वर्ष, शनि की उचीम जीवन के मुख-दुःख, लाभ छानि आदि इन्हीं गहों पर आधारित वर्ष, बुध की सत्रह वर्ष, कनु की सात वर्ष और शुक की बीम होते हैं। इन गहों की शांति के लिए उनकी उपासना करता वर्ष मानी गई है। नन्म कुण्ठली के अनुसार जब कोई गह चाहिए। प्रस्तुत है इस लेख में नवग्रह उपासना पद्धति। ख्रान्त स्थान में बैठ कर विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है, तब मानव को पीड़ा, कष्ट और दुःख भोगने के लिए विदा होता है।

भारतीय संस्कृति में नवग्रह उपासना का उत्तम ही महत्व है, जिसका फल भगवान विष्णु, शिव या अन्य देवताओं की पद्धति है, जिसका फल भगवान विष्णु, शिव या अन्य देवताओं की पद्धति है। किस गह की जानि के लिए क्या ब्रह्म, पाठ, जप, तथा विवाह आदि दर्शक होते हैं, इन सब में नवग्रहों का विशेष दर्शक आदि करना चाहिए, इसकी तालिका नीचे दी जा रही है महत्व है। किसी भी प्रकार का यह नवग्रह स्थापना के बिना -

अपूर्ण रहना है, क्योंकि यज्ञ की रक्षा नवग्रहों के माध्यम से ही माल होती है। इसलिए मणिश आदि को स्थापना के साथ ही साथ नवग्रह की स्थापना होनी भी आवश्यक है।

न्योतिष शास्त्र के अनुसार कुल बाहु राशियों होती है ब्रुध अंतर और प्रत्येक राशि का स्वामी कोई न कोई गह है।

मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी मंगल, वृश और तुला का शुक्र, कन्या और मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, धनु और मीन का गुरु तथा मकर और कृष्ण राशियों का स्वामी शनि है।

क्र. 'जून-जुलाई' 2003 मंत्र-संत्र-वंत्र विज्ञान '33'

शिव चतुर्ति	प्रथम	ताथ, सोना, गेहू, गुड,
	द्वितीय	लाल बर्बत, लाल चन्दन,
	तीसरी	लाल पूजन, लाल बुधम,
	चौथी	मन्त्र के बाल, दूध, विष्णु
	पाँचवीं	काला, छाथी दाल, पत्ता,
	छठी	छठ वस्त्र, मूँग, मुखार्ण,
	सप्तवीं	दासी, कम्पूर, शर्कर, फल,
	पाँचवीं	घृत, सूखे पूज्य।
	छठी	गीला वस्त्र, सोना, लल्ची,
	सप्तवीं	घृत, पीला अत्त, गाले पूज्य,

शुक्र	गो पूजा	हाता	पुष्पराज, अरवि, पुष्पक, नमु, लकण, शंकर, बृंदि छुन। चांदी, सोना, चावल, धी, भंडेव बन्न, साफ़ बन्न, टीरा, रोफ़द बन्न, दही, गवाढ़य, धीनी, गी, धी।	महते जर्देष्टु वाय महते जाकराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इसमुच्चये युवरमुच्चये पुत्रमस्यै विशुद्धएस वोउमी राजा सोमोदरमाके ब्राह्मणाना (गृ) राजा। सोमाय नमः ॥
शनि	मृत्युज्ञय जप	नीलम	लिल, उड़ा, धैर, लोल, तेल, काल वर्ण, नीलम, कुलधी, काली गी, गृता, काला पुष्प, कल्पनी,	बीज मंत्र - ॥ ॐ श्रां श्रीं श्रीं सः चन्द्राय नमः ॥ OM SHRAM SHREEM SHROOM SAH CHANDRYAY HAMAH
राहु	पृथुव्यज्ञय जप	फिरोजा	अधिक, लोह, रिज, नीला वर्ण, छाम, उड़ा, तापाव, सान धन्न, गोमेव, काला पुष्प, तेल, उम्बल, खंग।	नप संख्या - ११०००। नप समय - संख्या काल। ३. बंगल (दक्षिण में लाल, त्रिकोण) ध्यान -
केतु	मृत्युज्ञय जप	लहरुमिथा	जलसूरी, निल, लाल, काला वर्ण, ध्याज, हान धन्न, कम्बल, उड़ा, वैदूरी, काला पुष्प, तेल, सुख्य, लोल, परव।	३५ अणिन्नमुद्धर्दि दिवः ककुप्यति पृथिव्या अयम् । अपा (गृ) रेता (गृ) चिं त्रिन्दिति ॥ भौमाय नमः ॥

यदि पाठक घोड़े, तो वे सब्द सम्बन्धित गह का मन जप कर सकते हैं। बीज मंत्र का जप करने से विपरीत गहों के प्रभाव में न्यूनता आती है और वे अनुकूल फल देने लगते हैं।

मीचे प्रत्येक इह से सम्बन्धित मंत्र, बीज मंत्र तथा संख्या का विश्वास स्पष्ट किया गया है, जिनका नप 'वज्राह शान्ति माला' से ही करना चाहिए।

७. सूर्य (मंडल के मध्य में लाल, गोलाकार)

ध्यान -

ॐ आ कृष्णेन रजस्ता वर्तमानो लिवेश्यहमृतं मर्त्यं च
हिरण्येन सर्विता रथेन्द्रेवो याति भुवनानि पश्यत् ॥
सूर्याय नमः ॥

बीज मंत्र

॥ ॐ हाँ हों हों सः सूर्याय नमः ॥

OM HRAAM HREEM HROOM SAH SURYAY NAMAH

जप संख्या - १००० जप। जप समय - सूर्योदय काल में।

८. चन्द्रमा (अठिलकोण में श्वेत, अद्वचन्द्र)

ध्यान -

ॐ इमं देवा अस्त्रपत्न (गृ) सुवद्वं महते क्षत्राय

बीज मंत्र

॥ ॐ जाँ श्रीं जौं सः गुरदे नमः ॥

OM GRAAM GROOM SAH GURAVAI NAMAH

जप संख्या - १०००० मंत्र जप। जप समय संध्या काल।

६. शुक्र (पूर्व में श्वेत, पंथकोण)

ध्यान -

ॐ अङ्गात्परिशुतो रसं ब्रह्माणा
व्यायिवत् क्षत्रं यथा सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्दियं विष्णवान् (ज्)
शुक्रमन्त्यस इन्द्रस्येन्द्रिमिवं पद्मोऽसृतं मधुः॥
शुक्राय नमः॥

बीज मंत्र -

॥ ॐ द्वां द्वीं द्वौं सः शुक्राय नमः॥

OM DRAAM DREEM DROOM SAH SHUKRY NAMAH

जप संख्या - ६००० मंत्र जप। जप समय - सूर्योदय।

७. शनि (पश्चिम में काला, मग्नुष्य)

ध्यान -

ॐ शं नो ईश्वरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि सर्वन्तु नः॥
शनेश्वराय नमः॥

बीज मंत्र -

॥ ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनेश्वराय नमः॥

OM PRAAM PREEM PROOM SAH

SHANESHCHARY NAMAH

जप संख्या - २३००० मंत्र जप। जप समय - संध्या काल।

८. राहु (जैर्स्ट्रट्य कोण में काला भक्त)

ध्यान -

ॐ कथा नाश्चित्र आ भूवृती सदावृथः सच्चा।
कथा शशिष्ठया वृत्ता॥
राहवे नमः॥

बीज मंत्र -

॥ ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं राहवे नमः॥

OM BHRAM BHREEM BHROOMI RAHAVI NAMAH

जप संख्या - १००० मंत्र जप। जप समय - रात्रि।

९. केतु (वायट्य कोण में काला छवजा)

ध्यान -

ॐ केतुं कृष्णस्त्र के वते पेशो मर्दा

अपेक्षने ।

समुद्रद्विरजावथाः ॥

केतवे नमः ॥

बीज मंत्र -

॥ ॐ रत्रां रत्रीं रत्रौं सः केतवे नमः॥

OM STRAAM STREEEM SAH KETVAI NAMAH

जप संख्या - १७००० मंत्र जप। जप समय - रात्रि में।

साधना विधान

शास्त्रों के अनुसार सर्वप्रथम यह शान्ति देने जिस एह की उपासना करती हो, उसका बीज मंत्र कुकुम से कागज पर लिख कर उसका पूजन किया जाना चाहिए और उसके बाद उसका मंत्र जप करना चाहिए।

स्वरूप शरीर, आद्य, यश, धन प्राप्ति तथा दुर्लभ नाश के लिए वेद व्यास जी द्वारा वर्णित नवशह स्तोत्र का नित्य पाठ अत्यन्त लाभदायक माना गया है।

नवशह स्तोत्र

जपाकु सुमसंकाशं काश्यपेत् महाघुतिम्।
तमो ऽरिं सर्वायाप्त्वं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥
विष्णश्चतुषाराभं क्षीरोदार्णविसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोमुक्टभूषणम्॥
वरणीगर्भम्भूतं विष्णुत्कान्तिसप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंजलं प्रणमाम्यहम्॥
पूर्णज्ञानं सदारं च सर्व व्यापार शेष्ठतम्।
सदा सौम्यं सदा देवं बुधं प्रणमाम्यहम्॥
देवानां च ऋषीणां च युरं कांचसंज्ञिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकलक्ष्य तं नमामि वृहस्पतिम्॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं युरम्।
सर्वशास्त्रप्रवत्तरारं भर्तव्यं प्रणमाम्यहम्॥
नीतांजनसमाभासं रविषुत्रं वमरज्जवम्।
वायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनेश्वरम्॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्जनम्।
सिंहिकाजर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥
पताशपुष्ट्यसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं धोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥
इति व्याससुखोदयोतं वः पठेत् सुसमहितः।
दिवा वा वदि वा रात्रौ विष्णशान्ति भीविष्णवति॥
जरनारीकृपाणां च भवेदद्वः स्वप्ननाशनम्।

ऐ वर्वर्यमतुलं तेषामारोज्यं युचिट्मर्थनम् ॥
ग्रहनक्षत्रजा: पीडास्तस्कराजित्यसुद्र भवः ॥
ताः सर्वाः प्रशमं व्यान्ति व्यासो द्रुते त्र संशयः ॥
प्रलोक साधक या पाठक किसी न किस कूर यह से प्रभावित
रहता ही है। मंगल, शनि और राहु, द्रुत यह माने गए हैं तथा
सूर्य और केतु विपरीत फल देने में विशेष सहायक होते हैं।

इन ग्रहों के प्रभाव से बाधाएं, मानसिक परेशानियाँ, कार्य
में वित्तम्, असफलता, मानहानि, आर्थिक क्षति, ओमारी और
कई प्रकार की समस्याएं नित्य पैदा होती रहती हैं। जब इस
प्रकार की स्थिति देखे, तो यह जान लें, कि किसी न किसी
कूर या पार्पी यह का प्रभाव आपको विपरीत फल दे रहा है।

नवश्रह साधना विधि

नवश्रह शांति जीवन में भाग्योदय के नये द्वार खोलती है
इसके प्रभाव से ग्रहों के कुप्रभाव से बचा जा सकता है और
परिवारिक जीवन में आने वाली बाधाओं से छुटकारा मिलता
है और जीवन में उत्तिंति के नये आवाम खुलते हैं और अपने
लक्ष्य को पाने में असफल व्यक्ति भी जल्द ही पूर्णता को प्राप्त
कर लेता है।

इस प्रयोग को प्रारम्भ करने के लिए सर्वप्रशम अपने पूजा
स्थान में पीली धोती पहनकर बेठे एवं भास्मने बांजों पर लाल
वस्त्र बिलाकर उस पर नौ देवियाँ बनाएं, यह देवियाँ अक्षत
की बनाएं उस पर एक एक ढेरी पर एक एक 'नवश्रह गुटिका'
स्थापित करें उसके सामने एक तांबे के पात्र में स्यास्तिक
बनाकर उस पर 'नवश्रह यज्ञ' स्थापित करें। यज्ञ के ऊपर
अक्षत चढ़ाएं और कुकुम, पूष्य से पूजन करें। उसके बाद
एक-एक गुटिका पर प्रत्येक यह का साधनामक मंत्र बोलते
हुए यह विशेष की गुटिका पर मध्यत चढ़ाएं प्रत्येक यह का
निम्न सौम्य मंत्र को बोलते हुए यह किया करनी है यह विशेष
की शांति के लिए लेख में पढ़ले दिये गए तांत्रिक मंत्र का जप
नियन्त्रित संख्या ने करना है लेकिन देनिक पूजा में निम्न यह का
मंत्रों का उच्चारण करने हुए यह विशेष गुटिका पर अक्षत
निम्न मंत्र का जप नियम ११ माला नवश्रह माला ने करें—
चढ़ाने है यह मंत्र इस प्रकार है—

मूर्ति

॥३०० हीं हीं सूर्याय नमः॥

चन्द्र—

॥३०१ ऐं वत्सो सोमाय नमः॥

मंगल—

॥३०२ हुं श्रीं मंजस्त्रव नमः॥

द्रुत

॥३०३ ऐं स्त्रीं श्री बुधाय नमः॥

नवश्रहों के प्रभाव के फलस्वरूप रक्षण को पूरे कुटुम्ब
सहित समाप्त होना पड़ा, कंस का वध हआ, राम को
बन-बन भटकाने के लिए मजबूर होना पड़ा, कृष्ण को
मधुग छोड़ कर द्वारिका भागना पड़ा और 'रण छोड़-
करहाये ... कीन बच सका है नवश्रहों के अनिष्ट प्रभाव
में ...

आप भी समय रहते इस दुर्लभ यज्ञ को प्राप्त कर
अपनी पत्नी की और अपने बालकों की पूरी रक्षा कीजिये
ना यह परिका तो आपके लिए, आपकी बुशदाली के
लिए, आपकी युवती के लिए ही होती है। अगर फिर भी
आपको योग्यता नहीं हो, आप सावधान नहीं हो, तो हम
क्या कर सकते हैं?

और फिर यह तो पूर्ण रूप से सुपत है ...
उपहार स्वरूप

गुरु

॥३०४ ऐं वत्सो ब्रह्मपत्न्यै नमः॥

शुक्र

॥३०५ हीं श्री शुक्रायै नमः॥

शनि

॥३०६ ऐं हों श्री शनैश्चरायै नमः॥

राहु

॥३०७ ऐं हों राहवे नमः॥

केतु

॥३०८ केतवे ऐं स्त्रै स्वहा ॥

मन ही मन नवश्रह देवनाओं का ध्यान करें। इस प्रकार नीं
गुटिकाओं के ऊपर पुष्य चढ़ाएं और नवश्रह देवनाओं को
स्थापित करें और कह कि आप स्थापित होकर मेरे सभी कार्य
नियन्त्रित सम्पन्न करें और मैंने प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त
नियन्त्रित संख्या ने करना है लेकिन देनिक पूजा में निम्न यह का
मंत्रों का उच्चारण करने हुए यह विशेष गुटिका पर अक्षत
निम्न मंत्र का जप नियम ११ माला नवश्रह माला ने करें—

॥३०९ सं सर्वारिष्ट निवारणाय नवश्रहेभ्यो नमः॥

इस प्रकार मंत्र जप नियमित ११ दिन तक करें। ११ दिन
के बाद नमी सामग्री को किसी मंडिये में बढ़ा कर आ जाए।

आप अपने ही लिखीं लगे पञ्चिका लाइटच लाला
तथा कार्ड के द पर अपने ही लिखीं लिख का पता लिटकर
में कार्ड लिले पर रु. ४२०/- की ली.पी.पी. हुआ
की ते इस लाइटका कमी संत्र लिहू प्राप्त प्रतिलिपु लाभकी
मेज देंगे तथा होवीं लिखीं को ११ वर्ष तक नियन्त्रित रूप
के पञ्चिका भेजी जाएंगी।

मंत्र-तंत्र-यन्त्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न भूग है। इसके साधनात्मक सत्य को लमाज के सभी स्तरों में समाज स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल खरल और राहज स्पष्ट में समाहित है।

वार्षिक विज्ञापन

इस पत्रिका की वार्षिक क सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

तीव्र प्रभावयुक्त आत्मयंत्र

सभी प्रकार की क्रियाएं माजव सिर्फ सफलता प्राप्त करने के लिए ही करता है। इज कार्य में जब भी याथना यहायक हो और उन सबका उसे मनचाहा लाभ हो यही प्रत्येक व्यक्ति चहाता है। परंतु जब उवयं अपना मन ही उदास, हताशा या मिराश हो, उवयं हम यदि उत्साहहीन हो, हमारे ही अन्दर यदि हीनभावना भर गई हो, तो ऐसे में एकाग्रता हो ही नहीं सकती। उत्साह और एकाग्रता के अभाव में व्यक्ति के मन में उदासी या हीनभावना इतने प्रबल रूप से अधिकार जमा लेती है, कि व्यक्ति किसी भी कार्य में सफल नहीं हो पाता तब वह बात-बात में झूँझलाने लगता है, उसके प्रत्येक निर्णय बलत बैठते हैं, ऐसे में भीषण विपत्तियां घोर लेती हैं। मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञान पत्रिका ने इन परेशानियों का सटीक उपाय खोजकर विशिष्ट रवि-पुष्ट एवं चन्द्रगण योग में तीव्र प्रभावयुक्त आत्मयंत्र तैयार कराए हैं। आप उवयं इस दैवी शक्ति युक्त यन्त्र की विलक्षणता अनुभव करेंगे। मन में उमंग, उत्साह, पूर्ण योग्यता, रस, आनन्द, प्रसन्नता एवं सफलता का वातावरण बनेगा।

इस यंत्र को प्राप्त किसी भी दिन
नित्य प्राप्त: काल मात्र '५ बार 'ॐ ऐ
ब्रह्माण्डतेजसेनम:' इस मंत्र का जप
कर लें तथा पूजा की जगह स्थापित
कर लें, ३० दिन बाद किसी पवित्र
जलधारा में विसर्जित कर देया मंत्रिर
में चढ़ा दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य आपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप उवयं भी सदस्य बनाकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. ४ स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करें।

Fill up and send post card no. 4 to us at :

वार्षिक सदस्यता शुल्क-195/- छाक सर्व अतिरिक्त 45/- Annual Subscription 195/-+45/-postage

कार्यपादक

मंत्र-तंत्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ. श्रीमली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान) Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimall Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) -0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) - 0291-2432010

कक्षनाौ की कापी

(जून माह)

मेष -

माझे के पूर्वार्ध में आपका पराक्रम विशेष रहेगा जिसके द्वारा आपको यान सम्मान, धन की प्राप्ति होगी। अपने अधिकारियों से आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा भड़कमियों का सहयोग प्राप्त होगा। इस माह संतान के संबंध में भी शुभ समाचार प्राप्त होगा, जिससे आपको गौरव प्राप्त होगा। अविवाहितों के लिए विवाह की संभावना होनी। घर में किली मंगल उत्सव का योग बन सकता है। इतना होने पर भी इस माह जु०, सहे आदि से दूर रहें, हानि हो सकती है। विवाहियों के लिए समय उचित है तथा वे प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण अनुकूलता हेतु व्यापार लाभ साधना (मार्च २००३) करें। शुभ तिथियाँ - १, ६, १२, १६, २०, २३, २५, २९ हैं।

वृष -

आपका व्यवहार वैसे तो मधुर है परंतु कुछ समय में आप घमंडी प्रवृत्ति के हो गए हैं। यह आपके लिए अनुकूल नहीं। इससे छाने आपको ही ठोणी। आपको चाहिए कि प्रेम एवं सोहार्द से अपने कार्य क्षेत्र में आगे बढ़े। इससे आप दूसरों का पूर्ण सहयोग प्राप्त कर सकेंगे तथा अफलता आपके काम धूमधीर। पिछले कई महिनों में आपके कई नए संपर्क बने हैं, आपने याचार भी की है जिससे आपका मनोबल बढ़ा हुआ है। शीघ्र ही आपको उनसे लाभ होना आप अवश्यक को चुके थिना आपनी सारी शक्ति लक्ष्य प्राप्ति में लगा दें। इस माह आप 'विष्व भेद्यी वरवरद साधना' (मार्च २००३) करें। शुभ तिथियाँ - २, ५, १३, १७, २०, २३, २५, ३० हैं।

मिथुन -

इस माह संतान की ओर से विशेष खुशी प्राप्त होगी। कार्य में विशेष उत्तम होनी तथा नए संपर्क बनेंगे। ही सकारा है जो यात्रा आप काफी समय से टालने आ रहे हैं वह इस माह संपन्न हो। पिछले शेर माह से आपने जो आध्यात्मिक सफलता प्राप्त की उसका पूर्णफल प्राप्त करने का समय आ गया है। इस समय घर के सदस्य आपको पूर्ण सहयोग देंगे। जीवन साथी का भी पूर्ण सहयोग रहेगा तथा घर में किली मंगलोत्सव के आयोजन की भी रामबादना है। यह माह निश्चय ही आपके लिए पूर्ण उत्तमिवायक है। इस माह आप शुभनेश्वरी साधना (मार्च २००३) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - ३, ५, ७, १०, १२, २०, ३१ हैं।

कक्ष -

आपको सबसे बड़ी कापी यह है कि आप कई कार्य एक ही समय में करने की चेष्टा करते हैं। आपको चाहिए कि अपनी समस्त शक्ति एक ही कार्य क्षेत्र में लगाएं जिससे आपको उचित सफलता प्राप्त हो। पीछे कुछ समय से आप नींद यात्राएं करते आ रहे हैं जिसके कारण आप आत्मिक बल एवं आध्यात्मिक श्रेष्ठता अनुभव कर रहे हैं। इस अवसर का उपयोग करते हुए पूर्ण मनोव्योग से अगर आप आधनाएं संपन्न करेंगे तो आध्यात्मिक एवं भौतिक लाभ अवश्य प्राप्त होंगे। इस माह आप भण्डारी साधना (जनवरी २००३) करें। शुभ तिथियाँ - १, ६, ९, ८, १३, १५, २३, २५, २९ हैं।

सिंह -

व्यर्थ के बाद विवाद में आप न ही पड़े तो आपके लिए अनुकूल रहेंगे। अधिकारियों एवं सहकर्मियों से अनबन न करें एवं उनका सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न करें। इस समय आप अपने को बेधे हुए, मजबूर एवं असहाय अनुभव करेंगे, परंतु यह स्थिति कुछ समय ही रहेगी जिसके पश्चात आप एक नई चमक एवं तेजस्विता के साथ उभरेंगे। मेहमत एवं परिश्रम से व्यक्ति विस्ता नहीं अपनु निखरता ही है। इसी को मूल मन्त्र बनाए तो आप पूर्ण सफलता प्राप्त कर पाएंगे। इस माह आप मातंगी सर्वकामना साधना (मार्च २००३) करें। शुभ तिथियाँ - २, ५, १७, २०, २२, २३, २८, ३० हैं।

कन्या -

आप अपने आप को तीधा साक्ष दिखाने का प्रयत्न करते हैं परंतु वास्तविकता कुछ और ही है। इसी प्रवृत्ति के कारण आपने कई स्वर्णिम अवसर खोए हैं। आपको चाहिए कि आप नींदन में सरल बने और जो भी अवसर आपको प्राप्त हो उन्हें अग्रीकार करें। ऐसा करने से आपकी पिछली सारी असफलताएं असफलताओं में परिवर्तित हो जाएंगी तथा आपको संतोष भी प्राप्त होगा। परिवार के सदस्यों के साथ मिल जुल कर रहे तथा घर में प्रसलता का बातावरण बनाएं रखने का प्रयत्न करें। इस माह आप उस धूमावस्ती साधना (मार्च २००३) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - ४, ८, ११, १३, २०, २३, २५, २९ हैं।

वर्षांशः अमृत, नवीनय, दिपुक्त, शिल्प योग

सर्वोच्च विशेष योग १५, १६, २४, २८ जून ६, जुलाई
मिहिं योग १७, १८, २०, २८ जून १२, जुलाई
अमृत योग २४, २८ जून पुष्ट नवांश २ जुलाई बुधवार

तुला -

जो भी कार्य करें विवेक से करें, समय आपके लिए सफलतादायक रिहर्ड होगा। द्वाष्पत्र सुख में बुद्धि होगी। अधिकारियों के साथ तालमेल बनाए रखें तथा दिनें शाश्वतों से सावधान रहें। यित्र भी इस समय धोखा दें सकते हैं। रुक्ष हुआ भास प्राप्त होने से प्रसन्नता प्राप्त होनी तथा धार्मिक मानशिक कार्यों में व्यापत्ति बढ़ेगी। साधनात्मक दृष्टि से यह माह विशेष सफलतादायक होगा। व्यापार में बुद्धि के अवसर जापके प्राप्त होंगे तथा परिवार एवं मित्रों से सहयोग से आप उच्चतम सफलता अर्जित कर पाएंगे। पूर्ण अनुकूलता हेतु मनोकामना सिद्ध साधना (फरवरी २००३) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - ३, ८, १३, १४, १६, २०, २४, ३० हैं।

वृश्चिक -

कला जगत में जुड़े व्यक्तियों के लिए यह अमृत विशेष उत्तमिदायक रिहर्ड होगा। आर्थिक लाभ के साथ-साथ नान सम्मान एवं उत्सवार प्राप्त होने का भी योग है। विशेष यात्रा का भी प्रबल योग है तथा बड़े वे कार्यों अंतिम कर सकते हैं। व्यापार के संदर्भ में यात्राएं शुभ एवं लाभदायक रहेगी। परंतु यात्रा करने समय स्वास्थ्य का विशेष ध्यान दें। नीकरी पेशा वर्ग के व्यक्तियों के लिए प्रमोशन का योग प्रबल है। इस माह आप बोड्शी शिलोचन साधना (मार्च २००३) अवश्य संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - २, ५, १३, १६, १८, २३, २५, २७ हैं।

धनु -

सामाजिक दृष्टि से आपको विशेष मान वास्तव प्राप्त होगा तथा लोग आपके कार्यों की एवं कर्मठता की सराहना करेंगे। नए कार्य प्रारंभ करने एवं नीकरी मिलने के लिए शुभ योग बन रहे हैं। ज्यवन निरामण एवं जग्मीन जग्यादाद के क्षेत्र विक्रम ये लाभ होंगा। धार्मिक एवं अध्यात्मिक भावनाओं की लेकर मन में शिखिता रहेगी। परिवार में शुभ यात्रोनन होंगे तथा जीवन मध्ये से संबंध मध्युर रहेगी। प्रग प्रसंग में सफलता प्राप्त हो सकती है तथा प्रणय योग भी प्रबल है। विशेष सफलता हेतु बहाकाल साधना (फरवरी २००३) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - ४, ६, १२, १३, १७, २१, २५, २६ हैं।

मकर -

इस समय सभी की नजर आप पर टिकी है तथा आप उनकी आवाजों को पूरा कर सकते हैं। आपमें आनंदवत की कली नहीं रहतु स्वतंत्रता से आगे बढ़े। अगर किसी नए कार्य का प्रारम्भ करना चाहते हैं तो निश्चय ही यह समय अनुकूल रिहर्ड होगा। किसी विशेष दीर्घ यात्रा का योग भी बनेगा जिससे आप प्रसंवृत्त एवं प्रकृत्ति अनुभव करेंगे। आपके सहयोग में मित्रों के कार्य संपन्न होंगे तथा वे आपकी

यह मास ज्योतिष के दृष्टि से

इस मास पर देश में मानवत अनुकूल रहेगा। इस कारण अध्यवश्यक शेष अनेकों भास्तु का वर्चनक और अधिक बड़ेजा भास्तु एवं अधिकारियों के सम्बन्धों में वृद्धि होनी तथा नई समितियों के बनने के कारण अर्थ अवसरा में नेतृत्वात्मक मार्ग के प्रयोगी देश में अंद्रानिति के बातावरण में चुनौती होनी लाभकारी अवसर पर विशेष वातां जाने वे आत्मकषाय में जुह लक्ष्य हैं।

सराहना किए बिना नहीं रह पायेंगे। यह माह महिलाओं के लिए विशेषतः उत्सवादायक रहेगा। इस माह आप व्यापारमुखी व्यापार वृद्धि साधना (मार्च २००३) करें। शुभ तिथियाँ - २, ५, १०, १३, १६, २०, २३, २४ हैं।

कुंभ -

सामाजिक गणांशों का प्रसन्न करे तथा अपने नान सम्मान का ध्यान रखें। किसी के प्रति इर्ष्या भाव न रखें तथा प्रेम से सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न करें। कारोबार के विस्तार हेतु यात्राएं शुभ रहेगी। नीकरी पेशा वर्ग के लिए अमृत संघर्षपूर्ण रहेगा, तथा अधिकारियों से अनबन होने की भी संभावना है। हमेलिप हिम्मत एवं श्रेष्ठ से कार्य करें। बाह्य चलाने समय व्याधानी बने, तुष्टिना की वीज है। स्वरूप का भी इस माह विशेष ध्यान दें। विशेषी कहीं मेहनत के बाद ही सफलता प्राप्त कर पाएंगे। आप इस माह आत्म रक्षा साधना (फरवरी २००३) करें। शुभ तिथियाँ - २, ५, १३, १५, २५, २७, ३० हैं।

मीन

आपके जयक प्रयासों के बाद भी यदि आपको सफलता प्राप्त नहीं हो रही तो इसका मूल कारण है आपके चिन का स्थिर ना होना। पूर्ण शोषित एवं लगन के साथ काम करे तथा किसी के बदकवे में न हो आए। इस माह इंद्रज्यु एवं प्रतियोगिता आदि में सफलता प्राप्ति का योग है जिससे ब्रोजगारों को नीकरी प्राप्त हो सकती है। जीवन साथी से संबंध मध्युर रहेंगे तथा तांत्रण की ओर से भी संतोषजनक समाचार प्राप्त होंगा। इस माह आप अन्नपूर्णा साधना (मार्च २००३) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - १, २, ५, ११, १४, १९, २१, २३ हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

१४ जून	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१५	शनिवार सत्यनारदण व्रत
१३ जून	आशाद् शुक्ल पक्ष-५	गंगलबार गोद्युष चतुर्थी
२५ जून	आशाद् कृष्ण पक्ष-११	बुधवार योगिनी पवाद्यो
२४ जून	आशाद् कृष्ण पक्ष-१३	गुरुवार प्रदोष त्रैतीय
२५ जून	आशाद् कृष्ण पक्ष-१०	रविवार उमाज्या
१ जुलाई	आशाद् शुक्ल पक्ष-४	गुरुवार स्वप्नसुखप्रयाण दिव्य
१ जुलाई	आशाद् शुक्ल पक्ष-१	बुधवार वेष्वाणी रुक्षाद्वयी
२३ जुलाई	आशाद् शुक्ल पक्ष-१५	रविवार गुरु दूर्गाम

कक्षांगों की बापी

जुलाई माह

वेष -

इस माह आप अपने को अन्यथिक उत्साहित अनुभव करें। इसलिए बड़ा भूषित व्यस्त होने के बाद भी आप अपने कर्णों को भली भाँति से संपूर्ण कर दें। उच्च ग्रनेकल के साथ-साथ स्वास्थ्य भी आपको अनुकूल रहेगा। पुराने मिठों एवं सम्बन्धियों से भी मेल छिनाए के कारण मन में फ्रेस्जना बनी रहेगी। माह के मध्य में आपको आकर्षित भूमि नाम से सकता है तथा उस भूमि को आप किसी आध्यात्मिक अथवा धार्मिक आयोजन में व्याप करने के लिए प्रेरित होंगे। महिलाओं के लिए यह नमय विशेष प्रगति का है वह पर भी एवं काय शेष में भी उनके रुपे कार्य समय पर पूर्ण होगे। इस माह आप 'शुभ रक्त कण कण स्थापन साधना' (अप्रैल २००३) अपना करें। शुभ तिथियां - १, ५, १०, १३, २१, २६, ३०

वृष्टि -

किसी अन्यान व्यक्ति व्यक्ति से आपकी शेष होगी तथा वह आश्वस्यनक स्व से आपके लिए सहायक चिह्न होगा। परिवार जनों से एवं सम्बन्धियों से मधुर सम्बन्ध रहें तथा वे विशेष रूप से आप से प्रसन्न रहें। शारीरिक पीड़ा का सामना करना पड़ सकता है परन्तु धिता की कोई बात नहीं है नह के अन्त तक आप पूर्ण रक्तस्य अनुभव करें। खान पान का विशेष ध्यान रखें तथा बाहर बनी वस्तुओं को नहीं खाएं तो अच्छा। कार्य लेने या व्यवसाय में शिखिलता होने पर भी विचित्र संतोषजनक बनी रहें। विशेष लाभ हेतु आप 'प्रेरण रोग नाशक साधना' (नवम्बर २००२) अपना करें। शुभ तिथियां - २, ५, ८, १३, १६, २३, २५, ३०

मिथुन -

काय क्षेत्र एवं व्यवसाय में कुछ संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त होगी। समझाओं का समाधान अबनी सूझबूझ से ही करें वृद्धरों पर निर्भर रह तो थाटे में रह सकते हैं। परिवार के किसी सदृश्य से मतभेद होने पर संदर्भ में काम लें अन्यथा स्थिति बिगड़ सकती है। महिलाएं अपने उच्च अधिकारियों से अनबन न करें। बेरोजगार व्यक्तियों के लिए स्पाय ट्रोक रहेगा। परिश्रम से भव्य नीकरी प्राप्त होने की संभावना है। अगर अविवाहित हो तो विवाह के प्रबल दोष बन रहा है अनुकूलना हेतु आप 'स्वर्णाकर्कश शुटिका लहस्ती प्राप्ति साधना' (अप्रैल २००३) अपना करें। शुभ तिथियां - १, ६, ८, ११, १५, १९, २४, २९ हैं।

कर्कि -

समय आपके अनुकूल चल रहा है तथा आप निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हैं। इस माह तुल विशेष अवसर आपको प्राप्त होंगे जिनका लाभ अगर आप उड़ा पाएं तो निश्चिय ही आने वाले समय में धन एवं यश दोनों आप कमा पाएंगे विशेषी वर्ग के लिए भी समय अच्छा है। इस समय किया जया परिश्रम उनके सविष्य का आशानीत रूप से उच्चनकल बना सकता है। अगर आप बाहर प्रयोग करते हैं तो सावधानी की आवश्यकता है। माह के अंत में किसी सामाजिक या धार्मिक आयोजन में भाग लेंगे इस माह आप 'सम्मोहन साधना' (जनवरी २००३) करें। शुभ तिथियां - ४, ८, १०, १२, २०, २२, २५ हैं।

सिंह -

उल्ति के कई मार्ग इस माह आपके लिए अच्छे हैं तथा खुलेंगे लक्ष आप असमंजस में एह जाएंगे कि अनेक में से किसी आवसर का लाभ उठाएं। निर्णय लेने समय केवल आर्थिक पक्ष को ही ध्यान में न रखें। नीकरी पैशा बनी तो उच्चपद, बेनन तृष्णि या पदोन्नति प्राप्त हो सकती है तथा व्यापारियों को आशानीत लाभ। किसी तीव्रीन काय को ग्राहम करने का अनि उत्तम समय है। परिवार का कोई हर्ष प्रदान करने वाला समाचार प्राप्त होगा। जगीन जायदाद के द्वाग विक्रम में घोड़ा सावधान रखने की आवश्यकता है। इस माह आप 'मनोकामना सिद्धि सावर साधना' (फरवरी २००३) करें। शुभ तिथियां - ३, ७, १२, १६, २०, २१, २६, ३० हैं।

कन्या -

आपनी जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ना नीक नहीं भले ही दूखरे अपने कर्तव्यों के प्रति किसी भी लापरवाह क्षयों न हो आप भली प्रकार से अपने कर्तव्यों का निवाह करें। कोई व्यक्ति आपको इस माह धोखा दे सकता है, इसलिए धन उचार देते समय या किसी भी काय पर हस्ताक्षर करने से पूर्व भली भाँति सोच समझा लें। किसी की मीठी मीठी बातों में आकर अपना नुकसान न करें। बहुत पुराने किसी भिन्न से भेट होने से भन प्रसन्न होगा। परिश्रम डारा बेरोजगार बनी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इस माह आप 'बड़ागीरी दुर्गी साधना' (दिसम्बर २००२) संवद करें। शुभ तिथियां - ३, ६, ८, २५, २८ हैं।

सर्वार्थ, अमृत, गवि पुष्टि, इन्द्रियकल, रितिक योग

सर्वार्थ लिखि योग २२, २५, २६, जुलाई ३, ७ अगस्त
लिखि योग २१ मई २, ३, ८ अगस्त
अमृत योग २२ जुलाई अमृत योग ३ अगस्त

दुला -

आजीविका के नए सोत इन माह खुलेंगे तथा यिछुले समय से जो आप परिश्रन कर रहे हैं उसका फल सामने आएगा। सम्बन्धियों या पितृों से मतशेष न करें तो ही अच्छा है। आप यहाँ सो अपने मध्ये व्यापक द्वारा किसी का भी दिल जीत कर अपने अनुकूल बना सकते हैं। इस माह आप येसा करके पुराने ऐदबाव को दूर करके नई शुभांत कर सकते हैं। अगर आप संतान की ओर से उनकी पढ़ाई या नौकरी को लेकर चिंतित हैं तो विश्वास रखिए डीड़ ही आपको शुभ समाचार प्राप्त होगा। इस माह आप 'काल धैर्य साधना' (नवम्बर २००२) किसी बुधवार को संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - ४, ९, १०, १३, २५ हैं।

वृष्टि वक्त -

आप संपर्क से घबराते नहीं तथा कोई भी स्थिति क्यों न हो आप विचलित नहीं होते। इस माह में कई चुनीनियों का सामना आपको करना पड़ सकता है, धर पर भी और कार्र लेते ही गो। परन्तु आप संघरण एवं मौलिक सुझबुझ द्वारा उन सब पर विनाय प्राप्त कर पायें। यिव एवं स्वयं भी बहुत हद तक सहायक सिद्ध होते। श्रमिक वर्ग के लिए समय अच्छा है तथा उनको बेतन वृद्धि प्राप्त हो सकती है। अगर नए मकान को बरीचते की सोच रहे हैं तो अभी उहरे, उसके लिए समय अनुकूल नहीं। अभी सोचा किया तो बढ़ा में पड़ताना पड़ सकता है। इस माह आप 'आठ भुजा काली साधना' (दिसम्बर २००२) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - ६, ७, ९, १३, १५, २०, २६, २९ हैं।

धनु -

पूरे माह भर कार्य में आपका गन नहीं लगेगा तथा आप यांगों के सब छोड़कर कई यात्रा पर निकल जाएं। अच्छा रहेगा कि आप कुछ दिन का अवकाश लेकर कहीं घूम आएं। नीर्थ यात्रा पर जाएंगे ताक और भी अच्छा इससे न केवल मन शांत होगा अपितु स्वास्थ्य लाभ भी होगा। अगर आप बेरोजगार हो तो आपको कुछ अवकाश तो प्राप्त होते। परन्तु काम बनने बनने रह जाएगा नियम सिद्धान्त होगी। येर्थ न कहीं बहुत शीश अनुकूल समय अने बाला है। विद्यार्थियों को चाहिए कि समय बरबाद न करके मन लगाकर पढ़ाई करें। इस माह आप 'सीमास्य प्रवायक चंद्र साधना' (अप्रैल २००३) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - १, ५, ७, ९, १६, १८, २१, २७ हैं।

मकर -

इस माह बढ़ चढ़ कर व्यय होगा। ईरुतु किसी तरह आप लिथिति को संसात ही लेंगे हो सके तो माह के प्रारंभ से ही स्वर्य के स्वर्य को योक किए भी कुछ ऐसे खावें सामने आ याको ते जिनसे बचना संभव नहीं। परिवार के किसी सदस्य या स्वर्य के स्वास्थ्य को लेकर चिंता नहीं रह सकती है। बाहर का भी प्रयोग करते समय सावधानी रहे

यह मास ज्योतिष के दृष्टि से

जान चाल चन्द्रपर्व के छाता परे सम में रहेगी तथा रात्रि चन्द्रपर्व यातावरण यर्थ रहगा दो रात्रियों में बहुत को लिखति बरसी बहुत कुछ रहेगी। मैं सुख की स्थिति का सामना करना पड़ेगा प्रतीक्षा अवसर रहेगी ये रित्यां में वृक्ष वृक्ष की स्थिति का सामना करना पड़ेगा प्रतीक्षा अवसर रहेगी। श्रीलिङ्ग में विशेष गति स्थिति अवसर होगी और भारत को अपने उपमहाद्वीप में वर्षावन बहेगा।

दुर्घटना का भय है। पूरे माह भर परेजानियों रहने पर भी इद या गुरु ध्यान द्वारा आप बहुत हद तक अनुकूलता प्राप्त कर सकते हैं। विशेष स्वयं रहे यह माह आप 'सिद्ध शक्तिशाली साधना' (दिसम्बर २००२) करें। शुभ तिथियाँ - ३, ७, ११, १५, १७, २२, २५, २९ हैं।

कुंभ -

नीकी में परिवर्तन या नया व्यवसाय बारंम करने के लिए समय अभी अनुकूल नहीं। अगर आप अभी ऐसा कुछ सोच रहे हैं तो शोड़ा थीर रखे तथा अनुकूल समय की प्रतीक्षा करें। ठोक समाय पर विद्या गया कार्य अधिक फलप्रद होता है। नात्रा के लिए यह समय अच्छा है तथा यात्रा से आप नाश डूँगा पाल्यो। प्रेम प्रसंग में सावधान रहे अन्यथा ब्रह्मनामी हो सकती है। संतान की उपेक्षा न करें तथा उनकी हज़बतों और अश्रापन में रुचि ले दें आपके सुखबों को सराहने तथा रहीं नार्ग चुनने में सक्षम होंगे। इस माह आप 'गणधति साधना' (नवम्बर २००३) किसी भी शुक्रवार को संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - २, ४, ९, १०, १५, १९, २३, २५ हैं।

मीन

कार्य का चोड़ा आप पर भर्णे रहेगा। परन्तु आप सभी विपरीत परिवर्तियों से जूझते हुए अपने कार्य को पूर्णता दे पाएं माह के अन्त में कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा जिससे आप प्रफॉर्मेंस अनुशंसा ले सकें। नए लोगों से आपका सम्पर्क बनेगा तथा वे निकट भविष्य में आपके लिए राजायक सिद्ध होंगे जीवन जापदार को लेकर कोई मापना अगर बढ़ता हुआ है तो इस माह उसके आपके पक्ष में सुलभ जाने की पूर्ण संभावना है। जीवन साथी से सम्बन्ध मधुर रहेंगे। इस माह आप 'शुरु कर्त्त्य प्रयोग' (अप्रैल २००३) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - १, ३, ६, १२, १३, १५, १९, २१, २४ हैं।

इस मास के द्रव्य, पर्व एवं त्योहार

२१ जुलाई शावत्र कृष्ण पक्ष-१	गुरुवार नणेश चतुर्थी
२२ जुलाई शावत्र कृष्ण पक्ष-२	संगलवार मंगल चौथी तृतीय
२५ जुलाई शावत्र कृष्ण पक्ष-२	गुरुवार कमल चौथी
२६ जुलाई शावत्र कृष्ण पक्ष-२	शनिवार इदं श्रद्ध तृतीय
२९ जुलाई शावत्र कृष्ण पक्ष-३	मण्डलवार इन्द्रियाली अपावस्या
३ अगस्त श्रावण शुक्ल पक्ष-४	शविवार नागपञ्चमी
४ अगस्त श्रावण शुक्ल पक्ष-५	शुक्रवार पवित्रा एकादशी
१० अगस्त श्रावण शुक्ल पक्ष-११	शविवार प्रवाह तृतीय
१२ अगस्त श्रावण शुक्ल पक्ष-१२	मण्डलवार रहस्य चतुर्थी

वेद सामाजिक संस्था

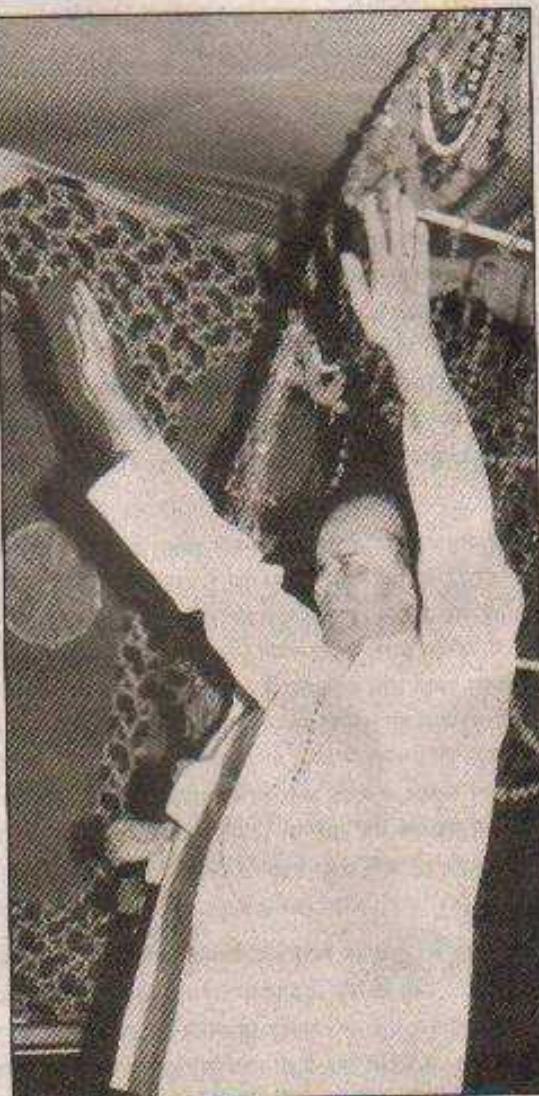
साधक, याठक तथा सरदनल सामाजिक के लिए समय का यह रूप

यहाँ प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उष्टुपि का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उष्टुपि का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

जीवे दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, जहाँ वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा आन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत ९९-९९ आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रतः ४.२४ ब्ले ८.०० ब्ले तक ही रहता है।

वार / दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जून 22-29) (जुलाई 6-13)	दिन ६. ९.२४ से ११.३६ २.४८ ३.३६ से ५.२४ तक रात्रि ६.४८ से १०.०० तक ५.२४ से ०६.०० तक
सोमवार (जून 23-30) (जुलाई 7-14)	दिन ०६.०० से ०७.३६ तक ९.१२ से ११.३६ तक रात्रि ०८.२४ से १३.३६ तक ०२.४८ से ०३.३६ तक
मंगलवार (जून 17-24) (जुलाई 1-8)	दिन १०.०० से ११.३६ तक ४.३० से ६.०० तक रात्रि ०६.४८ से १०.०० तक १२.२४ से ०२.४८ ०५.१२ से ०६.०० तक
बुधवार (जून 18-25) (जुलाई 2-9)	दिन ०६.४८ से ०८.२४ तक ८.२४ से १०.०० तक ०२.४८ से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से ९.१२ तक १२.२४ से ६.४८ तक
गुरुवार (जून 19-26) (जुलाई 3-10)	दिन ०६.०० से ०७.३६ तक १०.०० से ११.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक रात्रि ०९.१२ से ११.३६ तक ०२.०० से ०४.२४ तक
शुक्रवार (जून 20-27) (जुलाई 4-11)	दिन ०६.०० से ८.४८ तक ०७.३६ से १०.०० तक १२.२४ से ३.३६ तक रात्रि ७.३६ से ९.१२ तक १०.४८ से ११.३६ तक ०१.१२ से ०२.४८ तक
शनिवार (जून 21-28) (जुलाई 5-12)	दिन ८.०० से ८.४८ तक १०.३० से १२.२४ तक रात्रि ०८.२४ से ९.१२ तक ०२.४८ से ०३.३६ तक ०५.१२ से ०६.०० तक



सामान्य

आधुक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह कृपया
यहां प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उत्तिका का कारण होता है
तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उत्तिका का मर्म प्रशस्त कर
सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया
है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, यहां वह
व्यापार से सम्बन्धित हो, जीकरी से सम्बन्धित हो, घर में
शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अब्द किसी भी कार्य से
सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर
सकते हैं और सफलता का प्रतिशत ९९-१। आपके भाव्य में अकिञ्च हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः ४.२४ से ६.०० बजे तक ही रहता है।

वार / दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जुलाई २० २७) (अगस्त ३ १०)	दिन ०६.०० से १०.०० तक रात्रि ०६.४८ से ०७.३६ तक ०८.२४ से १०.०० तक ०३.३६ से ०६.०० तक
सोमवार (जुलाई २१ २८) (अगस्त ४ ११)	दिन ०६.०० से ०७.३० तक १०.४८ से ०१.१२ तक ०३.३६ से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० तक ०१.१२ से ०२.४८ तक
मंगलवार (जुलाई २२ २९) (अगस्त ५ १२)	दिन ०६.०० से ०८.२४ तक १०.०० से १२.२४ तक ०४.३० से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० १२.२४ से ०२.०० ०३.३६ से ०६.०० तक
तुंडवार (जुलाई १८ २३ ३०) (अगस्त ६ १३)	दिन ०७.३६ से ०९.१२ तक ११.३६ से १२.०० तक ०३.३६ से ०६.०० तक रात्रि ०६.४८ से १०.४८ तक ०२.०० से ०६.०० तक
गुरुवार (जुलाई १७ २४ ३१) (अगस्त ७ १४)	दिन ०६.०० से ०८.२४ तक १०.४८ से ०१.१२ तक ०४.२४ से ०६.०० तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० तक ०१.१२ से ०२.४८ तक
शुक्रवार (जुलाई १८ २५) (अगस्त १ ८)	दिन ०६.४८ से १०.३० तक ०४.२४ से ०५.१२ तक ०८.२४ से १०.४८ तक ०१.१२ से ०३.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक
शनिवार (जुलाई १९ २६) (अगस्त २ ९)	दिन १०.३० से १२.२४ तक ०३.३६ से ०५.१२ तक रात्रि ०८.२४ से १०.४८ तक ०२.०० से ०३.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक



यह हमने बही क्या हमि हिरनों कहा है

किसी भी लाये को प्रारम्भ करने हें पूर्व प्रत्येक यक्षि ने मन में सत्त्व-असत्त्व की जागना चाही है, कि वह कर्म सफल होग या नहीं, लक्षण स्पृष्ट होंगी या नहीं, बाहर तो उपरिक्षेत्र नहीं हो जाएगी, वहा वही दिन का प्रश्न छिस्त्र प्रश्न से होता, दिन की चाहपाणी पर रुद्र स्वर्ग की तपाकपालित रुद्र जागेगा या नहीं। प्रत्येक यक्षि गुरु ऐसे ही वर्ष अपने जीवन में अपना बाहना लेता है, जिनसे उसका प्रश्न आये गुरु उन जाता। युग ऐसे ही वर्ष अपने तपाक स्पृष्ट हैं जो वशार्थिरित के विशेष वकारित-वशकारित वर्षों से तपाकित हैं, जिनसे वहा प्रत्येक दिन वे अनुमान प्रस्तुत किया जाता है तथा विनये उपाय करने पर वापस पूरा दिन पूरी तरफलतायाक रहा सकेगा।

नुलाई

१. समस्त विधन समाप्ति हेतु प्रातः १३ बार उस मंत्र का उच्चारण करें “ॐ यो ह वै श्री परमात्मा नारायणः स भगवान् मकारवाच्य शिव स्वरूपो हनुमान भूमध्यः स्वः तस्यै वै नमो नमः ॥”
२. भगवान गणपति का पूजन दूर्वा एवं लड्डू से करें।
३. “गुरु रहस्य गुटिका” (न्यौछावर ६०/-) का पूजन कर धारण करें। आप गुरु से निकटता अनुभव करें तथा शुभमत्र प्राप्त होंगा।
४. आज प्रातः घोजन से पहले बाहर जाकर चौटियों को आदा डालें।
५. आज शनिवार के दिन रक्षा हेतु ५ बार हनुमान बाण का पाठ करें।
६. लघु नारियल (६०/-) का पूजन अक्षत, कुकुम एवं पूष्यों से करें तथा वृक्षणा सहित नारायण मंदिर में चढ़ा आएं।
७. भगवान शिव का पूजन कर “रं शं शं यं ओं ओं” मंत्र का २१ बार उच्चारण करें। सुखदण्डि प्राप्त होंगी।
८. आज ब्रह्म सुर्खते में उत्तर पक दीपक घर के छार पर प्रस्तुतित करें। शुभ सामाचार मिलेगा।
९. **पालनाय च तपसा तिश्वामित्रेण पूजितः ।
सदैव पार्वती पूत्रः ऋण नाशं करोतु गे ॥**
पांच बार यह जपते हुए गणपति का ध्यान करें।
१०. “गुरु गीता” का एक बार क्वचित्य पाठ करें।
११. प्रातः काल वी का दीपक लगाकर ५१ बार “ऐ ही वर्ली चामुच्छाये विच्छे” का जप करें।
१२. कोणस्थः पिंजलो वस्त्रः कृष्णो त्रैद्रावत्तको यमः,
सोऽस्ति शशिश्वरो भद्रः पिप्लादेन संस्तुतः
इस अनोक का प्रातः बार जप करें, पीड़ा समाप्त होती।
१३. आज गुरु पुरींगमा के शुभ अवसर पर पूर्ण विधि विधान सहित गुरु पूजन करें तथा चार माला गुरु मंत्र का जप कर गुरु सेवा का विशेष संकल्प लें।

१४. आज दही खाकर ही धर से निकलें, सफलता प्राप्त होंगी।

१५. आज बुनमानजी की ऊरती अवध्य संपत्ति करें।

१६. “ॐ हीं शीं हीं” मंत्र का १८ बार जप करते हुए भगवान गणपति का पूजन करें। धन लाभ होगा।

१७. प्रातः काल ध्यानावस्था में बेटकर दस मिनट “सोहम्” मंत्र का जप करें।

१८. “नागचक्र” (न्यौछावर ३०/-) का पूजन कर शिव मंदिर में चढ़ा आएं। दुखों से रक्षा होगी।

१९. निम्न मंत्र का ५ बार जप करते हुए भैरव का पूजन कुकुम से करें।

ॐ नमस्तेऽगृतसञ्ज्ञते बल तीर्थ तर्हिन्।

बलमायुश्च मे देहि पापाङ्गे त्राहि दूरः ।

२०. प्रातः काल सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार संपत्ति करें। मन दिन भर प्रफुल्ल रहेगा।

२१. गुरु नन्म विद्युत के दिन “निश्चिन्न स्तवन” का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का सकल्प लें।

२२. आज मंगलवार के दिन बानरों को गुड़ चना खिलाएं।

२३. आज भगवान गणपति का पूजन पीड़े पूष्यों से करें, लाभ होगा।

२४. आज छः माला अतिरिक्त गुरु मंत्र का जप करें।

२५. “तुर्गा श्रेष्ठा” (४५/-) का पूजन लाल पूष्य एवं कुकुम से करें। फिर जाकर किसी देवी मंदिर में चढ़ा दें। कल्याण होगा।

२६. किसी काने कुते को गुड़ एवं रोटी खाने को दें। अनिष्ट दूलेगा।

२७. **ॐ सूर्य देव सहस्रांशो तेजो राशेः नगत्पते ।**

अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्थ्य दिवाकर ।

इस इलाक का जप करते हुए सूर्य देव का अर्थ्य है।

२८. शिवलिंग पर दुर्घट गिरित जल पढ़ाएं तथा उसे प्रसाद के रूप में शृणु करें।

२९. हनुमान चालीसा का पाठ करके ही धर से निकलें।

३०. भगवती लक्ष्मी को तीन क्षण अपित कर १३ बार “ॐ ग्राहालक्ष्मी नमस्तुप्यं शुभवासो करोम्यहम्” का जप करें।

३१. “भूलक्षणा” (५०/-) को जल में डाल कर उस जल से स्नान करें। स्वास्थ्य रक्षा होगी। बाद में सुलक्षणा को दक्षिण में बैठ

यह 6 मन्त्र नहीं विद्युतिर नै कठा है

किसी भी काय को प्रसरण लेने से पूर्ण प्रत्येक व्यक्ति के मन में रश्व-इत्याशय की गाजना होती है, तो गहरा सफल हुआ तो नहीं। सफलता आज होती या नहीं, जागर तो उपर्युक्त नहीं हो जाती, एवं नहीं दिन वह प्रश्न किस प्रकार से होगा, दिन जी समाप्ति पर वह खय औं उत्तापदिता कर जायगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उत्तरा अनुष्ठान एवं अनन्द दुःख बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समझ प्रस्तुत हैं, जो विश्वप्रकाशित अपनाईत वर्षों से सकारात्मक है, जिन्हें वही प्रत्येक दिन से अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्प्रत्यक्ष लेने पर आपका पूरा दिन पूर्ण योग्यतावादीक बन रहेगा।

अभ्यरण

१. ऐसी वर्षी चामुच्छाये विच्चे' का जप करते हुए ३ मूँगे के दाने (न्यौछावर ५०/-) को दुग्ध के वित्र पर अर्पित करें, फिर देवी के मंदिर में चढ़ा आए। शुभ ढौगा।
२. केशार का तिनक करके घर से निकले।
३. ब्रेसन से बनी किसी पदार्थ को किसी निर्धन को दान करें।
४. महाकाल गुटिका (न्यौछावर ६०/-) का १०८ बार ॐ नमः शिवाय से पूजन कर शिव मंदिर में अर्पित करें। अनिष्ट टलेगा।
५. प्रातःकाल हनुमानाश्तक का पाठ करें।
६. घर से बाहर कदम रखते हुए 'हु फट' का उच्चारण करें। विनय प्राप्त होती।
७. प्रातःकाल स्नान कर 'ओ' बोज गंड का २१ बार उच्चारण करते हुए प्रत्येक बार एक अक्षत गुरु वित्र पर अर्पित करें।
८. निम्न मंत्र का ५ बार भगवती जगद्वाका के चित्र के आगे जप करें—

उद्यद दिन धुति गिरु किरोटा
तुगु फुच लयनत्रय युक्तो।
ओ॒ रुखी॑ तरदा कृश पाशो
भी॒ तो नरं द्रधने भृत्येशी॥

९. शनैश्चरी (न्यौछावर ५०/-) पर कुरुम अर्पित कर बाहर जात समय निर्जन ध्यान में डाल दें, बाध्यात् समाप्त होंगे।
१०. रुद्र को आर्च्य देकर ही भोजन करें।
११. प्रातः काल १५ गिनट 'शिवोऽहं शंकरोऽहं' का जप करें।
१२. प्रातःकाल हनुमान मंदिर में सर्वसों के तेल का दीपक प्राञ्जलित करें।
१३. प्रातःकाल पूजा स्थान में 'श्री प्रद' (न्यौछावर ३०/-) चाबल की लेंसी पर स्थापित कर ११ बार 'ॐ श्री ॐ' का जप करें धन लाभ होगा।
१४. गुरु चित्र के आग पी का दीपक लगाकर निम्न ऊपोक का ६ बार जप करें—

न गुरोर्धिक तत्त्व न गुरोर्धिक तपः
तत्त्वज्ञानात् परं जास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः।
१५. अपने इष्ट का ध्यान करके ही कोई कायं आरम्भ करें।

१६. तेल के दीपक में एक लौग डालकर हनुमान जी की आरती सम्पन्न करें। शोश, शोक, समाप्त होंगे।

१७. सूर्योदय के समय पूना स्थान में कुकुम से स्वस्त्रिक बनाएं तथा उस पर जल से भरा हुआ तांबे का कलश स्थापित करें।

१८. निम्न मंत्र का जप करने हुए तीन बिन्द्य पत्र भगवान शिव पर चढ़ाए—

दैविज नील गोनुद प्रथं रोहर कारके ।
तक भृकुटिलं धोरमधोरस्यं तार्चयेत्॥

१९. कामदा (न्यौछावर ५०/-) को जेब में रखकर घर से निकलें। मनोवालित सफलता मिलेगी।

२०. प्रातः काल भगवती महालक्ष्मी को कमल अर्पित करते हुए १३ बार निम्न जप करें—

धनं धात्यं धारो हार्यं कोटिमायुद्देशः शियम् ।
तुमगान् दलितोऽनुभवा महालक्ष्मीं प्रदद्धते ॥

२१. गुरु जन्म दिवस के दिन "निखिल स्तवन" का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का संकल्प लें।

२२. प्रातः काल सूर्योदय से पहले ५ माला गुरु मंत्र जप करें।

२३. आज के दिन काले कपड़े एवं सरसी के तेल का दान ले।

२४. प्रातःकाल सूर्य नमस्कार संपन्न करें।

२५. किसी शिव मंदिर में जाकर दुध मिश्रित जल शिवलिङ्ग पर चढ़ाएं।

२६. हनुमान चालीसा का पाठ कर ही घर से निकलें।

२७. निम्न मंत्र का पांच बार जप करने हुए गणपति ध्यान करें। परे गान पर ब्रह्म परेशं स्त्रवदीयुतम्।

२८. निखिलश्वरानन्द पंचक (अप्रैल २००३ पृष्ठ २४) का २३ बार पाठ करें।

२९. तुलसी का संक्षिप्त पूजन कर उसके पास दीपक जलाएं।

३०. 'ॐ देही श्री शनैश्चराय नमः' का ८ बार जप करते हुए प्रक देव दर्शण दिशा में काले तिल करें।

३१. "सूर्याम" (५०/-) की प्रातः कलश में डालकर १० बार 'ॐ देही शनैश्चराय नमः' का जप करें। फिर पूरे घर में जल छिड़क दें। शोश, शोक, समाप्त होंगे।



जीवन सारिता

यो तो किसी भी दोन के अमल हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पास अचूक हजार हैं, परंतु मनों के माध्यम से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है कि ममी दोनों का उद्द मत मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पहुँचुप्रभावों को यदि मन व्याप्ति कर लिया जाए, तो दोन स्थायी रूप से आनन्द हो जाते हैं।

१. ऋण मोचन लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग मंत्र

ऋणमोचन लक्ष्मी प्राप्ति प्रत्येक सामाजिक जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकता है, क्योंकि समाज में बिना धन के चलना अति दुष्कर प्रतीत होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति धन प्राप्ति के लिए विविध प्रकार के उद्घार करता है और समाज में धन-धान्य, यश, प्रतिष्ठा आदि सब कुछ प्राप्ति करना चाहता है।

इन सभी के अतिरिक्त वह ऋण मुक्त होना चाहता है, जिसके लिए यश, सम्मान, प्रतिष्ठा आदि तो स्वप्नवत बातें होती हैं। अतः कोई भी व्यक्ति, यह कितना भी गरीब क्यों न हो, ऋण मुक्त रहना चाहता है।

यह प्रयोग ऋण मोचन व लक्ष्मी प्राप्ति का संयुक्त प्रयोग है।

इसके लिए साधक पाले वस्त्र धारण कर किसी पाले रंग के वस्त्र पर 'श्री गुटिका' का पूजन सम्पन्न कर अपनी कामना व्यक्त करे और निन्म मंत्र का कमलगड्ढ माला से ५ माल मंत्र जप करे।

॥ ॐ ह्रीं ऋण मोचने श्रीं लक्ष्मी प्रदाय ॐ नमः ॥
प्रयोग सम्पन्न होने के बाद समस्त सामग्री को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - २५०/-

२. आपका बुद्धापा आनन्दप्रद ही सकता है, यदि इस विधि को अपना लौटे हैं आप ..

बृद्धावस्था आना व्यक्ति का अपने भविष्य के प्रति अनेक चिन्नाओं से भर जाना है। यह आवश्यक नहीं, कि बृद्धावस्था में पुर अथवा पुरी सहयोग प्रदान करें ही, अचानक कोई ऐसी समस्या न आ जाय, जिसके कारण बृद्धावस्था दुःखमय बीने।

ज्ञाति अपने बृद्धावस्था में सुखमय रिथेति प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार की बीमा तथा योजनाएं करवाता है, इनके साथ ही आप इस प्रयोग को भी संपन्न करें और जीवन को आनन्दयुक्त बनायें।

श्रुतवार के दिन 'हमजाव' को गुलाबी रंग के वस्त्र पर स्थापित कर उस पर इत्र लगा दें तथा उसके समझ चार तेल

के दीपक लगा दें। प्रत्येक दीपक की केखते हुए २३ बार संच करना ही पड़ता है और मानसिक स्वप्न से भी आपको आशात लगता है।

मंत्र

॥ ॐ एं श्री एं ॐ फट् ॥

प्रयोग समाप्ति पर 'इमजाद' पर इन लगाकर नदी में प्रवाहित करें।

साधना सामग्री पैकेट - १००/-

३. पठि-पठनी में मधुरता नहीं रही है आपके घर में, तो आप हँस तिथि को बच्चों नहीं आजमा देंते

आप सामाजिक जीवन में तो अत्यन्त सम्माननीय, यथा व सुखनकृत व्यक्ति कहलाते हैं, लेकिन आपका परिवारिक जीवन अत्यन्त मतभेदों से भरा हुआ है। आपके और आपके जीवनसाथी के मध्य सन्न्यासी, चिडिचिडाडट तथा मतभेद ही बना रहता है तथा दूर करने के लिए आपके सारे उपाय निष्पत्ति हो रहे हैं। इसके कारण आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा पर भी अज्जर वह रहा है और आप अत्यधिक तनावयस्त रहते हैं, कि घर में सामाजिक यिस प्रकार स्थापित करें? यदि आपके सारे उपाय असफल हो रहे हों, तो इस विधि को आजमा कर देख लीजिये। 'सुख शान्ति प्रवायक गुटिका' को लाल रंग का वस्त्र बिछाकर स्थापित कर ५३ बार चावल के दाने एक-एक कर निम्न मतभेद के साथ चढ़ावें -

मंत्र

॥ ॐ श्री श्री हुं ब्रं ब्रं फट् ॥

ऐसा ज्यारह दिन तक नित्य करें। प्रत्येक दिन मंत्र जप समाप्त कर चढ़ावें हुए चावलों को चिडियों को खिला दें। यिस दिन प्रयोग समाप्त हो, उस दिन गुटिका को भी किसी निर्जन स्थान में डाल दें।

साधना सामग्री पैकेट - १५०/-

४. आपका बिर्जिनेस पार्टनर आपके अनुकूल बन जायेगा हँस प्रत्योग रहे ...

आपका व्यापार आपके लिए महत्वपूर्ण है और उसमें यदि आप किसी की विश्वास के साथ आपना सहयोगी बनाने हैं, परन्तु कुछ समय उपरान्त वह आपके अनुकूल नहीं रहता है, तो स्वामानिक स्वप्न से आपको व्यापार में कठिनाइयों का सामना

करना ही पड़ता है और मानसिक स्वप्न से भी आपको आशात लगता है।

यदि आपके व्यापार में कोई आपका पार्टनर है और आपके अनुकूल नहीं चल रहा है, तो आप उसे इस प्रकार से अपने अनुकूल बना कर रखिए, जिससे कि आपको व्यापार सम्बन्धी उलझानों का सामना करना ही न पड़े।

आप किसी भी चुथबार या सोमवार के दिन 'ईशा' को लाल रंग के वस्त्र में बांध कर अपने दाढ़िने हाथ में लेकर अपनके देखते हुए निम्न मंत्र का २१ बार जप १५ दिन तक करें -
मंत्र

॥ ॐ क्षं ब्रदानुकूलयाय फट् ॥

प्रयोग के समाप्ति के पश्चात 'ईशा' को किसी शिव मन्दिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री पैकेट - ७५/-

५. आप स्वर्यं रौग्णं को ज्ञाप्त कर सकते हैं हँस प्रकार रहे ...

स्वर्य शरीर में ही स्वस्थ मन-मरित्यज का निवास होता है। परन्तु उब्र किसी रोग के होने पर आपको तनावयस्त होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आप चाहें तो इस अद्वितीय प्रयोग के माध्यम से अपना स्वयं का या किसी अन्य का रोग स्वयं ही समाप्त कर सकते हैं।

इस पांच विवरीय प्रयोग को किसी भी सोमवार से प्रारम्भ करें। सोमवार के दिन विधिवत रूप से गुरु पूजन सम्पन्न कर गुरु चिंत के समाप्त ही निम्न मंत्र का नित्य १०१ बार जप करें-

मंत्र

॥ ॐ ब्रह्म वं ब्रह्म रोग निवारणाय फट् ॥

प्रयोग समाप्ति पर आप तो रोगमुक्त होंगे हीं, साथ ही दूसरों को भी रोग मुक्त कर सकते हैं। आपको मात्र इनना ही करना है कि किसी गिलास में जल लेकर उसके सामने पहले गुरु मंत्र का पांच बार जप करें, फिर ज्यारह बार उपरोक्त मंत्र का जप कर पुनः पांच बार गुरु मंत्र का जप कर जल में तीन बार फूंक मारें, फिर वह जल रोगी व्यक्ति को पिला दें। यदि वह जल न ग्रहण कर सके, तो उसके ऊपर या उसके आस-पास छिड़क दें, उसके रोग में न्यूनता आयेगी। इस प्रकार जल अभिभवित कर आप स्वयं भी ले सकते हैं।

अग्रक विकासी काम्पनी

गुरु पूर्णिमा परे गुरु प्रश्नोंमें

जहाँ पहुँच पा बहे हैं तो ...

शिष्य के जीवन को आनन्द, पूर्णता और अनेक प्रकार की उन्नताओं से भरने का पर्व है - गुरु पूर्णिमा। प्रयत्नशील रहती है, उसी प्रकार गुरु की भी समस्त क्रियाएं अपने शिष्यों को प्रसन्नता, श्रेष्ठता, पूर्णता प्रदान करने के लिए ही होती है।

कूटा कुभ जल जल ही समाना है, वह तथ कहा जानी॥

ऐसा ही गिराव से युक्त पर्व है गुरु पूर्णिमा का, जिसमें शिष्य गुरु चरणों में अपने को उत्सर्ज करने के लिए आत्म हो जाता है, क्योंकि यह पर्व ही वह अद्वितीय पर्व होता है, जब शिष्य को गुरु दक्षिणा स्वरूप स्वयं को समर्पित करने को श्रेष्ठतम अवसर प्राप्त होता है, और गुरु भी शिष्य के न्यून स्तर, उसके आधुरेयन को रखय गहण कर उसे आशीर्वाद स्वरूप श्रेष्ठता प्रदान करते हैं, मात्र उसके भौतिक पक्ष को ही नहीं, उसके आध्यात्मिक पक्ष को भी।

गुरु शिष्य को तभी कुछ प्रदान करते हैं, जब शिष्य में योग्यता व पात्रता अनुभव करते हैं और कुछ विशेष अवसरों पर ऐसा संयोग बनता है, कि वे शिष्य की न्यूनताओं को, उसकी परेशानियों को स्वन- ही समाप्त कर देते हैं और अपना सांत्रिध्य, अपनी तपस्या का ऊंश तथा साधनात्मक ऊर्जा प्रदान कर उसे स्वर्ण खण्ड बना देते हैं।

यह क्रिया मात्र आध्यात्मिक पक्ष में मन्त्रनिधि ही नहीं होती, अपिनु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगोचर होती है। जिस प्रकार मां अपने शिशु को प्रसन्नता व श्रेष्ठता के लिए

कालीदास जैसे श्रेष्ठतम विद्वान की जीवनशाया भी गुरु कृपा की महानता को व्यक्त करती है। कालीदास की पत्नी ने विवाह के पश्चात् प्रथम विन ही जब उनकी मृदता को देख कर उन्हें अपमानित कर महल से निकाल दिया, तो पत्नी से अपने अपमान का बदला लेने की, उसे नीचा दिखाने की भावना व अपमान की आग लिये वे चल पढ़े। उनकी भैंट एक संन्यासी से हुई, जो कि उन्हें अपने माथ ले गए तथा दीक्षा दी और उन्हें 'गुरु', 'गुरु' नामक मंत्र का जप करने के लिए कहा। मात्र इसी का जप करते-करते वे दिव्यता के पथ पर अग्रसर होते गए और बुद्धि, चानुर्य, कवित्य, विद्वता आदि गुणों ने उनके अन्दर समाहित हो कर अपने आपको गौरवान्वित किया। जब वे पुनः उसी समाज में आये, जहाँ उनका अपमान हुआ था, उस समय वे अत्यन्त ओगरवी, ज्ञान की गरिमा से अलोकित, दिव्यता व चैतन्यता से युक्त एक विद्वान व्यक्तित्व बन चुके थे। इतिहास साक्षी है, उनके जैसा अद्वितीय विद्वान

कोई दूसरा पैदा नहीं हो सका।

कालीदास की जीवन यात्रा एक ऐसे व्यक्ति की कथा है, जो प्रारम्भ में अल्यन्त मृड वा और गुरु कृपा प्राप्त करने के

उपरान्त वह सर्वश्रेष्ठ विद्वान कहलाया और वह सब सम्भव हुआ मात्र उनके द्वारा की गई गुरु सेवा व चौबीसों घटे निरन्तर गुरु का ध्यान, गुरु मंत्र का जप व गुरु साधना द्वारा।

आदि काल से ही गुरु की महिमा का गुणगान होता रहा है, वेद, उपनिषद, पुराण आदि जितने भी उच्चकोटि के आध्यात्मिक गुंब हैं, सभी में गुरु की सर्वोच्चता का वर्णन किया जाया है। गुरु की कृपा प्राप्त कर एक साधारण व्यक्ति भी अद्वितीय व्यनित्व बन सकता है।

अथात और साधनाओं के बीच में तो गुरु को साक्षात् शिव स्वरूप ही माना जाया है।

३५ संविद्वाय इन्द्राय शंभवे भवस क्षेण
सोगनाथाय महसे शिवाय गुरुते नमः ।

गुरु शब्द शिष्य के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ शब्द है, क्योंकि गुरु के द्वारा बताये गए मार्ग का अनुसरण कर ही शिष्य अपने हृदय पर पहुँच धूल और जालों की साफ कर पाने में सक्षम होता है और अपने जीवन में व्याप्त ऊंचकार को दूर कर पाता है। गुरु ही शिष्य का सूजन कर उसका साधनाओं द्वारा पोषण करता है तथा रुद्र की भाँति उसके कुविचारों को, उसके दुर्गम्य को, उसके अहं को, उसके विकरों को नष्ट करता है। शिष्य तभी श्रेष्ठ बन पाने में सक्षम होता है, जब वह अपने हृदय को पूर्ण स्वरूप से नवचल कर उसमें गुरु को स्थापित कर ले, अपने हृदय में गुरुत्व को ध्यान कर ले।

गुरु की साधना सम्पन्न कर, उनकी सेवा कर अनेक व्यक्तियों ने उच्चता और श्रेष्ठता प्राप्त की। शंकराचार्य ने अल्पायु में ही जिस प्रकार से विद्वान् की धाक जमाई, वह बिना गुरु कृपा के किस प्रकार सम्भव हो सकता था?

और गुरु पूर्णिमा से ज्यादा श्रेष्ठ और कौन सा अवसर उपस्थित हो सकता है गुरु साधना के लिए, गुरु में स्वयं को विसर्जित करने के लिए, गुरुमय बन जाने के लिए।



जिस प्रकार एक बेल विली मनवृत् दृक्ष का लहारा ले कर बहुत ऊंचाई तक पहुँच जाती है, उसी प्रकार शिष्य भी गुरु साधना के द्वारा उच्चता पर पहुँच जाता है। संसार में जितनी भी साधनाएँ हैं, उन सबमें गुरु साधना को ही शर्वश्रेष्ठ माना जाता है, क्योंकि जब गुरु प्रसन्न होते हैं, तो फिर कोई भी साधना या सिद्धि शिष्य से दूर नहीं रह जाता, वे हाण भर में ही उपनी तपस्या का अंडा प्रदान करते हुए समस्त सिद्धयों प्रदान करने में समर्थ होते हैं।

एक अन्य कारण यह भी है, कि किसी साधक को समस्त साधनाएँ सम्पन्न करने के लिए हजारों वर्ष साधना करनी पड़ सकती है, जो कि वर्तमान के मनुष्य की ६०-७० वर्ष की आयु में सम्भव नहीं है, अतः गुरु साधना ही एकमात्र ऐसा उपाय है, जिसके द्वारा अल्प समय में ही सब कुछ प्राप्त करना सम्भव है।

यो तो गुरु पूर्णिमा के अवसर पर प्रत्येक शिष्य को गुरु चरणों में पहुँचना ही चाहिए, और उनके साक्षिय में यह पर्व मनाना चाहिए; परन्तु इस भौतिक जगत में गुरुस्य साधकों व शिष्यों को अनेक बाधाओं व समस्याओं का सामना करना पड़ता है और कुछ ऐसी भी परिस्थितियां उपकर हो जाती हैं, जब वह चाह कर भी ऐसा करने में सक्षम नहीं हो पाता। तेसे ही साधकों के लिए गुरु साधना विद्वान प्रस्तुत है, जिसके माध्यम से आप यदि किसी कारणबश शिविर में उपस्थिति न

हो पाये, तब भी पूज्य गुरुदेव की निकटता का पहसुक कर सके और उनका पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य कर सकें। जो साधक शिविर में उपस्थित हो कर गुरु पूर्णिमा के दिन इस साधना को सम्पन्न करेंगे, उनके सोभान्य का तो कहना ही क्या! यदि साधक चाहे, तो इस साधना विधान को अपने दैनिक गुरु पूजन क्रम में भी सम्मिलित कर सकते हैं।

जिस दिन पूजन प्रारम्भ करना हो या जिस समय करना हो, उस दिन घर में मंगलमय वातावरण होना चाहिए। इस साधना को सम्पन्न करने के लिए साधक को पहले से ही 'पारद गुरु यंत्र', 'एक पंचमुखी रुद्राक्ष' तथा 'दिव्यत्व माला' प्राप्त कर लेनी चाहिए। इसके अलावा पूजन की सभी निम्न सामग्रियों को भी एकत्र कर नें-

गंगा जल, धूप, दीप, अक्षत, कुंकुम, पुष्प, फल, निवेद (सिद्धाइ) तथा पंचामृत (धूष, बड़ी, धी, शहद, शक्कर)।

साधना आरम्भ करने से पूर्व साधक स्वयं ही अपने मूर्गन कक्ष को साफ करें और स्नान आदि से निवृत हो कर स्वच्छ पीले वस्त्र धारण करें, गुरु चावर ओढ़ लें तथा अपने सामने बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछा कर गुरु चित्र स्थापित करें तथा उस पर सबसे पहले कुंकुम केशर से तिळक लगाकर पूजन करें तथा गुरु चित्र पर पुष्प माला अर्पित करें फिर धी का दीपक प्रज्ञनवलित करें।

उसके पश्चात किसी थाली या ताप्रपात्र में केसर से स्वस्त्रिक बना लें। साधक का मुंह पूर्व या उत्तर दिशा की ओर हो, अपने सामने धूप, दीप जला नें तथा पूजन की अन्य सामग्रियों को भी थाली में सजा कर अपने पास रख लें।

फिर अपने सामने बाजोट पर एक सुपारी में मीली बांध कर उसे गणपति मानके हुए दोनों हाथ जोड़ कर भगवान गणपति का स्मरण करें और धूप, दीप, कुंकुम आदि समर्पित करते हुए मंगल कामना करें-

ॐ नमः नन्नन्नभूत गणथिरेवितं, कपिल्य जम् फल
चारुभक्षणं।

उमासुतं शोक विनाश कारकं, ब्रह्मामि विद्वत्तेवर
यादपंक जम्॥

भरो! जग्नपते सांगाय सपरिवारं साधुयं
सरशस्त्रिकम् आवाहयामि स्थाययामि पूजवामि,
अरक्षतं धूयं दीपं पुष्पं निवेदं च समर्पयामि ॐ सहस्र कोटि वुज धारिणे जम्॥

जग्नाविषयतये जम्॥

जाहिने हाथ में जन ले कर संकल्प करें -

ॐ विष्णुविष्णुविष्णु: उरथ (विन व महीना) उत्तुक जोवीयः (आपना गोव बोलें) अमुक शस्त्राहं (नाम बोलें) सकल भौतिक उद्धरि प्राप्ति निमित्तं आद्यात्मिक पक्ष सिद्धि निमित्तं अथ अस्मिन् विशिष्टे दिवसे पूर्णत्व प्राप्ति निमित्तं सब वचन कर्मणा अशुपूरित लेत्राम्बां युरु पूजनं सम्पर्दये।

जल भूमि पर छोड़ दें।

इसके बाद थाली में गुलाब की पंखुडियाँ रखें और गुरु का आवाहन करें -

पूर्वस्थां पूर्वा एतोस्मान् युरु आवाहयमि स्थापयामि जम्।

फिर गुरु प्राप्तया करें -

ॐ आवोदेवा परिमहे यमनत तदरे।
आवोदेवा सदहे विहियासो हवामहे॥

गुरु आवाहन के बाद 'पारद गुरु यंत्र' को उन पंखुडियों पर स्थापित करने के बाद गंगा जल से धूप की स्नान करायें -

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति नः पूर्वा
विश्ववेवा: स्वस्तिनस्तरारिष्योऽरिष्टनेमि: स्वस्ति न वृहस्पतिर्विधातु।

तुरथ स्त्रान् समर्पयामि जम्: - दूध से स्नान करायें।

दृष्टि स्त्रान् समर्पयामि जम्: - दृष्टि से स्नान करायें।

सृत स्त्रान् समर्पयामि जम्: - धो से स्नान करायें।

मधु स्त्रान् समर्पयामि जम्: - शहद से स्नान करायें।

शक्करा स्त्रान् समर्पयामि जम्: - शक्कर से स्नान करायें।

इसके बाद पांचों चीजों को एक साथ मिला कर पंचामृत स्नान करायें -

ॐ पंचजयः सरस्वतीमपि वन्ति सप्तोत्तसः।
सरस्वती तु पंचथा सोदेशोऽभवत् सरित॥

यंत्र को शुद्ध जल से स्नान करा कर पोछ लें। फिर किसी दूसरी थाली में कुंकुम से स्वस्त्रिक बना कर बाजोट पर रख दें तथा उसमें गुरु यंत्र को स्थापित करें।

यंत्र का तिळक लगायें -

ॐ नमो सत्वनताय सहस्रमूलये, सहस्र
यावादिषिरोरुबाहये। सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्र कोटि वुज धारिणे जम्॥

अक्षत समर्पित करें -

ॐ अक्षमसी मदन्त हावहप्रियाऽअशूषत् ।
अस्तोषत् स्वभाववो विग्रान् ।
विष्टवामती योजान् विन्दते हरी ॥
फिर यंत्र पर पुष्ट या पुष्ट माला समर्पित करें -
सुमात्यानि सुजन्थीनि मात्त्यादीनि वे प्रभो ।
सत्या दत्तानि पूजार्थं पुष्टपाणि प्रतिजृताम् ॥
यंत्र पर पुनः अक्षत चढ़ायें -

ॐ अक्षन्तात् पूर्वा ल दीर्घो स
पूर्वोस्मात् एतोस्मान् ल कुर्यात् ।
अक्षतान् समर्पयमि नमः ॥

बंच मुझी सदाक्ष के ऊपर विताप नाश के लिए तीन बार कुंकुम से निलक करें, फिर उसे दाढ़िने हाथ की मुड़ी में बंद कलंक अपनी आध्यात्मिक व भौतिक उत्तरि एवं गुरु कृपा की प्राप्ति के लिए चिन्तन करते हुए यंत्र पर चढ़ा दें -

वितापनाशकं स एतोस्मान् ।
माजल्यं फलं समर्पयामि नमः ॥
धूप आग्रापयामि नमः । धूप दिखाइये ।
दीप दर्शयामि नमः । दीप दिखाइये ।

दोनों हाथ जोड़े -
भो! दीप! सूर्य स्वप्नस्त्वं अनधकार लिवारक ।
मम हृदये पूर्णस्त्वं प्रकाशं भव सर्वदा ॥
यज्ञोपवीत समर्पित करें -
वज्ञोपवीत इति सुततं उन्नदः वज्ञोपवीत वारणे
विनियोगः
वज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापते यत् सहजं
पुरास्तात् ।

आवृच्छमन्तं प्रतिमुंच, शुभं वज्ञोपवीतं वस्तमस्तु
तेजः ॥

नेहरा या मिठाई समर्पित करें और उसके बाद फल समर्पित
करें -

निषेद्धं निषेद्यामि स एतोस्मानम् फलं समर्पयामि
नमः ॥

फिर पुष्ट समर्पित करें -

जाना सुजन्थं पुष्टपाणि यथा कालोदभवानि च ।
पुष्टपाणि सत्या दत्तं गृहण यरमेश्वर ॥

पुष्टपाण्डलि समर्पयामि नमः ॥

यंत्र के समक्ष खिर लगा कर पूर्ण शङ्ख एवं निष्ठा पूर्वक गुरु को प्रणाम करें। फिर पूज्य गुरुवेव से प्रार्थना करें

त्वं गात् रूपं त्वं पितृ रूपं,
ब्रह्म श्वरूपं रुद्र श्वरूपम् ।

विष्णु श्वरूपं वेद श्वरूपं
ब्रुरूत्वं शश्यं ब्रुरूत्वं शश्यम् ॥

न जानामि मंत्रं न जानामि तंत्रं,
न योनं न पूजां न द्यानं वदामि ।

न जानामि वैताय ज्ञानं श्वरूपं,
एकोहि रूपं ब्रुरूत्वं शश्यम् ॥

अनाथो दिश्वो जया रोग युक्तो,
गठाक्षीणकायः सदा जाडयतक्त्रः ।

विपति प्रतिष्ठं सदाहं अजामि,
ब्रुरूत्वं शश्यं, ब्रुरूत्वं शश्यम् ॥

मम अशु अश्यं देहं च पात्रं,
ज्ञानं च जयोतिष्ठितां सदेत ।

मम संसदि पूर्णं समर्पयामि,
ब्रुरूत्वं शश्यं ब्रुरूत्वं शश्यम् ॥

मम पूर्णं शशीरं त्वां देहत्वं एतोस्मानं स
पूर्णत्वं सिद्धाये मम अशु पूर्णं नेत्राभ्यां त्वां
ब्रुरूपूजनं च मम करिष्ये त्वां वरणे पूर्णत्वं
प्राप्ताय निमित्तं सर्वसुखासौभान्यं थन धार्य
ऐश्वर्यं प्रतिष्ठा पूर्णग्लोकाग्रा सिद्धाय स
त्रूप्यं समर्पददे ।

इसके बाद 'विष्टव भाला' से निम्न मंत्र का ११ माला
में जप करें -

मंत्र

॥ ॐ लिं लिलिते श्वराय ब्रुरूत्वं
सिद्धुर्ये लिं ॐ ॥

जप समाप्ति के पश्चात् यंत्र तथा सदाक्ष को भी पूजा स्थान में
ही रखें। गुरु आरती एवं समर्पण स्तुति सम्पन्न करें एवं
प्रसाद परिवार में बाट दें। गुरु पूर्णिमा की इस पूजन सामग्री
को अपने पूजा स्थान एक साल तक स्थापित ही रखें तथा गुरु
चित्र का पूजन एवं गुरु मंत्र जप माला से नित्य करते रहे जब
बाहर जाना हो तो मानविक जप अवश्य करें।

साधना सामग्री पैकेट - 360/-

जीवन की सौभग्य साधनाएँ

त्वार लिंगिष्ट प्रयोग



तंत्र साहित्य में ‘सौभग्य कल्प लतिका’ एक अत्यंत इस प्रयोग में तिथ्वती लामा मंत्रों से अधिगच्छित “आधारभूत एवं प्रामाणिक ग्रंथ है, स्वामी क्षेमानन्द द्वारा रचित कायाकल्प ग्रंथ” आवश्यक है, इस ग्रंथ को एक नाबे के लीटे इस ग्रंथ में जीवन की विन प्रतिदिन की समस्याओं से संबंधित में शुद्ध जल मर कर उसमें डुबो दें, और यह जल पात्र अपने कुछ विशेष साधनाओं का विस्तार से वर्णन किया गया है। सामने रख दें।

स्वामी क्षेमानन्द स्वयं भी बहुत जानी, तांत्रिक, भाविक थे, उनकी इस महारचना में दिये गये साधना प्रयोग अन्यन्त सरल, अनुभवजन्य तथा गहरा जनों के लिए ही है।

इस प्रामाणिक पाण्डुलिपि से ‘मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान’ के पाठकों के लिए कुछ विशिष्ट प्रयोग प्रस्तुत हैं -

१-कायाकल्प प्रयोग

कायाकल्प का तात्पर्य है, कि काया में अवृति शरीर में सून्दरता की ओर, स्वस्थना की ओर परिवर्तन। स्वस्थ शरीर ही स्वरूप जन एवं मस्तिष्क का उनक है, अस्वस्थ व्यक्ति किसी भी कार्य की ओर अपने आपको बेन्द्रेत नहीं कर सकता, उसके जीवन निर्माण की प्रक्रिया भी नक जाती है, इसीलिए देख विज्ञान को गहाविज्ञान कहा गया है। यह साधना प्रयोग किसी भी रविवार को सूर्योदय के समाय सम्पन्न किया जाना चाहिए, यदि पीड़ित व्यक्ति अर्थात् रोगी स्वयं सम्पन्न करते तो

साधक स्नान कर मंत्र प्रारम्भ करें, विशेष बात यह है कि अपने सामने ‘भगवान शिव का चित्र’ स्थापित करें, मंत्र जप प्रारम्भ करने से वहले तेल का दीपक अवश्य जला दें, पीले आसन पर खड़े हो कर ‘कायाकल्प माला’ से पांच माल निम्न मंत्र का जप अवश्य सम्पन्न करें, इस साधना में मंत्र जोर-जोर से बोल कर करना चाहिए, साधक का मुँह पूर्व की ओर हो।

मंत्र

॥ उँ हुं हुं हुं हैं हैं हौं हौं हुं हुं कट ॥

पांच माला मंत्र जप के पश्चात् सामने पात्र में रखे हुए जल को अपने नेत्रों, मस्तक, तथा सीनें में लगाएं और जल को उसी स्थान पर बैठकर पी लें।

पूरा जल गृहण करने के पश्चात् कायाकल्प यंत्र को उस पात्र में से निकाल कर लाफ पानी में धो दें और लाल कपड़े में बाध कर पूजा स्थान में रख दें, दूसरे दिन यह प्रयोग पुनः सम्पन्न करें, इस प्रकार १५ दिनों तक प्रयोग सम्पन्न करने से रोग पूर्ण रूप से दूर हो जाता है।

नियमित रूप से यह प्रयोग सम्पन्न करने से लक्षण का रंग निश्चर जाता है, शरीर में हर समय ताजगी, स्फुरिं अनुभव होती है, रोग शान्त होता है, शरीर अत्यन्त किञ्चशील हो जाता है।

साधना सामग्री पैकेट - 300/-

२- द्रव्य प्राप्ति प्रयोग-आर्थिक उन्नति साधना

लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों में गजलक्ष्मी स्वरूप विशेष प्रभावदायक, फलदायक माना गया है, 'सीधाग्न्य कल्प लतिका' ग्रंथ के अनुसार यदि काँचों में निरन्तर छानि हो रही हो, किसी को उधार दिया हुआ धन वापिस नहीं आ रहा हो, आर्थिक हानि ब्रह्म कर रही हो, तो साधक को लक्ष्मी की पूर्ण कृपा के लिए 'गजलक्ष्मी प्रयोग' अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, यह साधना ११ दिनों की साधना है और विशेष बात यह है, कि यह साधना प्रयोग किसी पूर्णिमा को अथवा पंचमी तिथि को ही प्रारम्भ करना चाहिए, तथा न्याय ही दिन प्रयोग निरन्तर ऋग में सम्पन्न करना चाहिए।

यह तो निश्चिन है कि किसी भी साधना में पूर्ण सफलता हेतु शुरु-कृता, आशीर्वाद आवश्यक है, अतः साधना प्रयोग के पहले शुरु पूजन कर एक माला शुरु मंत्र का जप अवश्य सम्पन्न करना चाहिए, तथा साधना प्रयोग के अन्त में भी एक माला शुरुमंत्र जप सम्पन्न करें।

इस साधना में वो सामग्री, मंत्र यिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'गजलक्ष्मी यंत्र' तथा लक्ष्मी बीज मंत्रों से सम्पुटित 'कमलगटव माला' आवश्यक है।

साधना के समय साधक स्नान कर शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुँह कर बैठे, अपने सामने एक बाजोट पर चावलों की बड़ी ढेरी पर गुलाल, मुष्प इन्द्राणि रख जप उस पर गजलक्ष्मी यंत्र स्थापित करें तथा गजलक्ष्मी चित्र सामने लगाये, पूरे साधना काल में वी का दीपक अवश्य ही जलता रहे।

शुरु मंत्र का जप कर सामने स्थापित गजलक्ष्मी यंत्र पर दीपक पूजन कर पाल में दीपक रखें तथा मंत्र जप प्रारम्भ करें।

लक्ष्मी मंत्रों से सम्पुटित कमलगटव माला से निम्न मंत्र की १३ माला का जप सम्पन्न करें।

मंत्र

॥ ॐ गजलक्ष्मी ही हीं गजलक्ष्मी ही ही ॥
गजलक्ष्मी हु हु फट ॥

इस श्रीज मंत्र के जप के पश्चात् एक माला शुरु मंत्र का जप करें और लक्ष्मी आरती सम्पन्न करें लक्ष्मी के सामने



चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण करें।

इस प्रकार यह प्रयोग ११ दिन तक सम्पन्न करें। ज्याहवें दिन सात कन्दाओं की भोजन कराएं, साधना प्रयोग पूर्ण होने-होने साधक को अपने काघ में आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त होने लगता है, रक्त हुआ धूत प्राप्त होने की स्थिति बनती है, लक्ष्मी प्राप्ति के नये अवसर बनने लगते हैं।

यत्र को अपने पूजा लथान में ही स्थापित किये रहे, तथा नित्य उग्रबत्ती अवश्य करें।

साधना सामग्री पैकेट - 300/-

३- शत्रु हठात प्रयोग

शत्रु बाधा पूर्ण रूप से दूर करने का सफल प्रयोग सीधाग्न्य कल्प लतिका में लिखा है, कि शत्रु का तात्पर्य है वह प्रत्येक व्यक्ति जो आपको बाधा फूंचाने का प्रयास करे। वह प्रत्येक स्थिति जिसके कारण उन्नति रुकती है, और इस स्थिति को मिटाने के लिए शत्रु हन्ना प्रयोग के समकक्ष कोई भी प्रयोग नहीं है।

सामान्य रूप से अपने डैनिक किया कलाप के साथ किया

साधना रूप से अपने दैनिक क्रिया कलाप के साथ किया ४-आज्ञोदय प्रयोग

जाने वाला नींदिन का प्रयोग व्यक्ति अंकले या पति पत्नी दोनों मिल कर भी कर सकते हैं, विशेष बात यह है कि पूरे नींदिन तक अस्फृण नेल का शीषक अवश्य जलते रहना चाहिए, इसलिए पहले से बड़ा मिट्टी का दीपक ही बनाना चाहिए।

इसके अनिवार्य साधना में '३ शत्रु स्तम्भन तांत्रोक्त फल' तथा शत्रु स्तम्भन मंत्र से अधिमन्त्रित 'भूग माला' आवश्यक है।

किसी भी शनिवार की रात्रि को यह प्रयोग प्रारम्भ किया जाता है, साधक काली धोती पहने तथा काले आसन पर बैठ कर प्रदोष प्रारम्भ करे, साधक का मुह दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए।

सर्वप्रथम अपने सामने ब्राजोट पर एक छेत्र वस्त्र बिछा कर सिन्दूर से एक त्रिकोण बनाए, इस त्रिकोण के तीनों कोनों पर शत्रु स्तम्भन तांत्रोक्त फल स्थापित करे, त्रिकोण के मध्य में 'क्री' बोज मंत्र लिखें।

अब थूप उग्रबन्धनी जला कर गुरु का ध्यान कर दीर आसन में बैठ कर मंत्र जप प्रारम्भ करे, उस रात्रि को पांच माला मंत्र जप अनिवार्य है।

मंत्र जप प्रारम्भ करने से पहले अपने दाएँ हाथ से जल ले कर जिस शत्रु बाधा को पूर्ण रूप से दूर करना है, उस बाधा नाश की पूर्ति हेतु, "यह अनुष्ठान मझी देवनाओं को साक्षी मान कर सम्पन्न कर रहा हूँ, मुझे इसमें पूर्ण सफलता मिले", ऐसा संकल्प कर जल छोड़ दें।

मंत्र

॥ ३६ शत्रून् ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
हो हो क्री क्री नाशय नाशय रत्तं प्रवहय
रत्तं प्रवहय माम सिद्धिं देहि देहि जमः ॥

जब नींदिन पूर्ण हो जाय, तो उस रात्रि को तीनों तांत्रोक्त फल अपने घर से बाहर तीन अलग-अलग दिशाओं में जाड़ दें और उस पर बड़ा पत्थर रखें।

इस प्रभावशाली प्रयोग के एक महीने के भीतर-भीतर कुछ ऐसी घटनाएं घटित होती हैं, जिसकी साधक कल्पना ही नहीं कर सकता। जब भी कभी शत्रु बाधा प्रबल हो जाए तो शनिवार को यह प्रयोग दोहराया जा सकता है, इस साधना प्रयोग में काम आने वाली शत्रु स्तम्भन माला का विस्तीर्ण अन्य साधना में प्रयोग नहीं किया जा सकता।

साधना सामग्री पैकेट - 255/-

जब नक्ष भाज्योदय जायत नहीं हो जाता, तब उक्त वर्तक जितने प्रयत्न करता है, उसका एक अंश भी नाम प्राप्त नहीं हो पाता, थोड़ी सी भी सफलता बार-बार प्रयत्न करने पर ही प्राप्त होती है, और जब भाज्योदय प्रारम्भ हो जाता है, तो उक्त हुए कार्य भी पूरे होते हैं, एक सफलता के बाद दूसरी सफलता प्राप्त होती है।

'सौभाग्य कल्प लतिका' के अनुसार इस हेतु विशेष अनुष्ठान पंचमी को अथवा किसी सोमवार ने प्रारम्भ कर पांच सोमवार सम्पन्न करना चाहिए, अर्थात् प्रत्येक सोमवार को बोहराना चाहिए।

इस साधना में '३ मधुरुपेण स्त्राक्ष', 'भाग्य लक्ष्मी वंश'

तथा 'गुरु चित्र', 'लक्ष्मी चित्र' आवश्यक हैं। सोमवार के दिन सुबह स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर, पूर्व दिशा की ओर मुह कर अपने सामने चित्र लगाएं, अब साधक अपने सामने पांच चावल की ढेरियां बना कर मध्य में भाग्य लक्ष्मी सिद्धि वंश तथा पांचों मधुरुपेण स्त्राक्ष स्थापित करें, जो का शीषक जलाएं। कुंकुम, पुष्प, इत्र, मीली से बंब चित्र का पूजन करें, गुरु का ध्यान करें तथा पांच पुष्प चढ़ाएं। अब 'लक्ष्मी माला' से भाज्योदय मंत्र की सात माला जप करें।

मंत्र

॥ ३७ हो हो हो ३७ ॥

जब सात मालाएं पूर्ण हो जाय तो एक लोट में दृध और जल गिलाकर उसमें एक मधुरुपेण स्त्राक्ष ढाल दें और इसे किसी भी शिव मंदिर में जाकर शिवलिंग पर चढ़ा दें।

इसी प्रकार अगले सोमवार को प्रयोग सम्पन्न करें तथा पांच सोमवार को प्रयोग सम्पन्न कर अनुष्ठान की पूर्ण आवृत्ति करें। यंत्र को अपने पूजा स्थान में एक साल तक स्थापित रखें।

इस सिद्धि प्रयोग के बारे में यदि कहा जाय कि यह साधना प्रयोग सोये हुए भाग्य को जापत करने का प्रयोग है, तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

साधना सामग्री पैकेट - 410/-

ऊपर दी गई चारों साधना प्रयोग स्वार्थी क्षेमानंद ने अपने शिष्यों को, साधकों को सम्पन्न कर कर ही श्रेष्ठ की रचना की थी, वस्तुतः सिद्ध योगियों का यह जान भारतीय संस्कृति का गौरव ही कहा जा सकता है।

०००००००००००००००० ← पूर्णता सिद्धि प्राप्य चैतन्य माला → ००००००००००००००००

पूर्णता प्राप्त करना ही मानव जीवन का अधितम लक्ष्य है, वह भौतिक पक्ष हो या आध्यात्मिक पक्ष हो, वह व्यापार से सम्बन्धित हो या साधना से सम्बन्धित, वह शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना हो या सिद्धियों को हस्तगत करना हो, वह बृहस्पति जीवन का सुख हो या संन्यास जीवन का आनन्द, श्रेष्ठता, अद्वितीयता और सर्वाच्छादा प्राप्त होनी ही चाहिए।

लेकिन सामाजिक मालव शरीर अत्यन्त क्षुद्र एवं गंदा है, मल, मूत्र रक्त आदि के सिरा कुछ है ही नहीं, जबकि दिव्यता और जागरूकी की उपलब्धि तो किसी दिव्य एवं चैतन्यता प्राप्त देह में ही संभव है। जिस प्रकार जल में ही जल का पूर्ण रूप से मिलन संभव है, तेज में नहीं, उसी प्रकार शरीर एवं मल को चैतन्यता दुक्त बना कर ही इष्ट की चैतन्यता को समाहित किया जा सकता है।

वह माला गुरु कृष्ण का एक ऐसा ही श्रेष्ठ प्रसाद है, जो पूर्णता एवं पूर्ण चैतन्यता प्रदान करने वाले दिव्यतम मंत्रों से प्राप्त प्रतिष्ठित किया गया है तथा जिस पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास पूर्वक धारण करने पर इस सामग्र्य शरीर में भी दिव्यता और चैतन्यता का संचार होने लगता है, कुण्डलिनी ऋति ही रूपजिद होने लगती है, समस्त साधनाओं में सफलता पास होने लगती है और पूर्णत की आरे अग्रसर होने की किया प्रारम्भ होती है।
जीवन का सर्वश्रेष्ठदाता - 'ज्ञानदाता'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, बालगों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे बंधित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्ट कार्ड क्रमांक ३) भेज दें, कि मैं अपने एक परिचित को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाना चाहता हूँ एवं २० पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठित 'पूर्णता सिद्धि प्राप्य चैतन्य माला' २९०/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क ३००/- + डाक व्यय ९०/-) की बी. पी. नी. से भिजवा दें, बी. पी. पी. आपने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर द्युड़ा लूँगा। बी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे २० पत्रिकाएं रनिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें एवं मेरे पत्र को एक वर्ष तक पत्रिका भेजते रहें। आपका पत्र आपने पर हम ३००/- + डाक व्यय ९०/- = ३९०/- की बी. पी. पी. से 'मंत्र सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठित 'पूर्णता सिद्धि प्राप्य चैतन्य माला' भिजवा देंगे, जिसमें कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। आपको बीस पत्रिका भेजकर आपके पत्र को सदस्य बना दिया जायेगा।

सम्पर्क -

अपना पत्र जोधपुर के पाते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ज, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

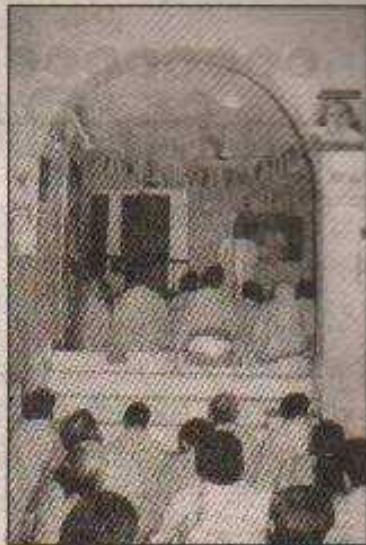
फोन - 0291 - 2432209, 2433423 टेलीफ़ोन - 0291 - 2432010

म. 'बृन-जुलाई 2003 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' 77

गुरुद्वारा पिंडी

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असख्य दीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चेतन्य दिव्य भूमि

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग



समस्त साधकों परं शिष्यों के लिए।
यह योजना प्रारंभ हुई है, इसके अन्तर्गत
विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में
पूर्य गुरुके के सिर्वशन में ये साधनाएं
पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई
जाती हैं, जो कि उस दिन शाम ६ बजे ८
बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि श्रद्धा व
विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में
सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार

25-7-2003

शिवयुक्त धूमावती साधना

धूमावती साधना एक प्रचण्ड और अचूक साधना है, जिसे यदि सही तरह सम्पन्न किया जाए तो इसका निशान खाली नहीं जाता। शिवयुक्त होने से धूमावती साधना सौन्दर्य रूप ले लेती है, परन्तु इसका प्रभाव और भी अधिक बढ़ जाता है। इस साधन के तिन्ह लाभ हैं—
(१) यदि किसी प्रकार की आपके ऊपर कोई तंत्र बाधा है, ताथा कोई तंत्र दोष है तो वह
यमाम होता है। (२) यदि शायु अधिक तांबे एवं बानगलाली से गर्वे हों, तो वे परामर्श होते हैं
मीठ आनंदल प्राप्त होता है। (३) यदि किसी प्रकार का नीरं लम्बा रोग हो तो स्वास्थ्य
लाभ होता है और दुर्बलता समाप्त होती है। (४) घृत यंत्र आदि इतर योनियों का कोई प्रकोप
हो, तो उनका शम्पन होता है। (५) धूमावती का विशेष सुरक्षा चक्र प्राप्त होता है, जिससे
किसी भी स्थिति में साधक के अकाल मृत्यु या दुर्घटना नहीं हो सकती।

शनिवार 26-7-2003 वृष्णि सौन्दर्य आकर्षण प्रयोग

किसी भी व्यक्ति का चेहरा उसके व्यक्तित्व का वर्णन होता है। यदि आपके मुख पर तेजस्विता है, आकर्षण है, तो स्वतः सामने वाला व्यक्ति आप से प्रभावित होता है। शरीर यदि दुर्बल भी हो, परन्तु यदि मुख पर आमा है, भीन्दर्य है तो कोई भी आप से बान करने को ललायित होता है। सौन्दर्य वह भी कृष्ण के समान जटा छर कोई उन्हें टकटकी बांध कर देखने की विवश हो जाती है आप भी ऐसे ही लायक दर्शन परं नुस्ख मंडल पर तेजस्विता ला सकते हैं कि आप किसी से भी अपने मन की बात मनवा सकते हैं। और सौन्दर्य तो भीतर और बाहरी दोनों ही होना चाहिए एक बार वृष्णि सौन्दर्य आकर्षण प्रयोग को अवश्य ही करके देखिये।

शनिवार 27-7-2003

पूर्व जन्म दोष शम्पन साधना

वर्तमान में जब व्यक्ति सुकर्म करने के उपरान्त भी अनेक प्रकार के कष्ट और दुःख आदि शोगता है, तब उसका विश्वास ईश्वर के प्रति और गुरु के प्रति हिलने लगता है। इसके विपरीत दूसरी ओर उल कपट करने वाला व्यक्ति आनंद और मरनों के साथ जीवन व्यतीत करता है। इन साधकों कारण पूर्ण जन्मों में ही छिपा होता है। इस साधना द्वारा न केवल पिछले कई जन्मों को साधक देखने में सकल होता है, अपितु उन कर्म दोषों का शम्पन भी इसी साधना द्वारा संयुक्त रूप से हो जाता है। इस साधना के बाद ही साधक को सिद्धि सम्पन्न हो पाती है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए विष्णु नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किसी विद्यार्थी को बिना अध्ययन को (जो पत्रिका के सबस्य नहीं है) मंत्र-नव-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में ही सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में केवल व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर ही भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षाव शुल्क रूपये 240/- है, परन्तु आपको मात्र रूपये 460/- ही जना करना है। प्रयोग ये गणनावित विशेष मंत्र सिद्धि, प्राण प्रतिष्ठित सामग्री, यंत्र गुहिका, आदि; आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं नथा अपने किसी एक प्रिय के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

३. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को लकड़ि परस्परता की इच्छा प्राप्ति साधनात्मक जान धारा से जोड़कर एक कुर्मी और पृथ्वदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अध्ययन कुछ प्राणियों में इंप्रेशन चिन्तन, साधनात्मक वित्त आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क है और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होता है। प्रयोगों की न्यौदाहर राशि का अर्थ के तरानू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

दीक्षा में वर्णन जाता है, कि मंदिर में मंत्र वप जिता जाए तो उत्तम होता है, उससे भी अधिक पूर्ववाचो होता है यदि नदी के किनारे आए, उससे भी अधिक समृद्ध तट, और उससे भी अधिक पवन में करें, तो और पवन में मात्र इमालय में किया जाए, तो और भी कई जुना लेड होता है। इन सबसे भी शैष्ट होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें और यदि गुरुदेव आपने आश्रम जापान गुरुधाम में ही यह साधना प्रवान करें, तो उससे बढ़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहाँ विवर शैष्टियों का वास स्थान रहता ही है। जो सरगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से उत्तमा भशरीर प्रतिपत्ति अपने धारा में उपस्थित होते हैं। प्रत्येक नितिविधि का स्थान रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इनलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गए से लाधना, मन एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर जाको आजा से साधना प्राप्त्या करता है, तो उसके सौभाग्य से तेजगत भी बढ़ती करते हैं।

तीव्र स्थल पृथ्वीपर वैर शिष्य साधना साधक के लिए समग्र नींवों से मो पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस भ्रम में महाशून्यता का निवान ध्यान रखा गया, ऐसे विवर स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से नन्द प्राप्त करने की हच्छ ही साधक में नव उत्पन्न होती है, तब उसके सततर्म जायते होते हैं। उन्हीं नव्यों को श्वान में सख्तते द्वारा साधकों के लाभार्थी गुरुदेव की व्यस्तता के बाकजूद मो दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों में साधनात्मक प्रयोगों की अख्यात निधानिन भी गई है।

योजना केवल इन ३ दिनों के लिये 25,26,27 जुलाई

किन्हीं पांच शैष्टियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 240x5=Rs. 1200/- जगाकर का वा उपरोक्त राशि का बैंक डाक्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के लालक विज्ञान उपहार स्वरूप योग्य दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यारे दीक्षा कोटा बारा प्राप्त करना चाहें तो निष्ठार्थियों के पूर्ण ही अपना कोटा एवं पांच सदस्यों के सदस्यता शुल्क की राशि का द्राष्टव्य मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर विल्ली कार्यालय के पास पर भेजे जापका कोटा पांच सदस्यों के नाम परे एवं द्राष्टव्य हमें उपरोक्त निधि से पूर्ण ही प्राप्त हो।

कृत जान के द्वारा गोपनीय उपरोक्त निधि का उपयोग का लकड़ि परस्परता शुल्क 240x5=Rs. 1200/- जगाकर का वा उपरोक्त राशि का बैंक डाक्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर विल्ली कार्यालय के पास पर भेजे जापका कोटा पांच सदस्यों के नाम परे एवं द्राष्टव्य हमें उपरोक्त निधि से पूर्ण ही प्राप्त हो।

कृत जान तानियत द्वारा दिए जाने वाले उपरोक्त निधि का उपयोग का लकड़ि परस्परता शुल्क 240x5=Rs. 1200/- जगाकर का वा उपरोक्त राशि का बैंक डाक्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर विल्ली कार्यालय के पास पर भेजे जापका कोटा पांच सदस्यों के नाम परे एवं द्राष्टव्य हमें उपरोक्त निधि से पूर्ण ही प्राप्त हो।

कृत जान तानियत द्वारा दिए जाने वाले उपरोक्त निधि का उपयोग का लकड़ि परस्परता शुल्क 240x5=Rs. 1200/- जगाकर का वा उपरोक्त राशि का बैंक डाक्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर विल्ली कार्यालय के पास पर भेजे जापका कोटा पांच सदस्यों के नाम परे एवं द्राष्टव्य हमें उपरोक्त निधि से पूर्ण ही प्राप्त हो।

शक्तिपात्र यक्ति दीक्षाएं

गुरु हृदय धारण दीक्षा

जब शिष्य को यह बोध हो जाता है, कि सदगुरुदेव ही इष्ट हैं, तो वह अपने हृदय की एक-एक रुग्म में उन्हें उतार लेना चाहता है। उसके भाव होते हैं, कि हर हाल में यह गुरुदेव के निमग्न हो जाए। यह एक प्रकार की छटपटाहट होती है, विरह की भाव भंगिमा होती है, और ऐसे में गुरु हृदयस्थ धारणा दीक्षा वही कार्य करती है, जैसे प्यासे को पानी, अद्यो को दी जैसा। इस दीक्षा के उपरान्त शिष्य को यह नहीं लगता कि गुरुदेव मुझसे दूर हैं। इस दीक्षा से जब गुरुदेव हृदय में स्थापित हो जाते हैं, तो फिर हृदय में बैठे-बैठे ही शिष्य का कल्पयाण करते रहते हैं। वस्तुतः शिष्य जीवन का प्रारम्भ तो गुरु दीक्षा से होता है, परन्तु इस दीक्षा को लिए बिना गुरुदेव से पूर्ण रूप से जुड़ने की किया संभव हो नहीं पाती। एक तरह से यह दीक्षा साक्षात् गुरु कृपा ही होती है, जो तभी प्राप्त हो पाती है, जब साधक के अन्दर गुरु के प्रति श्रद्धा पूर्ण रूपेण पल्लवित हो चुकी होती है।

गुरुद्वारा विलोमी

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असत्त्व दीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए शुक्रवार 22-8-2003
यह योजना प्रारंभ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर विलोमी 'सिद्धान्तम्' में पूर्ण गुरुद्वेष के निर्देशन में वे साधनाएं पूर्ण विशिष्ट विधान के साथ सम्पन्न कराए जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे के बीच सम्पन्न होती है यथि यदा वे विश्वास हों, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार 22-8-2003

यह शुक्रवार का बहुत बड़ा शाखान्तर दाता है, कि इसी युक्ति दरणी में इह तरफ, उनका बहुत लाभ प्राप्त कर सकें। सद्गुरु का मात्र उपरिधन से ही विशिष्ट के अन्तर एक दिनांक व्याप्त हो जाती है, उनको उपरिधन द्वारा से ही स्कॉट दूर हो जाते हैं, तथा साधना में विशिष्ट प्राप्ति को जाता है। स्वगुरुद्वेष निविलोमीद्वयनम् द्वारा अप्रत्यक्ष व्यञ्जित्व से जो व्यक्ति एक बार प्राप्ति से नुइ जाता है, वह उनके बिना रह नहीं पाता। वह इसी उपरिधन में रहता है, कि गुरुद्वेष वा वृद्धन लाम भी। लहमूर्ह में सद्गुरुद्वेष का आवाजन कर सकते हैं। इस साधना के अन्तर्गत पूज्यपाल अवश्य ही साधक के सन्दर्भ उपस्थित होते हैं, और उस उपस्थित का अनेकों प्रकार से अनुभव विषय चलता है, कभी विष्व अष्टलंब के रूप में, कभी मन में आई आकृतिक प्रकृत्तिना से, कभी विष्वास्त्रक रूप में दर्शन दराता, और कभी तो प्रत्यक्ष रूप में भी इह प्रयोग सद्गुरुद्वेष के लिए अनुकूल है।

शनिवार 23-8-2003

कथाकल्यान वेधनाथ प्रयोग

भगवान शिव का एक नाम वेधनाथ भी है। भगवान शिव के द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग हैं, जिनमें से वेधनाथ धाम एक प्राचीन शिवलिंग है। एक बार शावण की ओर तपत्वा से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उसको एक शिवलिंग प्रदान किया था। देव कारणवश वह उस शिवलिंग विहर के एक क्षेत्र में आगे नका तक ले न जा सका, और इस तरह वही भूमि में धन्व भया और वह स्थान वेधनाथ धाम के नाम से विशिष्यात है। अब भी वेधनाथ धाम में अनेक गोंडों निलंग दूर दूर से जन लावर उस पर चढ़ावर रोगमुक्त होने की कामना करते हैं।

यह भगवान शिव के वेधनाथ स्वरूप की ही साधना है, जिसे साधक स्वयं अपने अवधा किसी स्वरूप के लिए योग्य कर सकता है। भगवान वेधनाथ को कृपा ये व्याकुं के रोगों का शमन होता है, और काया स्वास्थ्य लाने को प्राप्त होती है। शरोर की पोंडा रोग एवं युरोलिना से गम्भीर व्यक्तियों के लिए यह जायाकृत्य प्रयोग है, जिससे शरीर हष तुष व सुवृद्ध बन जाता है।

शनिवार 24-8-2003

विजय गणपति साधना

गवु नोवन में किलो के भी हो सकते हैं, जल साधना द्वारा शनु निष्ठना हो जाते हैं, आप पर हाथी नहीं हो पाते हैं। यदि आपका कोई नकरमा बल रहा हो, तो इस प्रथोग के माध्यम से उसमें विजय प्राप्त होती है। भगवान विजय गणपति की कृपा प्राप्त साधक हर दोज में विजय हो। प्राप्त करता है चाहे वह व्यापार हो, राजनीति हो, प्रतियोगी परीक्षा हो या कार्ड और हो। उजार साधक पूर्ण तत्परता से इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है तो कार्ड विशेष में सफलता का कार्ड सेवह रह ही नहीं जाता। भगवान गणपति की कृपा से सब शनु बाधा, कठिनाइयां रथ्य समाप्त हो जाती हैं।

इन सीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किन्नी वो भिंडी अथवा स्वर्णकों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-नंबर-यत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में ही सम्पर्क होने वाले किन्नी एक प्रयोग में केवल व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर ही भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षांय शतलक रुपये 240/- है, परन्तु आपको गाँव रुपये 460/- ही जमा करना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र चिठ्ठ, प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (यत्र गुरुका, आदि) आपको नि-शतलक प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप परिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मिल के लिए परिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त विषयी साधना में शाग ले सकते हैं।

३. परिवार स्थानस्थ बनाकर आप यिसी एक परिवार की ओर परस्परों की इस पालन साधनात्मक ज्ञान धारा से नोड्कर एक पुरीत एव प्रगतिशाली कार्य करने हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राचियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिन्तन आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क है और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक का प्राप्त होता है। प्रयोगों की न्यौत्तर राति की अर्थ के तराजु में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मंदिर में मध्य दृप किया जाने से अतीत उत्तम होता है, उससे पी अधिक पृष्ठवर्षी ढोता है यदि नदी के किनारे कहें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में कहें, तो जीर दरबत में भी यदि विमालय ने किया जाए, तो और भी कई गुना शक्ति होता है। इन सरकरों में शक्ति होता है यदि साधक गृह चरणों ने बैठकर स्थापना सम्पन्न करे और वहाँ भूमितेव अपने आश्रम अर्थात् शुद्धधारम में ही यह साधना प्रदान करें, तो उससे बड़ा सीमांग जीर कहाँ होता ही नहीं।

कृष्ण युधे लक्ष्मण होते हैं, जहाँ विद्या शास्त्रों का वाच्य नवीच रहता हो रहा है। जो सदगुरु डोते हैं, वे भूक्षम सूप से अथवा साइरीर प्रतिकल अपने धार्म में अवश्यित रहने द्वारा प्रत्यक्ष गतिशीलिय का सूखन रूप से सावधान बरतों से रहते हैं। इनमें प्रयोग गुरुधार्म में नहूं कर गूह से साधना, मठ एवं विद्या ग्राम बरता है और गृह चरणों का स्पर्श कर ऊँची ब्रह्मा से साधना प्राप्ति करता है। तो उसके सीधार्म से वेगवान् दीर्घी करते हैं।

तीव्र स्थन पुष्टिकृद हैं पर शिष्यत्व करना साधक के निए दोनों तीरों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धर्म में भगवन्नेत्र का निवास स्थान रहा हो, ऐसे विवर स्थन पर गृह बनाने के उपचरण हो कर गृह मूल्य से मंत्र प्राप्त करने की हज़ारों से साधक में तब त्रिपत्र होती है, जब उनके सत्तर्गम् नायत होते हैं। इसी तथ्य की ध्यान में रखते हए साधकों के लाभार्थ गुरुनेत्र की व्यसना के बावजूद भी दिन-नामे गुरुभाग में तीन दिवसीय में साधनात्मक द्वयों की श्रंखला निर्धारित की जाती है।

ओमग्रा कैबिनेट बना 3 दिनों के लिये 22-23-24 अगस्त

किन्हीं पांच व्यक्तिगतों को लार्जिंग यादेस्न बनाकर उनका समर्पण शुल्क 240x5=Rs.1200/- जमाकर के या उपर्योगी राशि का बैंक टाइट मध्य-नव-बैंक विलास के नाम से बनाकर सदस्यों के दाक यन्त्र लियश्वाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

वही दीक्षा कोटों द्वारा प्राप्त करना चाहे नो नियंत्रित तिथियों के पूर्व ही अपना कोटा एवं पात्र सदस्यों के सम्बन्ध में शुल्क की शक्ति का दावा कर मंत्र त्रयीय विश्वाम के नाम से बनाकर दिल्ली काव्यालय के पाते पर भेजे आपका कोटा पात्र सदस्यों के नाम पते एवं दावा कर भेजे उपरोक्त तिथि वे पूर्व ही प्राप्त की जाएँगे एवं विलम्ब से भिन्ने पर वीक्षा सम्पन्न न हो सकेंगी। यदि शासन

के लिए भवित के पुनर्जगत वायोपीयक विवाह
है नामांकन से बचावारी के 2014 वर्ष में अन्तर्राष्ट्रीय विवाह के अधिकार की अधिसूचना के द्वारा निर्धारित
कर दी गई है। इसकी विवरण विवाह के अधिकार की अधिसूचना के द्वारा निर्धारित
कर दी गई है।

के दूसरे अधिकारी द्वारा शिख नियम १०
द्वारा देखा जाए तो कहा कि उसमें लिपाली गया
कि देवता ही अपनी नई संस्कृता की ओर आवं
त्तु आवंत्ति कर रहा है।

* विज्ञान समाज द्वारा विप्रवाचन के तहत असहायता अधिकार के उपरान्त विभिन्न विविध दृष्टिकोण लिये गये हैं। एक दृष्टि

की समन्वित देवी मानी जाती हैं, जो भुवनेश्वरी सिंहि, प्राप्त करता है उस साधक का आज्ञा चक्र जाहाज होकर ज्ञान राक्षि, पैतना राक्षि, स्मरण राक्षि अत्यन्त विकसित हो जाती है। भुवनेश्वरी को जगतधात्री अर्थात् जगत को सुख प्रदान करने वाली देवी कहा गया है। दरिद्रतानारा, कुबेर सिंहि, रतिष्ठीति प्राप्ति के लिए भुवनेश्वरी साधना उत्तम मानी गई है। इस महाविद्या की आराधना एवं दीक्षा प्राप्त करने वाले त्यक्ति की वाणी में सरस्वती का वास होता है। वह त्यक्ति ज्ञान एवं राक्षि में पूर्णता प्राप्त करता है तथा इस देवी की कृपा से स्मरण राक्षि द्वारा वैतना एवं पराक्रम द्वारा प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करता है। भुवनेश्वरी देवी अत्यन्त ही सौम्य देवी है।

अस्त्रियात् यत् दीक्षाण्

भूबनेश्वरी दीक्षा

भूवन अर्थात् इस संसार की रत्वामिनी भुवनेरवरी जो 'ही' बीज मंत्र धारिणी है, वे भुवनेरवरी ब्रह्मा की भी अधिष्ठात्री देवी हैं, महाविद्याओं में प्रमुख भुवनेरवरी ज्ञान और राक्षि दोनों ने भुवनेरवरी चिह्नि प्राप्त करता है।

Any Sunday

Surya Sammohan Sadhana

Magnetise yourself!

Once Lord Krishna, then a disciple under the great Sadguru Sandeepan, was seated at the feet of the Guru and massaging his feet. He took great pleasure in serving the Master and did so with love and devotion. The Master lay reclining peacefully.

Suddenly there was a commotion and turning his eyes Krishna saw a deer jump over the hedge around the Ashram closely followed by a tiger. Lord Krishna realised the peril in which the deer was and knew that in another moment the tiger would be upon its prey. But then something quite unexpected happened.

As soon as the tiger too jumped over the hedge and entered the Ashram precincts it underwent a remarkable change and it approached the deer like a harmless lamb and started to lick it playfully. Soon the two were playing and gamboling about like old friends.

Lord Krishna sat their unmoving, completely hypnotised by the scene. His fingers no longer moved over the feet of his Master. The Guru opened his eyes and took in the remarkable scene. Then he laughed lightly seeing Krishna sitting there completely dumbstruck.

"Gurudev what's this?" Krishna could not help asking.

The great Guru replied, "This whole Ashram is under the powerful sway of Surya Sammohan Sadhana (Hypnotic Sadhana of the Sun). No being who enters this Ashram can remain unaffected by this mesmerising charm. That's why even the tiger has forgotten its inherent cruel streak and become so docile."

Continuing further the Guru said, "In later life you shall have to face a lot of opposition Krishna. You shall have many powerful and dangerous adversaries. You should accomplish this Sadhana so that they could

become harmless in your presence."

And Lord Krishna did accomplish this Sadhana and through its power he was able to enchant even the staunchest of his foes.

Presented here is this very Sadhana which is a must for everyone today who desires to achieve success and fame in life or who faces virtually invincible adversaries in his or her field of work. For those in areas like politics this ritual is a real boon for through it one could even influence the masses in one's favour. However a word of caution. No Sadhana or the power of hypnotism can be used for harming others. Any such attempt would earn Divine wrath and lead to one's own downfall.

This amazing Sadhana can be started on any Sunday after 10 pm. Have a bath and wear pure white clothes and sit facing the east on a white mat. Cover a wooden seat with a white cloth and on it in a copper plate place a *Sammohan Yantra*. Offer vermillion, rice grains, flower petals on the Yantra. Then light a ghcc lamp.

Then offer prayers to the Guru and chant one round of Guru Mantra. Next with a *Mannik rosary* chant 11 rounds of the following Mantra.

Om Hreem Surya Sammohay Hreem Om

Do this daily for 11 days. After the completion of the Sadhana drop all the articles in a river or pond.

This is a very wonderful boon from our Rishis who devised such rituals for the good of the common man. Through it one could bring about a favourable change in the attitude of one's adversaries and thus make the path to success and fame more smooth.

Sadhana Articles – 300/-

‘नृत नृतार्थ’ 2003 संस्कृत-यंत्र विज्ञान ‘82’

Significance of wealth in life

I had reached an age where soon I had to burden the responsibilities of life. It is a sacred tradition in our family to seek the guidance and blessings of our revered Sadgurudev before starting anything. I too thought of doing so before launching my career. But a call to Jodhpur and I came to know that Sadgurudev was engaged in some Sadhana of his own and would not meet anybody for at least a few months.

Hence I had to begin my business without his blessings. I started off with great enthusiasm and courage. I had just about settled in business when problems started coming up. First I dealt them with courage but soon the onslaughts became so frequent that I started feeling helpless before them. Within a few months my business collapsed and I was filled with great disappointment so much so that I felt like giving up everything and running away.

One day without informing anybody I left for Jodhpur and reached Sadgurudev's Ashram. But there I was told that he would emerge from Sadhana only after two months. I decided to stay there and share the work in the Ashram. The in-charge of the Ashram knew me well and he allowed me to do so. I even started wearing ochre robes meant for ascetics.

After two months Sadgurudev came out of his Sadhana room finally. He looked a bit lean. When his eyes fell on me a look of disappointment came on his features. But he did not say anything. The next day he called me and asked me why I was there. I was unable to relate my misadventures to him so he asked me to write them on a paper and give it to him. This I did and having read it he said, "I did not expect such cowardly behaviour from you. You are deceiving yourself. Do you think by wearing ochre robes you shall be free from your family responsibilities? True, ascetic

life is wonderful but it is not for escapist. You have to go back."

He fell silent and then continued, "I know you are facing problems but there are solutions for them in Tantra. You shall have to accomplish Lakshmi Sadhana. Maybe you do not know but even the great Guru Shankaracharya had to accomplish Lakshmi Sadhana. Otherwise how would he have been able to establish four divine spiritual seats all over India? A real man never bows down before adversities. He attains victory over them through Sadhanas if need be."

Later he made me accomplish a very special Mahalakshmi Sadhana. I returned home and restarted my business and within a year I had achieved amazing success. If today I am so wealthy, prosperous and happy it is due to that powerful ritual. With Sadgurudev's permission I am revealing it here for benefit of others.

Start this ritual on a **Wednesday**. At night after 10 pm have a bath and wear clean red clothes. Make a mark with vermillion on the forehead. Sit on a red mat facing South. Cover a wooden seat with red cloth. In a plate draw a Swastik with saffron. On it place some rose petals. On them place a *Mahalakshmi Yantra*. Light a ghee lamp. Offer vermillion, rice grains, rose petals on the Yantra. Offer prayers to Lord Ganpati chanting *Om Gam Ganpataye Namah* five times. Thereafter chant one round of Guru Mantra and pray to Guru for success. Then with a *Kamalgatta rosary* chant 51 rounds of following divine Mantra –

Om Shreem Hreem Kleem Shreem Om Phat

Do this for two days. After that drop the rosary in a river or pond and place the Yantra in your worship place or your shop or business centre. Briefly worship it daily by lighting incense and chanting the above Mantra just 11 times.

Sadhana Articles - 360/-

Pain and illness no more!

There are times in life when one has to bear with insufferable pain which could be both physical and mental. And what makes this agony even more torturous is the failure of medicines or medical help to remedy it. Then one can think of nothing but desperately calling out to God for help.

The world of Sadhanas is full of efficacious rituals that could bring succour to the troubled mind and body provided one tries them with full faith and devotion. But when one is ill or mentally upset one does not have the strength or the patience to go through the arduous procedure of long Sadhanas. It is here that the world of Sabar Sadhanas comes to the rescue of the Sadhak.

Sabar Sadhanas provide with short but very very dynamic rituals that simply could not fail. What more their procedure is easy and the Mantra to be chanted too have easy words in Hindi rather than Sanskrit. These rituals, a gift from none other than Lord Shiva, seem simple but the power packed into them is amazing.

Presented here is a Sabar Sadhana of Goddess Kali that could help one get rid of physical and mental pain and ailments that seem incurable. One just needs true faith to make the wonders of this ritual to manifest. The patient or the sufferer can himself try the Sadhana. But if he is too weak or in no position to do so then someone else can accomplish it on his behalf. The result would be the same.

For this Sadhana one needs a *Kali Yantra* in the form of an amulet and a *Black Hakeek rosary*. Both of these should be energised with special Sabar Mantras for riddance of ailments and pain.

This Sadhana can be tried on any Friday. It should be tried only in the night after 10 pm. For the Sadhana wear dark blue clothes and sit on a dark blue

mat facing the South. Cover a wooden seat with dark blue cloth. On it place a copper plate. In the copper plate place the Yantra on a mound of rice grains.

One should also have a copper tumbler with water in it ready. Chant one round of Guru Mantra and pray to the Guru for success. Thereafter take some water, rice grains, black sesame seeds and flower petals in the right palm and pledge thus –

I (speak your name) am trying Kaali Saabar Sadhanaa for riddance from this (name your ailment) problem. May I be free of it soon.

Drop the articles in your palm into the tumbler.

Then take the Black Hakeek rosary in the right hand and start chanting the following Mantra at the same time dropping some black sesame seeds into the tumbler each time you chant the Mantra.

*Kaali Raat Ek Nadi Veer,
Saat Samudra Kaa Jagmag Teer,
Kaamaakhya Raani Kaa Gouri Pindaa,
Bheiravaa Haro Sab Peeraa,
Shabd Saachaa Pind Kaachaa,
Phuro Mantra Eeshwaro Teri Vaachaa.*

Chant just one round (108 times) of this Mantra. After the Sadhana move the rosary and the water tumbler over the head of the patient thrice. Go and drop the rosary and pour the contents of the tumbler far from the house in the South direction. Best do it in some un frequented place.

Make the patient wear the amulet on his arm or around his neck. Soon positive results shall accrue. After the person has become fit throw the amulet too in the South direction.

Sadhana Articles - 270/-

Laugh and dance through adversities

Can you remember when you last laughed freely or felt yourself enjoy the moments of life?

Most probably you do not recall any such moment. Modern life with its trials and travails has so crushed our spirits that we have even forgotten how to laugh, have fun and enjoy oneself.

When we talk of Sadhanas we do not mean becoming serious and not allowing even a trace of amusement on one's features. Our Rishis sure knew how to live life to the full and this is why they also devised Sadhanas that could add beauty, art, music and dance to our life. Even our Gods are not beings whose only business is to punish the evil, rather their own lives are good examples of how life ought to be lived.

And the God who is an epitome of totality is Lord Shiva whom we call not *Dev* (God) but *Mahaadev* (the greatest god). His numerous forms touch upon the various aspects of life. As Rudra he destroys the evil and as Vaidyanath he banishes ailments. He appears in so many forms that it would take many pages to write about all of them.

One of his forms is that of *Natraaj* – the Divine Dancer performing *Taandav* dance. This dance has two forms. *Pralay Taandav* is performed by the Lord when he destroys evil, while he breaks into *Aanand Taandav* when he is in a joyous mood.

Dance along with music in fact are the greatest means of expressing the joy of one's heart and soul. They uplift the spirit and make one feel light, worryless and happy. They are wonderful means of banishing the poison of worries and stress and making spring the elixir of joy and peace from within.

Aanand Taandav Sadhana of Lord Shiva is a wonderful ritual through which a Sadhak can banish boredom, laziness, indolence, worries and tensions from his life and instil into it a divine freshness. It is

also an amazing ritual through which professional dancers and musicians could become skilled in their arts. I have myself seen a danseuse attain to world fame and recognition through this Sadhana which revered Sadguru revealed to her.

This Sadhana if you ask me is a must for every Sadhak for through it one could remain fresh, joyous and unsullied even in the poisonous atmosphere of today like a lotus that remains untainted by the mud in which it grows. Whatever one's field one could use this Sadhana to instil with oneself new enthusiasm and the drive to achieve in spite of all odds.

This Sadhana must be tried on a **Monday**.

After 9 pm in the night have a bath and wear white clothes. Sit on a white mat facing North or North East. Cover a wooden seat with white cloth. On some white flowers place *Natraj Yantra* in a copper plate. Offer on it rice grains and vermillion. Then make sixteen marks with vermillion on it chanting *Om Namah Shivaay*. Each time you make a mark contemplate that one by one the divine sixteen virtues are being instilled into your form so that you could live life to the full with joy and happiness. Light a ghee lamp. Then chant one round of Guru Mantra. Thereafter chant five rounds of this Mantra. by **Rudaksh Rosary**

Om Aanaand Taandavaay Namah

The next morning go and offer the rosary and Yantra in a temple of Lord Shiva or drop them in a river or pond. This is a Sadhana that could bring about a wonderful transformation in your life and make you dance through the problems and adversities of life. It is a ritual of offering all the poison of one's troubles in the feet of Lord Shiva and gaining from Him divine elixir that makes one capable of smiling even in the face of life's various anxieties.

Sadhana articles – 330/

11,12,13 जुलाई 2003

गुरु पूर्णिमा साधना शिविर

शिविर स्थल : निखिलधाम, कयु रोड, साउथ पार्क,
विस्टपुर, जमशेदपुर 9

रेलवे स्टेशन से ४ किलोमीटर झारखण्ड, जमशेदपुर,
टाटानगर

आयोजक मण्डल : श्री हरदीप सिंह - 9835132336 0657-
2439539 ○ अभ्य कुमार वर्मा 0657-2297600 ○ -
वई.एम.सर्टि - 0657-2304558 ○ गमबाबु चोनकर - 9835144360
○ वी.पी.सिंह (टाटानगर) - 0657-2495635 ○ एस.एस.सिंह
(टाटानगर) - 0657-2210503 ○ वी. वी. शिंश 0657-2212195
रामकेश (टाटानगर) - 0657-2284390 ○ कृष्णकान्त पाण्डे
(टाटानगर) - 0657-2200158, 9835169009 ○ अशोक सिंह
(टाटानगर) - 9835144614 ○ ईरेन मण्डल (टाटानगर) - 0657-
2304023 ○ राजकुमार अशवान (टाटानगर) - 0657-2420397
○ डॉ. राजकुमार प्रसाद (टाटानगर) - 0657-2276600 ○ नंदराज
श्रीवास्तव (टाटानगर) - 0657-2305091 ○ विज्वनाथ शर्मा
(टाटानगर) - 0657-22012307 ○ तमन कुमार दास (टाटानगर) -
9835328613 ○ रामेश सोनकर (टाटानगर) - 0657-2228032 ○
ग्रकाश नारायण मीर्य (टाटानगर) - 0657-2270157 ○ दीपक
सिंह (जाकुड़ा) - 0657-2730996 ○ प्रमिना पात्री (जाकुड़ा) -
0657-2730823 ○ सौ. भास्कर राव (टाटानगर) - 0657-2306124
○ डॉ. हिमेश शर्मा (घाटीगिला) - 06585-225394, 9835192094
○ नवदत्तल जायर्सी (मझगढ़ा) - 06585-225987 ○ विजय
नारायण पाठक (मझगढ़ा) - 06585-227624 ○ अविल उराव
(नोवामुण्डी) - 06596-233161 ○ कृष्णा साव (चाईगाड़ा) -
06582-259456 ○ रामशंकर राय (टाटानगर) ○ रामकृष्ण
(टाटानगर) ○ विजय ठाकुर (टाटानगर) ○ अमण श्रीवास्तव
(टाटानगर) ○ कैलाश सिंह (टाटानगर) ○ लक्की लहरी
(टाटानगर) ○ अजय हस्पका (टाटानगर) ○ उमाशंकर
सिंह (टाटानगर) ○ नरेन्द्र सिंह (टाटानगर) ○ ललित

साधक कृपया ध्यान दें

१. यदि आप अपने स्थान पर साधना शिविर का आयोजन करना चाहते हैं तो इस सम्बन्ध में एक आयोजक मण्डल बनाकर लिखित में पत्र गुरुसेवक को जोधपुर भेजें। पत्र प्राप्त होने के पश्चात दो तीन महीने में जब भी दिनांक उपलब्ध होनी आपको सूचित कर दिया जायेगा।

२. साधना सामर्थी से सम्बन्धित धन राशि मंत्र शक्ति केन्द्र जोधपुर और पत्रिका से सम्बन्धित आवश्यक शुल्क मंत्र तत्र थंग विज्ञान जोधपुर के नाम से ही भेजें। पत्रिका में छपे कार्यक्रम दिवसों के अलावा जोधपुर अथवा दिल्ली में टकरने हेतु कृपया पहले फोन करके जानकारी अवश्य प्राप्त कर लें।

नारायण सिंह (टाटानगर) ○ डा. दुनमु वीरस्ली (टाटानगर)
○ डॉ. धर्मपाल लौगिंगा (घाटीगिला) ○ दलबीर धारीवाल
(मझगढ़ा) ○ वी.डी.सिंह (टाटानगर) ○ शशिरंजन सिंह
(चाईगाड़ा) ○ पद्म प्रसाद साह (टाटानगर) -
0657-2236765 ○ वृजनन्दन (टाटानगर) ○ संजय सिंह
(टाटानगर) - 0657-2409188 ○ रवि शिंश (टाटानगर)
○ संजीव वर्मा (टाटानगर) - 0657-2201726 ○ रामजी सिंह
(टाटानगर) - 0657-2409399 ○ बबलु भाई (टाटानगर) -
9835168099 ○ मुहम्मद आनम (टाटानगर) - 9431182449 ○
आर. सी.सिंह (गोपालपुर) - 07817-233343 ○ दिनेश यैनी
(रायपुर) - 9425211588, 0771-2534297 (O), 2229650 (R) ○
आर.आर.साह (बिलासपुर) - 07752-2252273 ○ रंजना शर्मा
(बिलासपुर) - 07752-2224444 ○ नोकश राठोर (बिलासपुर)
- 07752-2244995 ○ अमित पाण्डे (बिलासपुर) - 07752-2506424
○ आर.के.राय (सिजुआ) - 0326-2273705 ○ पी.आर.राह
(कलरास) - 0326-2462803 ○ जे.पी.सिंह (कलरास) - 0326-
2000865 ○ विष्णु नेपाल (नेमल) - 09771-528372 ○ अमित
सिंह (कलकत्ता) - 9830138491 ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार
(पटना) - 0612-2550221 ○ लुशीराम डलसेन (रायगढ़) -
07762-221698

20 जुलाई 2003

दस महाविद्या साधना शिविर

शिविर स्थल : चंदन पुष्प हाल,

इमरान नगर, वापी पूर्व, बलसाड

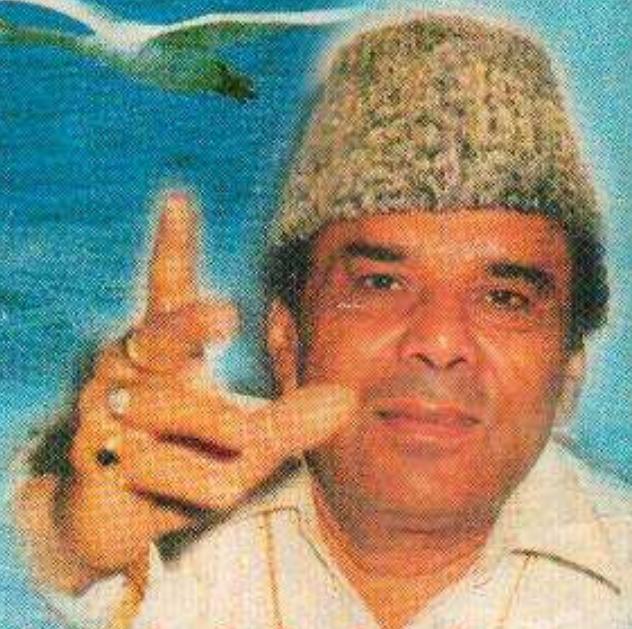
आयोजक : देवेन्द्र पांचाल - 0260-2340249 ○ गंगकर भाई
प्रजापति - 0260-2564244 ○ पी. जे.पटेल - 0260-2642403 ○
मोहन भाई पटेल - 0260-2640439 ○ शप्तीकांत देसाई 0260-
2423444 ○ इन्द्र आर्ट - 0260-2784848 ○ जयस पटेल -
0260-2254618

रजिस्ट्रेशन नं. 35305/81
With Registrar Newspapers of India
Posting Date 23-24 every Month

A.H.W

Postal No. RJ/WR/1965/2003
Licence to Post without Pre Payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2003

गुरुवार / वर्षा गांड



माह : जुलाई - अगस्त में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

स्थान	गुरुवार (जोधपुर)
दिनांक	4-5-6 जुलाई
विनांक	1-2-3 अगस्त

वर्ष - 23

पूर्ण गुरुवार निम्न निर्दिष्ट दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 बजे से 1 बजे के
मध्य तथा साथ 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान	सिंचान (चिरली)
दिनांक	22-23-24 जुलाई
विनांक	22-23-24 अगस्त

अंक - 6-7

मंत्र-तंत्र-यत्र विज्ञान डॉ. श्रीमान्त्रीपाणी हाईकोर्ट कांस्टेन्टी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफ़ोन-0291-2432610
सिंचान 306, कोहाट एन्कलेब पीठमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27182248, टेली फ़ोन 11-27196700



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

